सम्पादकीय

युगानुरुप मोक्ष के अलग-अलग साधन निश्चित हैं। कलयुग में केवल भक्ति को ही धर्म का मुख्य आधार और मोक्ष का माध्यम कहा गया है।

चंचल मन को एकाग्र करने के लिए नवधा भक्ति के विधान पर बल दिया गया है। नारद भक्ति सूत्र में भी ईश्वर प्राप्ति का जो सर्व सुलभ, सरल, सहज मार्ग निश्चित किया गया है वह परमानुरक्ति अर्थात भक्ति द्वारा ही प्राप्य माना गया है।

पग-पग पर प्रतियोगिता के अत्यन्त व्यस्त जीवन में आज भक्ति करने का समय निकाल पाना भी अपने आप में कठिन कार्य हो गया है। और ऐसे में अनेक देवी-देवताओं की स्तुतिं हेतु भिन्न-भिन्न स्तुति ग्रन्थों का पठन-पाठन और भी कठिनतर हो गया है। भक्तजनों की इस असुविधा को ध्यान में रखकर परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी अद्वैतानंद जी के आदेश पर प्रस्तुत रचना 'शाश्वत वन्दना' का संकलन किया गया है। इस संकलन में प्रतिदिन पूजा पाठ हेतु आवश्यक श्लोक, मंत्र तथा पदों आदि को एकत्र कर दिया है ताकि यात्रा आदि में भी सुविधापूर्वक नित प्रति कीं भक्ति प्रक्रिया को नियमित रखा जा सके।

प्रस्तुत संकलन के संदर्भ में संस्कृत भाषा को लेकर भक्त जन एक असुविधा का अनुभव कर सकते हैं। इस संदर्भ में मेरा नम्र निवेदन यह

है कि ब्रह्मावर्त में ब्रह्म प्राप्ति के लिए ब्रह्मवाणी अर्थात संस्कृत को ही माध्यम बनाना चाहिए। यह मेरी आस्था और अनुभव है कि संस्कृत निश्चित रुप से अत्यन्त सरल और प्रभावशाली भाषा है और कोई भी हिंदी जानने वाला इसे तनिक परिश्रम से कम समय में आसानी से सीख सकता है। इस भाषा को सीखने की कठिनाई के बदले इस भाषा के पठन-पाठन से जो आनन्द प्राप्त होता है उसे केवल अनुभव द्वारा ही जाना जा सकता है।

इस संकलन को भक्तजनों तक पहुँचाने के लिए जिन सज्जनों ने सहयोग दिया उनके प्रति आभार प्रकट करना मेरा परम कर्त्तव्य है।

अत्यन्त सावधान रहते हुए भी संकलन में मुद्रण की अनेक अशुद्धियाँ रह गई हैं, जिनके लिए खेद है।

संकलन में सुधार सम्बन्धी सभी सुझावों का स्वागत किया जायेगा।

171-एल, माडल टाऊन
यमुना नगर

—विजय बहादुर सिंह चौहान

विषयानुक्रमणिका

	विषय	पृष्ठ
1	श्री गुरु अद्वैतानन्द जी द्वारा दो शब्द	I से VIII
2	श्री गणेश स्तुति	१
3	श्री गुरु स्तुति	२
4	नवग्रह	२
5	तुलसि	२ और ५६
6	दीप मन्त्र	२
7	सूर्य	४
8	ब्रह्मा	४
9	व्यासदेव	४
10	शंकाराचार्य	५
11	गंगा	५
12	सरस्वती	६
13	शान्ति पाठ	६
14	गायत्री	८
15	प्रातः स्मरण	८
16	श्री शिव प्रातः स्मरण	९
17	श्री शिव प्रातः स्मरण स्तोत्रम	१०
18	श्री सदाशिव ध्यानम्	११
19	श्री शिव पञ्चाक्षर स्तोत्रम्	१२

विषय पृष्ठ

	विषय	पृष्ठ
20	श्री शिव स्तुति	१३
21	नमस्कार	१४
22	विराट रुप	१४
23	श्री शिव महिम्न स्तोत्रम्	१५
24	श्री रुद्राष्टक स्तोत्रम्	२३
25	उमा महेश्वर स्तोत्रम	२५
26	महामृत्युञ्जय मन्त्र	२६
27	शिव चालीसा	२७
28	समर्पण	२९
29	आत्मस्टकम्	३०
30	शिव आरती	३१
31	श्री विष्णु ध्यानम्	३४
32	श्री विष्णु स्तुति	३५
33	श्री विष्णु सहस्त्रनाम स्तोत्रम्	पृष्ठ ३८ और ३९ के मध्य
34	श्री मद् भगवद्गीता द्वितीयोऽध्याय:	३९
35	श्री मद् भगवद्गीता पञ्चदशोऽध्याय:	४९
36	आदित्य हृदय	५३
37	श्री दुर्गाष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम्	५६
38	देव्या: कमचम्	५९
39	अर्गला स्तोत्रम्	६६

	विषय	पृष्ठ
40	कीलकम्	६९
41	श्री देव्य थर्व शीर्षम्	७१
42	नवार्णविधि:	७५
43	तन्त्रोक्तं देवी सूक्तम्	८१
44	सिद्धिकुञ्जिका स्तोत्रम्	८५
45	देव्य पराध क्षमापनस्तोत्रम	८८
46	क्षमा प्रार्थना	९१
47	अन्न पूर्णा स्तोत्रम	९२
48	श्री महालक्ष्यष्टक स्तव:	९५
49	श्री लक्ष्मी ध्यान	९७
50	श्री सूक्तम्	९८
51	श्री लक्ष्मी सूक्तम्	१००
52	श्री पंचमुखी हनुमत्कवचम्	१०२
53	श्री राम रक्षा स्तोत्रम	१०७
54	श्री रामचन्द्र स्तुति	११३
55	श्री राम स्तोत्र	११५
56	भजन	११६
57	आरती	१२१

परम पूज्य गुरु

श्री स्वामी अद्वैतानंद जी

को

सादर समर्पित
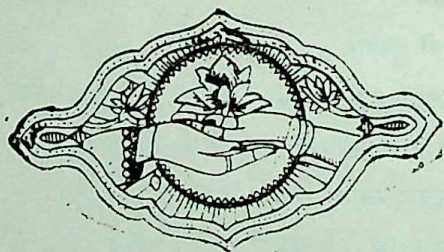
श्री स्वामी अद्वैतानन्द जी महाराज

शाश्वतधाम लक्ष्यमोली (भगवान)

डाकखाना मलेठा

जिला टिहरी गढ़वाल

(उत्तर प्रदेश)
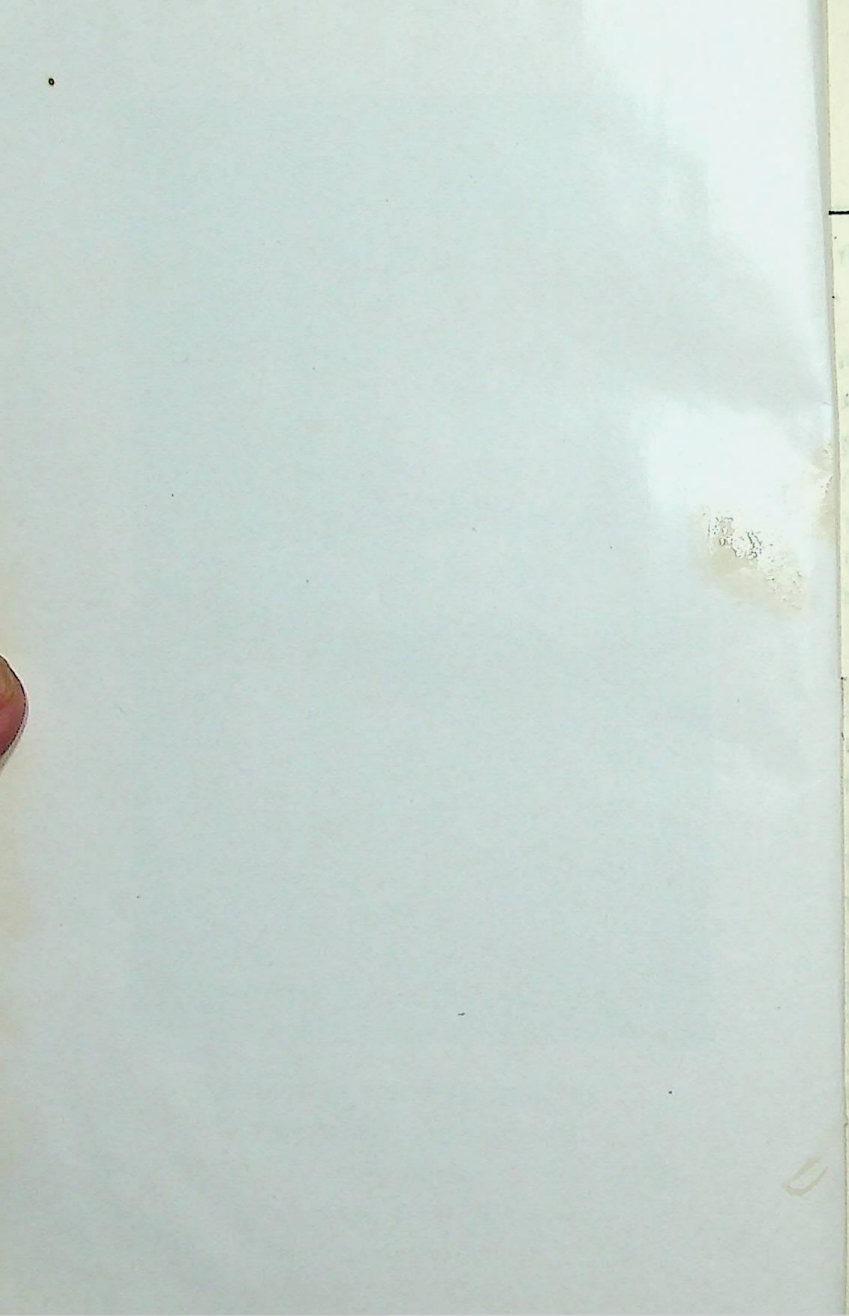
गुरू जी द्वारा.......................!

वेद, श्रुति, स्मृति, पुराण केवल हिन्दू संस्कृति ही नहीं है, बल्कि भारतीय संस्कृति की एक अमूल्य निधि है। इसकी प्राप्ति तथा सेवन मनुष्य का समस्त एवं सर्वाधिक कल्याण का हेतु व मार्ग है।

जिस राष्ट्र की, जिस धर्म की, जिस भूमि की संस्कृति जितनी ज्यादा उन्नत व परिपक्व होती है, वह राष्ट्र, वह धर्म, वह भूमि उतनी ज्यादा उन्नत, परिपक्व व सुदृढ़ होती है। संस्कृति का न होना ही एक बहुत बड़ी हानि होती है। दुर्बल संस्कृति ही एक देश की, एक काल या समय को, एक पात्र या अधिकारी को कमजोर बना देने की मुख्य जड़ होती है।

धर्म राष्ट्र भारत की संस्कृति संस्कृत ही है, ऐसा अगर कह दिया जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। यहां तक स्पष्ट शब्दों में कह दिया गया है की संस्कृत देव-बाणी है। यह साक्षात भगवान के मुख मिश्रृत वाणी है।

बड़े-बड़े ऋषि, मुनि, तपस्वियों के त्याग, तपस्या भक्ति व विभूति का फलस्वरुप जो यह संस्कृत भाषा तथा वेद-मन्त्रादि का जन्म होना, वास्तव में अपने आपमें बड़ा भाग्यशाली बनने का माने रखता है।

ऐसी एक उत्तम, श्रेष्ठ संस्कृति भी आज हम लोगों के लिये सुलभ होती हुए भी हाथ से छूट रहा है तो इसका एकमात्र कारण यह है कि अपने आलस्य वृति की वजह बड़े ही आसान तरीके से यह कह

दिया करते हैं—"संस्कृत भाषा बड़ी कठिन है" यह कह कर अपनी जान छुड़वाना चाहते हैं, जबकि ऐसे कोई बात ही नहीं हैं।

जो जिसका मूल या उद्गम स्थल होता है, वह निश्चित रुपेण पवित्र, यथार्थ एवं सार पूर्ण होता है। यह सभी मानते ही होंगे—अगर उसमें कोई मलिनता या दूषितता या कृत्रिमता देखने में आती है तो यह अपने उदगम स्थल में नहीं किन्तु आगे चलकर ही। अतः हम सभी को भाषा, सभ्यता, संस्कृति एवं धर्म का जो उद्गम स्थल संस्कृत भाषा एवं वेद, श्रुति एवं स्मृति हैं. इनमें से किसी एक को भी न भूलना चाहिये। न निरादर करना चाहिये न उसका सेवन न अभ्यास करन में प्रमाद करना चाहिये। असमर्थता भी प्रकट नहीं करनी चाहिये।

कठोर तपस्या के द्वारा जिस चीज को प्राप्त किया जाता है वह उसका सार पूर्ण, शक्ति युक्त एव प्रभावशाली होना निश्चित है ही जैसे दुग्ध में घृत होते हुए भी हाथ नहीं लगता है। लेकिन मन्थन क्रिया को अपनाने के बाद उसमें से जो सूक्ष्म तत्व हाथ लगता है उसका आकार छोटा और प्रभाव या शक्ति बहुत ज्याद होता है। ऋषि मुनीयों की तपस्या फिर उस तपस्या का फलादेश स्वरुप जो भी द्रव्य या विभूति निकलता है, उससे पृथ्वी का कल्याण का आधार होने से बेसहारा को सहारा मिल जाता है। भटके को राह मिल जाता है। अधेरे में डूबे हुए को रोशनी मिल जाती है। पतित तो उन्नत बन जाता है। उनके द्वारा प्रदान किया गया एक-एक इशारा, एक-एक अक्षर, एक-एक शब्द में इतनी जवर्दस्त जान हैं, वह जड़ को भी चेतन में रुपान्तरित कर देता है। चाहे उनके द्वारा दिया हुआ आशिर्वचन या प्रसाद सकारात्मक हो या नकारात्मक।

दस्यु-रत्नाकर से जब यह बात महर्षि द्वारा स्पष्ट कर दी गई थी कि—आप जितने भी सारे हिंसा अवैध इत्यादि कर्म करते आ रहे हैं, परपीड़न को जीविकार्जन का रास्ता मानकर चलते आ रहे हैं इन सभी का परिणाम पाप है। पाप कर्मों का फल भोगने के लिए तुम्हें घोर से घोर नर्क में जाना पड़ेगा। यह भूल जाईये—चूंकि आपका उपार्जन अपने सगे, सम्बन्धी परिवार वाले भी सेवन करते हैं, अतएव उन सभी पापों का भी हिस्सा उन्हीं लोगों के पल्ले में भी कुछ-कुछ आवेगा।

रत्नाकर पूछते हैं—फिर मेरा कर्तव्य क्या है? तो ऋषि जी कहते हैं—तुम श्री राम जी की शरण में आ जाओ। इसके अलावा और कोई भी मार्ग नहीं है। हर समय श्री राम का ही ध्यान व चिंतन कीजिये मुखमें "राम राम" ही बोलते रहिये।

परन्तु पाप-कर्मों का कुप्रभाव इतना बलवान होता है, किसी को भी मत, कर्म, शुभ कर्म, धर्म कर्मों में प्रवृत्त होने नहीं देता। भगवान का पवित्र नामोच्चारण करने नहीं देता। रत्नाकर अपनी असमर्थता प्रकट करते हुए कहते हैं, "यह कैसे बोला जाता है", मेरे से तो यह बोला नहीं जाता है। फिर मैं क्या करूँ?

महापुरुष—कितने दयालु होते हैं, एक से एक सरल उपाय बताते हैं—अन्त में यहां तक झुक जाते हैं कि अगले को यह कहने में कोई भय या संकोच महसूस नहीं करते हैं कि—"तेरी रज़ा में वो राजी हो जावेंगे। अगर तुम राम बोल नहीं सकते हैं, फिर क्या बोल सकते हैं?

रत्नाकर के सामने तो हर समय यह दिखाई देता था कि मैंने अभी इसे मार डाला, यह छीन लिया। अभी और इतने लोग आने वाले हैं। उन्हें भी मारना है। अतः जो ऐसे संस्कार में पला हुआ हो—वह राम राम क्या कहेगा—मरा, मरा ही कहने लगा। महर्षि जी से कहने लगा, संत भगवन ! मुझसे तो मरा-मरा ही कहा जाता है जो कि आपके उपदेश का ठीक उल्टा है।

आखिर ऋषि बाणी है, न जाने कितने हजार साल के तप के फल-स्वरुप निकली हुई वाणी, जैसे मल मिश्रित सोने को अग्नि में तपाने से फिर हथौड़ी से कूटने पर उसका असली तेज निकल आता है ऐसे ही ऋषि जी की दिव्य-मूर्ती, दिव्य-बचन, कल्याणकारी उपदेश, निर्दोष एवं निर्भयता अगले आदमी को भी तेजोमयी, ज्ञानावतार बना देता है। बांस भी तो चंदन के सम्पर्क में आकर चन्दन जैसी सुगन्ध देने लगता है लोहा भी तो पारस के सम्पर्क में आकर सोना बन जाता है। साधु के सम्पर्क में आकर असाधु भी साधु के रुप में कैसे न बदलेगा ?

उनकी वाणी में इतना वजन, इतना आकर्षण होता है जैसे पूर्णिमा का चांद विशाल समुद्र की जलराशि को अपनी ओर खींचता हुआ ज्वार-भाटा पैदा करके समुद्र का रुप ही कुछ और बदल देता है।

रत्नाकर के मुंह से "मरा-मरा" ही निकला। किन्तु विचार में एक अभूत पूर्व परिवर्तन आ गया कि—जितने बार मरा, मरा कहता गया, उतनी बार अपने अन्दर स्थित काम, क्रोध, अहंकारादि एक-एक दुष्ट, अनिष्ठकारि विकार वासनाएं मरते गये। काम मरा, लोभ मरा,

अहंकार मरा। होते करते आगे चलकर "मैं" भी मरा। सभी नाम, रुपादि मिथ्या उपाधियां मर मर गये। जैसे जैसे एक एक मरते गये, जब उनमें से एक भी विचार न बचा। आखिर में वह सत्याधार राम ही बचा। जैसे किसी सफेद पृष्ठाधार पर हरा, पीला, नीलादि रंग भरते गये तो असली पृष्ठाधार तो अदृश्य हो जाता है। कोई और रुप (चित्र) दिखाई देता है। किन्तु जब सभी रंग धो लिया जाता है, अन्त में एक वही बचना था जो मूल रंग है। जीव, जगत और चेतन का मूल रंग तो वही राम ही है। जो सभी ऋषि, मुनी, योगियों के ध्यान काल में रमण करता है; जो आराम का कल्प वृक्ष है। अन्त में वह अपने ही स्वरुप में मिला दिया। अपने को राम स्वरुप बना दिया जो रत्नाकर कल दस्यु था—आज वह बन गया महर्षि बाल्मीकि।

ऋषि, मुनी, तपस्वी, महापुरुषों की कृपा से जो भी मिला करता है, चाहे वह नकारात्मक भी क्यों न हो आगे चलकर वह सकारात्मक में ही रुपान्तरित हो जाता है। उनका ताड़न भी आशीर्वाद है। उनका हर एक देन कल्याणकारी है। श्री कृष्ण जी गुस्से में आकर कुब्जी को दे मारा—परन्तु उस मार में विशेषता यह देखने को मिली कि, कहां रही कुब्जी और कहां बन गई दिव्य सुन्दरी। कैसे कैसे सुन्दर लीलाएं हैं दिल की बन्द कलियां भी खिल उठती हैं यह सारी लीला विभूतियां देखते देखते। यह वेद उपनिषदें भी उनका महा-कृपा-प्रसाद है, जिसको हमें धारण करना है। तथा सेवन करना है। "वेद का सेवन (अभ्यास) मोक्ष का साधन है।

यह कदापि उचित-राह नहीं कहा जा सकता है कि, चूंकि हमें

संस्कृत भाषा का ज्ञान नहीं है, अत: संस्कृत भाषा को मिटा दो य उसकी अवहेलना कर दी जाये। नां, ऐसा नही करना चाहिये। मूल को मूल ही रहने देने पर उसकी मौलिकता अक्षुर्ण रहती है। जिसकी मौलिक वस्तु अक्षुर्ण रहती है, उसका विकास बहुमुखी हो जाता है उस एक में से अनेक नये-नये, ज्ञान व तथ्य की खोज की जाती है। किन्तु मौलिक या मूल को निश्चिन्त या दुर्बल बना देने पर पर, उसके बाद बाद में जो जो भी निकलेगा उसमें कोई सार तत्व दिखाई नहीं पड़ेगा। अत: सभी वेद मन्त्रों को अपनी मूलरुप संस्कृत भाषा में ही रहने देने पर तथा उसका सेवन संस्कृत भाषा में ही करते रहने पर उससे पूर्ण कल्याण व कृपा बर्षता है। श्रेष्ठ को नीचे उतर कर अपने साथ मिलने के लिये कहने के बजाय, यह क्यों न किया जाय कि कनिष्ठ को ही उपर उठकर श्रेष्ठ के साथ मिलें, जिससे कम से कम इन्हें भी तो श्रेष्ठता का कुछ अनुभव व आभास महसूम होगा।

हमें यह स्पष्ट बोध हो रहा है कि जिस तरह भगवत् साक्षात्कार के लिये भक्त की भावना ही एकमात्र सफल मार्ग है, ठीक ऐसे ही शास्त्र, मन्त्र, श्लोक, स्तुति स्तवादि स्वाध्यायानुकुल चीजें संस्कृत भाषा के माध्यम से सेवन करने पर ही वास्तव में आध्यात्मिक सुखानुसन्धान का अनुमान किया जा सकता है। अतएव हम हरेक को संस्कृत का अभ्यास करते रहना चाहिये।

सिर्फ संस्कृत ही कठिन है। जहां रुचि की कमी हो, जहां अभ्यास या प्रयत्न की कमी हो—वहां तो एक घास का तिनका भी दो खण्ड करना बहुत ही बड़ा कठिन मालूम पड़ता है। अत: किसी भी चीज की

कठिनाई या सरलता उसके प्रति रुचि व प्रयत्नशीलता के उपर निर्भर करता है, इस आधार पर—"संस्कृत मुझे आता नहीं—संस्कृत भाषा—कठिन है" ऐसे युक्ति व कारण लड़ा कर संस्कृत भाषा से दूर रहना बुद्धिमता का परिचय नहीं है। अगर आपको नहीं आता है तो—कैसे आयेगा उसके लिये प्रयत्न भी किया जा सकता है।

मूल भाषा को बदल देने से मतलब तो निकल आता है। लेकिन उसमें कई सारे मिलावट भी आ जाता हैं। और आगे चलकर बहुत बड़ी हानि पहुँचाता हैं। जैसे कि श्री मद् भगवत गीता में कायरता का फल मिलावट एवं उस मिलावट के फलस्वरुप जो वर्ण-शंकर पैदा होते हैं उसी विषय में बताते हुए कहा गया है—

अधर्माभिवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुणस्त्रियः
स्त्रीषु दुष्टाषु वार्ष्णेय जायते वर्ण-संकरः।
संकरो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च
पतन्ति वितरो ह्येषा लुप्त पिण्डोदक क्रियाः।
दोषै रेतैः कुलघ्नानां वर्ण संकर कारकैः
उत्साद्यन्ते जाति धर्माः कुल धर्माश्च शाश्वताः
उत्मन्न कुल धर्माणां मनुष्याणां जनार्दन
नरकऽनियतं वासो भवतित्यनु शुश्रुम।

अर्थ :—पाप के (मूल नष्ट होकर मिलावट सामने आने पर) अधिक बढ़ जाने पर कुल की स्त्रियां दूषित हो जाती है। स्त्रियों के दूषित होने पर वर्ण-संकर उत्पन्न होता है। वर्ण संकर कुल घातियों को और कुल

Nishi Sharma.

को नरक में ले जाने के लिये ही होता है। लोप हुए पिण्ड और जल की क्रिया वाले इन के पितर लोग भी गिर जाते हैं। इन वर्ण संकर कारक दोष से कुल घातियों के सनातन कुल धर्म और जाति धर्म नष्ट हो जाता है तथा नष्ट हुए कुल धर्म वाले मनुष्य का अनन्त काल तक नरक में वास होता है।

एक बात और भी देखा गया है कि—जब और जहाँ, जिस किसी की नीयत में प्रदूषण आ जाता है, तब वहां कितनी भी आसान से आसान चीज या मार्ग बताया जाय, कितना भी ज्यादा से ज्यादा निकट से निकटतर व निकटतम रास्ता बता दिया जाय मनुष्य का यह एक स्वभाव बन गया है कि आपसे वो यह कहेगा कि—क्या इससे कोई और ज्यादा सरल या आसान या निकटवर्ती मार्ग नहीं है? अतः वह बताओ मैं उसे ग्रहण करूँ। विज्ञान इस चीज की खोज में आकर आज बड़े-बड़े चीजों की रचना व आविष्कार करने के वजाय छोटी-छोटी बातों में लगा रहता है और आदमी को इतना ज्यादा आलसी बना दिया है, दिमाग को भी मशीनों के पराधीन बना दिया है। मशीनों के बगैर आज वह एक सूई भी उठाने लायक बल नहीं रखता। मनुष्य की इस प्रवृति ने ही आज अपने आपको वेद मार्ग से वंचित कर डाला है। जीवन को हर कदम पे ऐयाशी बना दिया है जोकि रोग, शोक, दुःख बन्धन, निर्जातना एवं अज्ञानान्धकार का मुख्य कारण है।

अतएव मनुष्य की असमर्थता प्रकट करने को असमर्थता न समझी जाये और मूल, पवित्र एवं यथार्थ मार्ग में किसी भी प्रकार के व्यभिचार को न फैलाया जाये।

HAPPY SHARMA

दूसरी ओर से ईश्वर एवं ईश्वर भजन की प्रतिक्रिया, ठीक इसी तरह दिखाई नहीं देती जैसे भवन के नीचे स्थित बुनियाद। मनुष्य को एक स्वस्थ शरीर, तीक्ष्ण बुद्धि, अविचल विवेक प्राप्त व कायम रखने के लिये भोजन दवाई आदि उपचारें कोई ठोस माने नहीं रखते हैं, सिर्फ ईश्वर भजन ही एकमात्र आधार है, जिससे मनुष्य को हर अभाव की पूर्ती हो सकती है। ईश्वर भजन से बढ़कर कोई ऐसी ताकत नहीं है, जिससे संसार को काल रुपी भयंकर शत्रु का सामना किया जा सके।

ईश्वर भजन दुस्कर मर्ज़ की दवाई है, दु:खी का दु:ख नाशक, जड़ के लिये चेतना, अज्ञानियों के लिये विवेक, अन्धेरा का प्रकाश और भटके हुए के लिये ज्ञान है। ईश्वर भजन ही असफलों की सफलता, संसार बन्धन रुपी चक्र को नष्ट करके मोक्ष या मुक्ति सुख देने वाला ज्ञान वैराग्य भक्ति और मुक्ति। अत: हर प्राणियों को चाहिये कि वह सदा उस पर ब्रह्म परमात्मा का भजन, कीर्तन, चिन्तन, मनन, स्वाध्याय ध्यान, धारणा अभ्यास व सेवन करते रहे। क्या पता अगला सांस आता है या यह ही आखिरी है। हर सांस में तेरा ही नाम जपुँ, तेरा ही गुणगान करूँ तेरा ही सिमरन करूँ। आखिरी साँस तेरा ही नाम लेता हुआ निकल जाय।

॥ ॐ तत्सत् ॥

श्री लिंगाष्टकम्

ब्रह्म मुरारी सुरार्चित लिंगम्
निर्मल भाषित शोभित लिंगम्
जन्मज दुःख विनाशक लिंगम्
तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥

देव मुनी प्रवरार्चित लिंगम्
कामद हं करुणाकर लिंगम्
रावण दर्प विनाशन लिंगम्
तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥

सर्व सुगन्ध सुलेपित लिंगम्
बुद्धि विवर्धन कारण लिंगम्
सिद्ध सुरासुर वन्दित लिंगम्
तत् प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥

कनक महामणि भूषित लिंगम्
फणिपति वेष्टित शोभित लिंगम्
दक्ष सुयज्ञ विनाशन लिंगम्
तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥

कुंकुम चन्दन लेपित लिंगम्
पंकज हार सुशोभित लिंगम्
संचित पाप विनाशन लिंगम्
तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥

देवगणार्चित सेवित लिंगम्
भावै भक्ति भिरेवच लिंगम्
दिनकर कोटि प्रभाकर लिंगम्
तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥

अष्ट दल परिवेष्टित लिंगम्
सर्व समुद्भव कारण लिंगम्
अष्ट दरिद्र विनाशित लिंगम्
तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥

सुरगुरु सुरवर पूजित लिंगम्
सुरवन पुष्प सदार्चित लिंगम्
परात् पर मपरात्मक लिंगम्
तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥

(लिंगाष्टक मिदं पुण्यं यः पठेत् शिव सन्निधौ
शिवलोक मवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥)

❀ ॐ गणेशाय नमः ❀

गणेश

ॐ गजाननं भूतगणाधि सेवितम्, कपित्थ जम्बूफल चारु भक्षणम् ।
उमा सुतं शोक विनाश कारिकम्, नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम् ।।
विघ्नेश्वराय वरदाय सुर प्रियाय, लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।
नागाननाय श्रृतियज्ञ विभूषिताय, गौरी सुताय गणनाथाय नमो नमस्ते ।।

लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदक प्रिय,
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ।।
आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः,
इहागत्य गृहाण त्वं पूजां भागं च रक्ष मे ।।

—०—

नमस्ते गणनाथाय गणानां पतये नमः ।
भक्ति प्रियाय देवेश भक्तेभ्यः सुखदायक ।। १
स्वानन्द वासिने तुभ्यं सिद्धि बुद्धि वराय च ।
नाभि शेषाय देवाय ढुण्ढिराजाय ते नमः ।। २
वरदाभय हस्ताय नमः परशु धारिणे ।
नमस्ते सृणि हस्ताय नाभि शेषाय ते नमः ।। ३
अनामयाय सर्वाय सर्व पूज्याय ते नमः ।
सगुणाय नमस्तुभ्यं ब्रह्मणे निर्गुणाय च ।। ४

ब्रह्मभ्यो ब्रह्मदात्रे च गजानन नमोऽस्तुते ।
आदि पूज्याय जेष्ठाय ज्येष्ठराजाय ते नम: ॥ ५

मात्रे पित्रे च सर्वेषाम् हेरम्बाय नमो नम: ।
अनादये च विघ्नेश बिघ्नकर्त्रे नमो नम: ॥ ६

विघ्नहर्त्रे स्वभक्तानां लम्बोदर नमोऽस्तुते ।
त्वदीय भक्ति योगेन योगीशाः शान्तिमागताः ॥ ७

—: श्री गुरवे नम: :—

ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुर्रुविष्णु गुरुर्देवो महेश्वर: ।
गुरु: साक्षात पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नम: ॥

ॐ अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नम: ॥

अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नम: ॥

चैतन्यं शाश्वतं शान्तं व्योमातीतं निरञ्जन ।
नाद बिन्दु कलातीत तस्मै श्री गुरवे नम: ॥

ध्यानमूल गुरोर्मुर्ति: पूजामूलं गुरो पदम् ।
मंत्र मूल गुरो वाक्यं मोक्ष मूलं गुरो: कृपा ॥

न गुरोरधिकं तत्वं न गुरोरधिकं तप: ।
न गुरोरधिकं ज्ञानं तस्मै श्री गुरवे नम: ॥

काशिक्षेत्रं निवासश्च जाह्नवी चरणोदकम् ।
गुर्रुविश्वेश्वर: साक्षात् तारकं ब्रह्म निश्चयम् ॥

गुरुरेको जगत सर्वं ब्रह्मा विष्णु शिवात्मकम् ।
गुरोपरतरं नास्ति तस्मात् सम्पुज्यते गुरुम् ॥
वन्देऽहं सच्चिदानन्दं भावातीतं जगद् गुरुम् ।
नित्य पूर्णं निराकारं निर्गुणं त्वात्म संस्थितम् ॥

नमः शिवाय गुरवे सच्चिदानन्द मूर्तये ।
निस्प्रपचांय शान्ताय निरालम्बाय तेजसे ॥

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम् ।
द्वन्द्वातीतं गगन सदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम् ॥

एकं नित्यं विमलमचलं सर्वाधी साक्षिभूतं ।
भावातीतं त्रिगुण रहितं सदगुरुं तं नमामि ॥
सद्गुरु तं नमामि, सद्गुरुं तं नमामि ॥

—: नवग्रह :—

ब्रह्म मुरारि स्त्रिपुरान्तकारी, भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः, कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥

△ तुलसि △

तुलसि ! श्री सखि शिवे पाप हारिणि पुण्य दे ।
नमस्ते नारदनुने नमो नारायण प्रिये ॥

दीपमन्त्र

शुभं करोतु कल्याणं आरोग्यं धन सम्पदः ।
शत्रु बुद्धि विनाशाय दीप ज्योति नमोऽस्तुते ॥

दीप ज्योतिः परब्रह्म दीप ज्योति जनार्दनः ।
दीप हरतु मे पापं दीप ज्योति नमोऽस्तुते ।।

सूर्य

आदिदेव ! नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्करः ।
दिवाकर ! नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोऽस्तुते ।।
आदित्यस्य नमस्कारं ये कुर्वन्ति दिने दिने ।
जन्मान्तर सहस्रेषु दारिद्रयं नोपजायते ।।

नमः सवित्रे जगदेक चक्षुषे, जगत्प्रसूति स्थिति नाश हेतवे ।
त्रयीमयाय त्रिगुणात्म धारिणे विरंचि नारायण शंकरात्मने ।।

ब्रह्मा

नमस्ते सतेते जगत्कारणाय, नमस्ते चिते सर्वलोकाश्रयाय ।
नमोऽद्वैत तत्वाय मुक्ति प्रदाय, नमो ब्राह्मणे व्यापिने शाश्वताय ।।

व्यासदेव

शुक्लाम्बर धरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्न वदनं ध्यायेत्, सर्व विघ्नो प्रशान्तये ।।
व्यासाय विष्णुरुपाय व्यास रुपाय विष्णवे ।
नमो वै ब्रह्म निधये वशिष्ठाय नमो नमः ।।
अचतुर्वदनो ब्रह्मा द्विवादुर परो हरिः ।
अभाललोचनः शम्भुर्भगवान वादरायणः ।।

व्यासं वशिष्ठ नप्तारं शक्ते पौत्रम कल्मषम् ।
पराशरात्मषं वन्दे शुकतात तपोनिधिम ॥

शंकराचार्य

शंकर शंकराचार्य केशवं वादरायणम ।
सूत्र भाष्यं कृतं वन्दे भगवन्तो पुनः पुन: ॥
ईश्वरो गुरुरात्मनोति मूर्तिभेद विभागिन ।
व्योमवत्तदेहाय श्री दक्षिण मूर्तयेनमः ॥

गंगा

ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति,
नर्मदे सिंधु कावेरि जलेऽस्मिन सन्निधिं कुरु ।
गंगा सिन्धु सरस्वती च यमुना गोदावरी नर्मदा ।
कावेरी सरयु महेन्द्र तनया चर्मण्वती वेदिका ।
क्षिप्रा वेत्रवती महासुर नदी ख्याता जया गण्डकी ।
पूर्णाः पूर्णजलैः समुद्र सहितः कुर्वन्तु मे मंगलम् ॥

नमामि गङ्गे ! तव पाद पंकजम्, सुरासुरैर्वन्दित दिव्य रुपम् ।
भुक्तिं च मुक्तिं च ददासि नित्यं, भावानुसारेण सदा नराणाम् ॥

हनुमान

मनोजवं मारुततुल्य वेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथ मुख्यं श्री राम दूतं शरणं प्रपद्ये ॥

सरस्वती

या कुन्देन्दु तुषारहार धवला या शुभ्र वस्त्रा वृता ।
या वीणा वरदण्ड मण्डित करा या श्वेत पद्मासना ।।
या ब्रह्माच्युत शंकर प्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता ।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ।।

प्रणो देवी सरस्वती वाजेभिर्वाजनीवती धीना विन्य बतु ।
चोदयित्री सूनृतानां चेतंती सुमतीनाम् यज्ञदधे सरस्वती ।।
महोअर्णः सरस्वती प्रचेतयति केतुना धियो विश्वा विराजति ।

शान्तिपाठ

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।
ॐ शान्तिः ।। शान्तिः ।। शान्तिः ।।

ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रणुयाम देवाः, भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुस्टुवांस सस्तनुभिर्व्यशेमहि देवाहितं यदायुः ।।
स्वस्ति नः इन्द्रोवृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्व वेदाः ।
स्वस्तिर्नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो वृहस्पतिर्दधातु ।।
आब्रह्मण ब्रह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम् अस्मिन् राष्ट्रे राजन्यः इषव्यः शूरो महारथो जायतां, दोग्ध्रीधेनु र्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्ध्रिर्योषा जिष्णू रथेस्ठा, सभेयो युवाऽस्य यजमानस्य वीरो जायताम् निकामे निकामे न पर्यन्यो वर्षतु फलिन्यो न ओषधयः पच्यतां योग क्षेमो नः कल्पताम् । समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः । समानमस्तु वो मनः यथावः सुसहासंति ।

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः ।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत् ।।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

ॐ असतो मा सत् गमय-तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्माऽमृतं गमय ।।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

ॐ स्वस्त्यस्तु बिश्वस्य खलः प्रसीदतांध्यायन्तु भूतानि शिवं मिथोधिया

मनश्च भद्रं भयतादधोक्षजे अवेश्यतां नो मतिरप्य हैतुकी ।।

ॐ सहनाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै,

तेजष्विनावधीतमस्तु, मा विद्विषावहै ।। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

गायत्री

ॐ एक दन्ताय विद्महे, वक्र तुण्डाय धीमहि,तन्नो दन्ति प्रचोदयात् । १

ॐ तत् पुरुषाय विद्महे, महादेवाय धीमहि, तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् । २

ॐ नारायणाय विद्महे, वासुदेवाय धीमहि, तन्नो विष्णु प्रचोदयात् । ३

ॐ देव्यै ब्राह्मण्यै विद्महे,महाशक्त्यै च धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् ।४

ॐ महालक्ष्मै च विद्महे,विष्णु पत्न्यै च धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्५

ॐ भास्कराय विद्महे,महाद्युतिकराय धीमहि,तन्नो आदित्य प्रचोदयात्६

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।

धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ ॥

प्रातः स्मरण

कराग्रे वसते लक्ष्मी कर मूले सरस्वती,

कर मध्येतु गोविन्दः प्रभाते कर दर्शनम् ।

समुद्रे वसने देवी, पर्वत स्तन मण्डले,

विष्णु पत्नि ! नमस्तुभ्यं पादस्पर्ष क्षमस्व मे ।

No. 7

JAI SHANKAR

JAIN PICTURE PUBLICATION
5745, Jogewara, Nai Sarak,
DELHI - 110 006
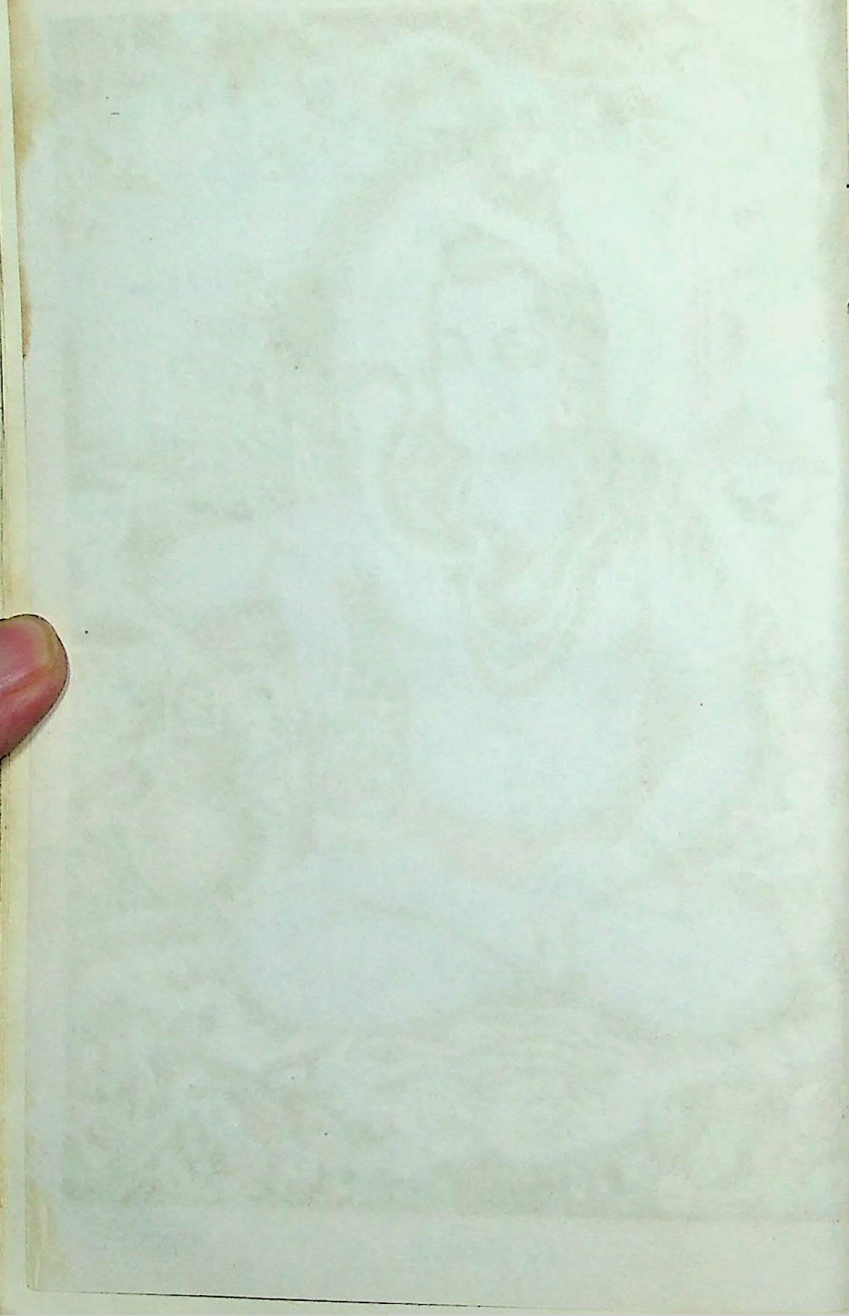
ॐ नमः शिवाय

श्री शिव प्रातः स्मरणम्

प्रातः स्मरामि भवभीतिहरं सुरेशं
गंगाधरं वृषभवाहनमम्बिकेशम्
खट्वाङ्गशूलवरदाभयहस्तमीशं
संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥१॥
प्रातर्नमत मगिरिशं गिरिजार्द्धदेहं
सर्गस्थितिप्रलयकारणमादिदेवम् ।
विश्वेश्वरं विजितविश्वमनोऽभिरामं
संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥२॥
प्रातर्भजामि शिवमेकमनन्तमाद्यं
वेदान्तवेद्यमनघं पुरुषं महान्तम् ।
नामादिभेदरहितं षड्भावशून्यं
संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥३॥
प्रातः समुत्थाय शिवं विचिन्त्य
श्लोकत्रयं येऽनुदिनं पठन्ति ।
ते दुःखजातं बहुजन्मसञ्चितं
हित्वा पदं यान्ति तदेव शम्भोः ॥४॥

॥ इति श्रीशिवस्य प्रातःस्मरणम् ॥

शिवप्रातः स्मरण स्तोत्रम्

प्रात:स्मरामि गिरिजापतिमादितेय—

स्रोतस्विनीस्रगभिरामजटाकलापम् ।

पियूषभानुमुकुटं शिखिपुष्पवन्ता—

क्षं नीलकण्ठमनुपाधिकृपामृताब्धिम् ॥१॥

प्रातर्नमामि निखिलेश्वरशासितारं—

तारं समस्तनिगमेषु कृतप्रचारम् ।

कामं दहन्तमहिमन्तमनन्तमन्त:—

सन्तं सुतीकुलललामकलत्रवन्तम ॥२॥

प्रातर्भजामि निखिलौषधिभर्तृभूषा—

रत्नं क्रियासु कुशलं भवरोगभीत: ।

पीयूषपाणिमगदप्रदमागमस्वं

वर्षिष्ठमार्त्तकरुणापरवन्तमीशम् ॥३॥

श्लोकत्रयं विरचितं यमिना प्रबोधा—

नन्देन नन्दयतु शश्वदिदं प्रसन्नम् ।

धन्यानखण्डविभवानमृतांशुखण्ड—

चूड़ामणिस्मरणलोलुपचित्तचुञ्चून् ॥४॥

श्रीसदाशिव ध्यानम्

आद्यन्तमङ्गलमजातसमानभाव—
मार्यं तमीशमजरामरमात्मदेवम् ।
पञ्चाननं प्रबलपञ्चविनोदशील
सम्भावये मनसि शंकरमम्बिकेशम् ॥

शान्तं पद्मासनस्थं शशिधरमुकुटं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रं ।
शूलं वज्रं खड्गं च परशुमपिवरं दक्षिणाङ्गे वहन्तम् ॥
नागं पाशं च घण्टां डमरुक सहित चांकुशंवामभागे ।
नानालंकारदीप्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं भजामि ॥

वंदे देवमुमापतिं सुरगुरुं वंदे जगत्कारणम्
वंदे पन्नगभूषणं मृगधरं वंदे पशूनां पतिम् ।
वंदे सूर्यशशांकवह्नि-नयनं वंदे मुकुन्दप्रियम,
वंदे भक्तजनाश्रयं च वरदं वंदे शिवं शङ्करम् ॥

ॐ शान्तकारं शिखरशयनं सर्पहारं सुरेशं ।
विश्वाधारं स्फटिकसदृशं शुभ्रवर्णं शुभांगम् ॥
गौरीकांतं मदनदहनं योगिभिर्ध्यानगम्यम् ।
वन्दे शम्भुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

कर्पूरगौरं करुणावतरं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि ॥

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च
नमः शंकराय च मयस्कराय च
नमः शिवाय च शिवतराय च ॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥

श्रीशिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय
भस्माङ्गरागाय महेश्वराय ।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय
तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय ॥१॥

मन्दाकिनीसलीलचन्दनचर्चिताय
नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय ।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय
तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय ॥२॥

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द-
सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय ।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय
तस्मै 'शि' कराय नमः शिवाय ॥३॥

वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य-
मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय ।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय
तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय ॥४॥

यक्षस्वरूपाय जटाधराय
पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय
तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय ॥५॥

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥६॥

(शिव स्तुति) (पुष्पांजलि)

असित गिरिसम स्यात कज्जलं सिन्धुपात्रे ।
सुरतरुवर शाखा लेखनी पत्र मुर्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्व कालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥
श्मशानेष्वाक्रीड़ा स्मरहर पिशाचा: सहचरा ।
श्चिताभस्मालेपोडस्रृगपि नृकरोटीपरिकर: ॥
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवम खिलं ।
तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मंगलमसि ॥
नम: शिवाय शान्ताय कारण त्रय हेतवे ।
निवेदयामि चात्मानं त्वं गति: परमेश्वर ॥
नमस्तुभ्यं विरुपाक्ष नमस्ते दिव्य चक्षुषे ।
नम: पिनाक हस्ताय वज्रहस्ताय वै नम: ॥
नमस्त्रिशूलहस्ताय दण्ड पाशासिपाणये ।
नमस्त्रैलोक्यनाथाय भूतानां पतये: नम: ॥
नमस्ये त्वां महादेव लोकानां गुरुमीश्वरम् ।
पुंसामपूर्णकामानां कामपूरमङ्घ्रिपम्, ॥
तव तत्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर: ।
यादृशस्त्वं महादेव तादृशाय नमो नम: ॥

❋

निरावलम्बस्य ममावलम्बं पिपाटिताशेषविपत्कदम्बम ।
मदीय पापाचलपातशम्बं प्रवर्ततां वाचि सदैव बम् बम् ॥

❋

नमस्कार

ॐ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्त्रमूर्तये सहस्त्रपादाक्षिशिरोरुवाहवे । सहस्त्रानाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्त्रकोटी युग धारिणे नमः ॥
हरिः ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् । तेह नाकं, महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥
ॐ राजाधि राजाय प्रसह्य साहिने । नमो वयं वैश्रवणाय कुर्म हे ॥ स मे कामान् काम कामाय मह्यम् कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु । कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ॥

❀ विराटरुप ❀

विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वत स्यात् । सम्वाहुभ्यां धमति संपतत्रैर्द्यावा भूमी जनयन देव एकः ॥

श्री शिवमहिम्नस्तोत्रम्

पुष्पदन्त उवाच

महिम्नः पारन्ते परमविदुषो यद्यसदृशी,
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नस्त्वयि गिरः।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधिगृणन्,
ममाप्येषस्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः।
अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो,
रतद्व्यावृत्त्यायं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः,
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः।
मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत,
स्तवब्रह्मन् किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः,
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथनबुद्धिर्व्यवसिता॥
तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रक्षयकृत्,
त्रयीवस्तुव्यस्तं तृसृषु गुणभिन्नासु तनुषु।
अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं,
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः॥
किमीहः किङ्कायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनम्,
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च।
अतर्क्यैश्वर्येत्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः,

कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगत: ।।

अजन्मानो लोका: किमवयववन्तोऽपि जगता-
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति ।
अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने क: परिकरो,
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे ।।

त्रयी साङ्ख्यं योग: पशुपतिमतं वैष्णवमिति,
प्रभिन्ने प्रस्थाने पर मिदमद: पथ्यमिति च ।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनाना पथजुषां,
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ।।

महोक्ष: खट्वाङ्गम्परशुरजिन भस्म फणिन:,
कपाल चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम् ।
सुरास्तां तामृद्धि दधति तु भवद्भ्रप्रणिहितां,
न हि स्वात्मारामं विषय मृततृष्णा भ्रमयति ।।

ध्रुवं कश्चित् सर्वं सकलमपरस्तवध्रुवमिदं,
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये ।
समस्तेऽप्येतस्मिन्पुरमथम तैर्विस्मित इव,
स्तुवञ्जिह्लोमि त्वां न खलु ननुधृष्टा मुखरता ।।

तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरिविरञ्चिर्हरिरध:,
परिच्छेत्तुं यातावनलमनिलस्कन्धवपुष: ।
ततोभक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत्,
स्वयंतस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्नफलति ।।

अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं,
दशास्यो यद्बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान् ।
शिरःपद्मश्रेणी रचितचरणाम्भोरुहबलेः,
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम् ।

अमुष्य त्वत्सेवा समाधिगतसारं भुजवनं,
बलात्कैलासेऽपि त्वदधिवसतौविक्रमयतः ।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि,
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद्ध्रुवमुपचितोमुह्यति खलः ॥

यदृद्धि सुत्राम्णो वरद ! परमोच्चैरपि सती,
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयस्त्रिभुवनः ।
न तच्चित्रं तस्मिन्वरिवसितरित्वच्चरणयोः,
न कस्याप्युन्नत्यै भवतिशिरसस्त्वय्यवनतिः ॥

अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुर कृपा,
विधेयस्याऽसीद्यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः ।
स कल्पमाषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो,
विकारोऽपिश्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः ॥

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे,
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः ।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्,
स्मरःस्मर्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्यः परिभवः ॥

मही पादाघाताद्व्रजति सहसा संशयपदम्,
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजररिघरुग्णग्रहगणम ।

मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा,
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामेवविभुता ।।

वियद्व्यापीतारागणगुणितफेनोद्गम रुचिः,
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्ठः शिरसि ते ।

जगद् द्वीपाकारं जलधिप्रलयं तेन कृतमित्य—
नेनैवोन्नेयं धृतमहिमदिव्यं तव वपुः ।।

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिनगेन्द्रो धनुरथो,
रथाङ्गेचन्द्राकौं रथचरणपाणिः शर इति ।

दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि,
र्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः ।

हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयो,
र्यदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्रकमलम् ।

गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा,
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम् ।।

कतौ मुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमताम्,
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलतिपुरुषाराधनमृते ।

अतस्त्वां संप्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं,
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः ।।

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृताम्,
ऋषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः ।

क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो,
ध्रुव कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः ।।

प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरम्,
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा ॥

धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुम्,
त्रसन्तन्तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ॥

स्वलावण्याशंसा धृतधनुषमह्नाय तृणवत्,
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वापुरमथन पुष्पायुधमपि ।

यदिस्त्रैणं देवी यमनिरतदेहार्धघटनाद,
अवैतित्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः ॥

श्मशानेष्वाक्रीडास्मरहर पिशाचाः सहचरा,
श्चिताभस्मालेपः स्त्रगति नृकरोटीपरिकरः ।

अमंगल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलम्,
तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मंगलमसि ॥

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः,
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः ।

यदालोक्याह्लादह्लद इव निमज्यामृतमये,
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किलभवान् ।

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वंहुतवह,
स्त्वमापस्त्वं व्योमत्वमुधरणिरात्मात्वमिति च ।

परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतुगिरम्,
न विद्मस्तत्तत्त्वंवयमिह तु यत्त्वं न भवसि ॥

त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपिसुरा,
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृति ।

तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः,
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद् गृणात्योमिति पदम् ।।

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सह महां,
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम् ।।

अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रविचरित देवः श्रुतिरपि,
प्रियायास्मै धाम्नेप्रणिहितनमस्योऽस्मि भवते ।

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो,
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः ।

नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो,
नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः ।।

वहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः,
प्रवलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः ।

जनसुखकृते सत्वोद्रिक्तौमृडाय नमो नमः,
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः ।।

कृशपरिणतिचेत क्लेशवश्यं क्व चेदं.
क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घनीशश्वदृद्धि ।।

इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधा,
द्वरदचरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ।।

असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रै,
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी ।

लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं,
तदपि तव गुणनामीशपारं न याति ।।

असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौले,

ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य ।

सकलगणवरिष्ठ पुष्पदन्ताभिधानो,

रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ॥

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्,

पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान्यः ।

स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथात्र,

प्रचुरतरधनायुः पुत्रमानकीर्तिमांश्च ॥

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः,

अघोरान्नापरोमन्त्रो नास्ति तत्त्वंगुरोः परम ।

दीक्षा दानं तपस्तीर्थज्ञानंयागादिकाः क्रियाः,

महिम्नस्तवपाठस्य कलांनार्हन्तिषोडशीम् ॥

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः,

शशिधरधरवरमौलेर्देवदेवस्य दासः ।

स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्यरोषात्,

स्तपनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यं महिम्नः ॥

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं,

पठति यदि मनुष्यः प्रञ्जलिर्नान्यचेताः ।

व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः,

स्तवनमिदममोघ पुष्पदन्तप्रणीतम् ।

श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन,
स्तोत्रेण किल्विषहरेण हरप्रियेण ।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन,
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेश: ॥
आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्वभाषितम्
अनौपम्य मनोहारि शिवमीश्वरवर्णनम् ।
तव तत्त्व न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नम: ।
एककालं द्विकालं वा त्रिकालं य: पठेन्नर: ।
सर्वपापविनिर्मुक्त: शिवलोके महीयते ।
इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयो: ।
अर्पिता तेन देवेशप्रीयतां मे सदाशिव ॥
श्री पुष्प दन्त मुख पकज निर्गतेन ।
स्तोत्रेण किल्विष हरेण हर प्रियेण ॥
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन ।
सुप्रीणितो भवति भूतपतिमहेश: ॥
यदक्षर पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद भवेद् ।
तत्सर्वं क्षमतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥
ॐ पूर्णमद: पूर्णमिद पूर्णात पूर्ण मुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवा वशिष्यते ॥
ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति:
ॐ महादेव शिव शंकर शम्भो उमाकान्त हर त्रिपुरारे।
मृत्युञ्जय वृषभध्वज शूलिन गङ्गाधर मृड़मदनारे ।
हर शिव शंकर गौरीशं,
वन्दे गंगाधरमीशं,
रुद्रं पशुपतीमीशानं,
कलये काशी पुरी नाथम्
जय शम्भो जय शम्भो शिव गौरी शंकर जय शम्भो
ॐ नम: पार्वती पतये,
हर हर हर महादेव ॥

श्रीरुद्राष्टकस्तोत्रम्

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं ।
विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं ॥
निजं निगुर्णं निर्विकल्पं निरीहं ।
चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं ॥१॥

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं ।
गिरा ग्यान गातीतमीशं गिरीशं ॥
करालं महाकाल कालं कृपालं ।
गुणागार संसारपारं नतोऽहं ॥२॥

तुषाराद्रि संकाश गौरं गंभीरं ।
मनोभूत कोटि प्रभा श्रीशरीरं ॥
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा ।
लसत्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा ॥३॥

चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं ।
प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं ॥
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं ।
प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥४॥

प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं ।
अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं ॥
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं ।
भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं ॥५॥

कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी ।

सदा सज्जानानन्ददाता पुरारी ।।
चिदानन्द सन्दोह मोहापहरी ।
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ।।६।।
न यावद् उमानाथ पादारविन्दं ।
भन्जीतीह लोके परे वा नराणां ।।
न तावत्सुख शान्ति सन्तापनाश ।
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं ।।७।।
न जानामि योगं जपं नैव पूजां ।
नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं ।।
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं ।
प्रभो पाहि आपन्न मामीश शंभो ।।८।।
श्लोक—रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेणा हरतोषये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ।।९।।

उमा महेश्वर स्तोत्रम्

नमः शिवाभ्यां नव यौवनाभ्यां, परस्परा श्लिस्ट वपुर्धराभ्याम् ।
नगेन्द्र कन्या वृषकेतुनाभ्यां नमो नमः शकर पार्वतीभ्याम् ।
नमः शिवाभ्यां सरसोत्सवाभ्यां नमस्कृताभीष्ट वर प्रदाभ्याम् ।
नारायणेनार्चित पादुकाभ्यां नमो नमः शंकर पार्वतीभ्याम् ।
नमः शिवाभ्यां वृषवाहनाभ्यां विरञ्चि विष्णवेन्द्र सुपूजिताभ्याम् ।
विभूति पाटीर विलेपनाभ्यां नमो नमः शंकर पार्वतीभ्याम् ।
नमः शिवाभ्यां जगदीश्वराभ्यां जगत्पतिभ्यां जग विग्रहाभ्याम् ।
जम्भारि मुख्यैर्रा भवन्दिताभ्यां नमो नमः शंकर पार्वतीभ्याम् ।
नमः शिवाभ्यां परमौषधाभ्यां पंचाक्षरी पञ्जर रञ्जिताभ्याम् ।
प्रपञ्च सृष्टि स्थिति संहृताभ्यां नमो नमः शंकर पार्वतीभ्याम् ।
नमः शिवाभ्यामिति सुन्दराभ्या मत्यन्त मासक्त हृदम्बुजाभ्याम् ।
अशेष लोकैक हितं कराभ्यां नमो नमः शंकर पार्वतीभ्याम् ।
नमः शिवाभ्यां कलिनाशनाभ्यां ककाल कल्याण वपुर्धराभ्याम् ।
कैलाश शैलस्थित देवताभ्यां नमो नमः शंकर पार्वतीभ्याम् ।
नमः शुभाभ्यां अशुभा पहाभ्यामशेष लोकैक विशेषिताभ्याम् ।
अकुण्ठिताभ्यां स्मृति सम्भूताभ्यां नमो नमः शंकर पार्वतीभ्याम् ।
नमः शिवाभ्यां रथ वाहनाभ्यां रवीन्द्र वैश्वानर लोचनाभ्याम् ।
राकाश शाङ्काभ मुखाम्बुजाभ्यां नमो नमः शंकर पार्वतीभ्याम् ।
नम शिवाभ्यां जटिलं धराभ्यां जरास्मृतिभ्यां च विवर्जिताभ्याम् ।

जनार्दनाब्जोद्भव पूजिताभ्याम् नमो नमः शंकर पार्वतीभ्याम् ।
नमः शिवाभ्यां विषयेक्षणाभ्यां विल्बच्छदा मल्लिकदाम-भृदभ्याम् ।
शोभावती शान्तवतीश्वराभ्यां नमो नमः शंकर पार्वतीभ्याम् ।
नमः शिवाभ्यां पशुपालकाभ्यां जगत्त्रयी रक्षण बद्ध हृदभ्याम् ।
समस्त देवासुर पूजिताभ्यां नमो नमः शंकर पार्वतीभ्याम् ।
स्तोत्रं त्रिसन्ध्यं शिवपार्वतीभ्याम भक्त्या पठेद् द्वादशकं नरो यः
स सर्वं सौभाग्य फलानि भुङ्क्ते शतायुरन्ते शिवलोकमेति
(इति श्रीमदाद्य शंकराचार्य विरचितं उमा महेश्वर स्तोत्रं सम्पूर्णम्)

महामृत्युञ्जय मंत्र

ॐ हौं जूं सः, ॐ भूर्भुवः स्वः,
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।
स्वः भुव भूः ॐ । सः जूं हौं ॐ ।'

निवेदन

गुह्यातिगुह्य गोप्ता त्वं गृहाणाऽस्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्‌ महेश्वर ।

शिव चालीसा

दोहा— जै गणेश गिरजा सुवन, मंगल मूल सुजान ।
कहत अयोध्यादास तुम, देव अभय वरदान ॥

चौपाई

जै गिरिजापति पति दीन दयाला, सदा करत सन्तन प्रतिपाला ।
भाल चन्द्रमा सोहत नीके, कानन कुण्डल नाग फनीके ।
अङ्ग गौर शिर गंग बहाये, मुण्ठ माल तन क्षार लगाये ।
वस्त्र खाल वाघम्बर सोहें, छबि को देख नाग मुनि मोहें ।
मैंना मातु की ह्वै दुलारी, बाम अंग सोहत छबि न्यारी ।
कर त्रिशूल बाघम्बर धारी, करत सदा शत्रुन क्षयकारी ।
नन्दिगणणेश सोहें तहं कैसे, सागर मध्य कमल हैं जैसे ।
कार्तिक श्याम और गणराऊ, या छबि को कहि जात न काऊ ।
देवन जबहीं जाय पुकारा, तबहीं दुःख प्रभु आप निवारा ।
किया उपद्रव तारक भारी, देवन सब मिल आप जुहारी ।
तुरत षडानन आप पठायऊ, लवनिमेष महं मारि गिरायऊ ।
त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई, सर्वहिं कृपा कर लीन वचाई ।
तप कीन्हों भागीरथ भारी, करी तपस्या सफल पुरारी ।
दानिन महं तुम सम कोउ नाहीं, सब जग स्तुति करत सदाहीं ।
तव महिमा वेदन ने गाई, रहे मौन जब अन्त न पाई ।

प्रगटी उदधि मंथन विष ज्वाला, जरे सुरासुर भये विहाला।
कीह्न पान यों करी सहाई, नीलकंठ तब नाम कहाई ।
पूजन रामचन्द्र जब कीन्हा, लंक जीत विभीषण दीन्हा ।
सहस कमल में हो रहे धारी, कीन्ह परीक्षा तबहि पुरारी।
एक कमल प्रभु राखेउ गोई, कमल नैन पूजन चहसोई ।
कठिन भक्ति देखि प्रभु शंकर, भए प्रसन्न दिए इच्छितवर ।
जय जय जय अनन्त अविनाशी, करत कृपा सब के घट वासी।
काम क्रोध नित हमें सतावैं, भ्रमित रहैं हम चैन न पावैं।
त्राहि-त्राहि हे नाथ उबारो, करो कृपा भव से मोहि तारो।
लै त्रिशूल शत्रुन को मारो, संकट से मोहि आनि उबारो।
मात पिता भ्राता सब कोई, संकट में पूछत नहि कोई ।
स्वामी है इक आश तुम्हारी, दूर करो संकट है भारी ।
धन निरधन को देत सदा ही, आवे शरण देहु तुम ताही।
अस्तुति केहि विधि करौं तुम्हारी, क्षमहु नाथ अब चूक हमारी।
शंकर हो संकट के नाशक मगल-कारक विघ्न विनाशक ।
योगी मुनिजन ध्यान लगावैं, शारद नारद शीश नवावे ।
सुर गण रटते नमः शिवाय, नमो नमो ॐ नमः शिवाय।
जो यह पाठ करै मनलाई, होवें ताके शंभु सहाई ।
करै पुत्र की इच्छा कोई, निश्चय शिव प्रसाद तेहि होई ।
पडित त्रयोदसी को लावै, ध्यान पूर्वक होम करावै ।
त्रयोदशी व्रत करे हमेशा, ताके तन नहि रहे कलेशा ।
धूप दीप नैवेद्य चढ़ावै, शंकर सन्मुख पाठ सुनावै ।
जन्म जन्म के पाप नवावै, अन्त वास शिवपुर में पावै ।
कहे "अयोध्या" आस तुम्हारी, पूरहु सब कामना हमारी ।
जय जय जय जय जय त्रिपुरारी, आये हैं हम शरण तुम्हारी।

दोहा

नित नेम करि प्रातःही, पाठ करो चालीस ।
तुम मेरी मन कामना, पूर्ण करहु जगदीश ॥

समर्पण

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देव ।
त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरण्यं
त्वमेकं जगत् पालकं स्वप्रकाशम् ।
त्वमेकं जगत्कर्तृ पातृ प्रहर्तृ
त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम् ।
आयुर्नश्यति पश्यतां प्रतिदिनं याति क्षयं यौवनं,
प्रत्यायान्ति गता पुनर्न दिवसाः कालो जगद्भक्षकः ।
लक्ष्मीस्तोयतरङ्ग भङ्ग चपला विद्युच्चलं जीवितं,
तस्मान्मां शरणागतं शरणद त्वं रक्ष रक्षाऽधुना ॥
कर चरण कृतं वाक्कायजं कर्मजं वा,
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम् ।
विदित अविदितं वा सर्वमेतम् क्षमस्व,
जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो ।
कायेन वाचा मनसेन्द्रियेर्वा,
बुध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्,
करोमि यद् यद् सकलं परस्मै,
नारायणायेति समर्पयामि, नारायणायेति समर्पयामि ।

❀ आत्मस्टकम् ❀

मनो बुद्ध्यहंकार चित्तानि नाहं, न च श्रोत्रजिह्वे न च घ्राण नेत्रे।
न च व्योम भूमि न तेज न वायु:, चिदानन्द रुप: शिवोऽहम शिवोऽहम ॥
न च प्राण संज्ञो न वै पंच वायु, न वा सप्तधातुर्नवा पंच कोश:।
न वाक् पाणि पादौ न चोपस्थ पायु: चिदानन्द रुप: शिवोऽहम शिवोऽहम
न मे द्वेष रागो न मे लोभ मोहौ, मदोनैव मे नैव मात्सर्य भाव: ।
न धर्मो न अर्थो न कामो म मोक्ष: चिदानन्द रुप: शिवोऽहम शिवोऽहम ॥
न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दु:खं, न मन्त्रो न तीर्थं न वेद न यज्ञ:।
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता, चिदानन्द रुप: शिवोऽहम शिवोऽहम ॥
न मे मृत्यु शंका न मे जाति भेदा, पिता नैव मे नैव माता न जन्म।
न बन्धुर्नमित्रं गुरुनैव शिष्य: चिदानन्द रुप: शिवोऽहम शिवोऽहम ॥
अहं निर्विकल्पो निराकार रुपो, विभूव्याप्य सर्वत्र सर्वेद्रियाणाम् ।
सदा मे समत्वं न मुक्तिर्नबन्ध:, चिदानन्द रुप: शिवोऽहम शिवोऽहम ॥
चिदानन्द रुप: शिवोऽहम शिवोऽहम, चिदानन्द रुप: शिवोऽहम शिवोऽहम

❀ शिव आरतो ❀

जय गङ्गाधर हर शिव जय गिरिजाधीश, शिव जय गौरी नाथ,
त्वं मां पालय नित्यं, त्वं मां पालय शम्भो, कृपया जगदीश।
ॐ हर हर हर महादेव ॥

कैलाशे गिरि शिखरे कल्पद्रूमबिपिने, शिव कल्पद्रूम विपिने।
गुंजति मधुकर पुञ्जे, गुंजति मधुकर पुञ्जे, कुञ्ज वने गहने ॥
कोकिल कूजति खेलति हंसावलि ललिता, शिव हंसावलि ललिता।
रचयति कला कलापं, रचयति कला कलापं, नृत्यति मुद सहिता ॥
ॐ हर हर हर महादेव॥

तस्मिँल्ललित सुदेशे शाला मणि रचिता, शिव शाला मणि रचिता।
तन् मध्ये हर निकटे, तन् मध्ये शिव निकटे, गौरी मुद सहिता।
क्रीड़ां रचयति भूषां रंजित निज मिशं, शिव रंजित निज मिशं।
इन्द्रादिक सुर सेवित, इन्द्रादिक सुर सेवित प्रणमति ते शिर्षम् ॥
ॐ हर हर हर महादेव॥

विवुध वधूर्वहु नृत्यति हृदये मुद सहिता, शिव हृदये मुद सहिता।
किन्नर गायन कुरुते, किन्नर गायन कुरुते, सप्तश्वर सहिता।
धिनिकत थै थै धिनकत मृदंगं वादयते शिव मृदगं वादयते।
कण कण ललित वेणु, कण कण ललित वेणुर्मुधुरं नादयते ॥
ॐ हर हर हर महादेव॥

रुण रुण चरणे रचयति नुपुरमुज्वलितं, शिव नुपुरमुज्वलितं।
चक्रावर्ते भ्रमयति, चक्रावर्ते भ्रमयति कुरुते तां धिक तां।
तां तां लुप चुप तालं नादयते, शिव तालं नादयते।
अंगुष्ठांगुलिनादं, अंगुष्ठांगुलिनादं लास्यकतां कुरुते ॥
ॐ हर हर हर महादेव॥

कर्पूरद्युति गौरं पंचानन सहितं शिव पंचानन सहितं ।
त्रिनयन शशिधर मौलि, त्रिनयन शशिधर मौलि, विषधर कण्ठयुतं ।
सुन्दर जटा कलापं पावक युत भालं, शिव पावक युत भालं ।
डमरु त्रिशूल पिनाकं, डमरु त्रिशूल पिनाकं कर धृत नृक पालं ॥
ॐ हर हर हर महादेव ॥

शंख निनाद कृत्वा झल्लरि नादयते, शिव झल्लरि नादयते ।
नीरा जयते ब्रह्मा नीरा जयते विष्णु, वेद ऋचां पठते ।
इति मृदु चरण सरोजं हृदि कमले धृत्वा, शिव हृदि कमले धृत्वा ।
अवलोकयति महेशं अवलोकयति महेशं ईश ह्यभिनत्वा ॥
ॐ हर हर हर महादेव ॥

रुण्डै रचयति मालां पन्नगमुपवीतं, शिव पन्नगमुपवीतं ।
वाम विभागे गिरिजा-वाम विभागे गिरिजा रुप अति ललितं ।
सुन्दर सकल शरीरे कृत भस्मा भरणं शिव कृत भस्मा भरणं ।
इति वृषभध्वज रुपं इति वृषभध्वज रुपं ताप त्रय हरणं ॥
ॐ हर हर हर महादेव ॥

ध्यानं आरती समये हृदये इति कृत्वा, शिव हृदये इति कृत्वा ।
रामं त्रिजटा नाथं, शम्भो त्रिजटा नाथं, ईश ह्यभिनत्वा ।
संगीत प्रतिदिनं पठनं यः कुरुते शिव पठनं यः कुरुते ।
शिव सायुज्यं गच्छति, शिव सायुज्यं गच्छति, भक्त्या यः श्रृणुते ॥
ॐ हर हर हर महादेव ॥

ॐ जय गंगाधर हर शिव जय गिरिजाधीश, शिव जय गौरी नाथ ।
त्वं मां पालय नित्यं त्वं मां पालय शम्भो कृपया जगदीश ॥
ॐ हर हर हर महादेव ।

ॐ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्र मूर्तये, सहस्र पादाक्षि शिरोरु बाहवे ।
सहस्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्र कोटि युग धारिणे नमः ॥

कर्पूर गौरं करुणावतारं संसार सारं भुजगेन्द्र हारम् ।
सदा वसन्तं हृदयार विन्दे भवं भवानी सहितं नमामि ।

चन्द्रोद्भासित शेखरे स्मर हरे गंगा धरे शंकरे ।
सर्पैर्भूषित कण्ठ कर्ण विवरे नेत्रोत्थ वैश्वानरे ।

दन्तित्वक्कृत सुन्दराम्बर धरे त्रैलोक्य सारे हरे ।
मोक्षार्थं कुरु चित्तवृति मचला मन्यैस्तु किं कर्मभिः ।

ॐ नाना सुगंध पुष्पाणि यथा कालोद् भवानि च,
पुष्पाञ्जलिर्मयादत्त प्रसीद परमेश्वर ॥

विष्णु

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभ सुरेशं,
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं,
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्ररुद्रमरुत:
स्तुन्वन्ति दिव्यै: स्तवै-
र्वेदै: साङ्गपदक्रमोपनिषदै-
र्गायन्ति यं सामगा: ।
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा
पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदु: सुरासुरगणा
देवाय तस्मै नम: ॥

विष्णु स्तुति

वसुदेव सुतं देव कंस चाणूर मर्दनम् ।

देवकी परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥

सशंख चक्रं सकिरीट कुण्डल,

सपीत वस्त्रं सरतीरु हेक्षणम् ।

सहार वक्षः स्थल कौस्तुभ श्रियं

नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम ॥

मूकं करोति वाचालं पंगुं लंघयते गिरिम् ।

यत् कृपा तमहं वन्दे परमानन्द माधवम् ॥

त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणः स्त्वमस्य विश्वस्थ परं निधानम् ।

वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम, त्वयाततं विश्वमनन्त रुपम् ।

वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशांङ्कः प्रजापतिस्त्वं प्रपिता महश्च ।

नमो नमस्तेऽस्तु सहस्र कृत्वः पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते ।

नमः पुरस्तादथ पृष्ठ तस्ते नमोऽस्तुते सर्वत्र एक सर्व,

अनन्त वीर्यामित विक्रमस्त्वं सर्व सभाजोषि ततोऽसि सर्वः ।

सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं हे कृष्ण हे यादब हे सखेति ।

अजानता महिमानं तवेदं मया प्रमादात् प्रणयेन वापि ।

यच्चावहासार्थ मसत्कृतोऽसि विहार शय्यासन भोजनेषु ।

एकोऽथवाप्य च्युत तत्समक्षं तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम् ॥

पितासि लोकस्य चराचरस्य त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान् ।

न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो लोकत्रयेऽप्य प्रतिम प्रभाव ।।

तस्मात् प्रणम्य प्रणिधाय कायं प्रसादये त्वामहमीश मीढ्यम् ।

पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः प्रिया प्रियायार्हसि देव सोढुम् ।।

अदृष्ट पूर्वं हृषितोऽस्मि दृष्टा भयेन च प्रव्यथितं मनो मे ।

तदेव मे दर्शय देव रुपं प्रसीद देवेश जगन्निवास ।

किरीटिनं गदिनं चक्र हस्त मिच्छामि त्वां द्रस्टुमहं तथैव,

ते नैव रुपेण चतुर्भुजेन सहस्त्र वाहो भव विश्वमूर्ते ।।

सहस्त्र वाहो भव विश्वमूर्ते ।।

कृष्ण

कस्तूरी तिलकं ललाट पटले वक्षः स्थले कौस्तुभं,

नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कंकणम् ।

सर्वांगे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावलिः,

गोपस्त्री परि वेष्टितो विजयते गोपाल चूड़ामणिः ।।

कृष्णाय वासुदेवाय हरेये परमात्मने ।

प्रणत क्लेश नाशाय गोविन्दाय नमो नमः ।।

गोविन्द दामोदर माधवेति

करार विन्दे न पादार विन्दं, मुखार विन्दे विनिवेशयन्तं ।

वटस्थ पत्रस्य पुटे शयनं—बाल मुकुंदं मनसास्मरामि ॥

श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेवा ।

जिह्वे पिवस्वा मृतमेत देव—गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

विक्रेतु कामा किल गोपकन्या, मुरारि पादार्पित चित्तवृत्ति:

दध्यादिकं मोहवसादवोचद्—गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

गृहे-२ गोप वधू कदम्बा:, सर्वे मिलित्वा समवाप्य योगम् ।

पुण्यानि नाभानि पठन्ति नित्यं गोविन्द दामोदर माधवेति ।

सुखं शयाने निलये निजेऽपि, नामानि विष्णों प्रवदन्ति मर्त्या: ।

ते निश्चितं तन्मयतां प्रजन्ति—गोविन्द दामोदर माधवेति ।

जिह्वै सदैव भज सुन्दराणि, नामानि कृष्णस्य मनोहराणि ।

समस्त भत्यायार्ति विनाशनानि—गोविन्द दामोदर माधवेति

सुखावसाने इदमेव सारं, दु:खावसाने इदमेवज्ञेंयम्

देहावसाने इदमेव जाप्यं—गोविन्द दामोदर माधवेति ।

श्रीकृष्ण राधावर गोकुलेशऽगोपाल गोवर्धन नाथ विष्णो ।

जिह्वे पिवस्वा मृतमेत देव—गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

गोविन्द दामोदर माधवेति ।

—: ॐ नम: इति :—

मधुराष्टकम्

अधरं अधुरं बदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम् ।

हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपते रखिलं मधुरम् ।।

वचनं मधुरं चरितं मधुरं बसनं मधुरं वलितं मधुरम ।

चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपते रखिलं मधुरम ।

वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुर: पाणिर्मधरः पादौ मधुरो ।।

नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपते रखिल मधुरम् ।

गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरम् सुप्तं मधुरम् ।।

रुपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपते रखिलं मधुरम् ।

करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं स्मरणं मधुरम् ।

वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपते रखिलं मधुरम् ।

गुंजा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा ।

सलिलं मधुरं कमलं मधुरं मधुरा धिपते रखिलं मधुरम् ।

गोपा मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं भुक्तं मधुरम् ।

दुष्टं मधुरं शिष्ठं मधुरं मधुराधिपते रखिलं मधुरम ।।

गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिमधुरा सृष्टिर्मधुरा ।

दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपते रखिलं मधुरम् ।

मधुराधिपते रखिलं मधुरम् ।

S. S. BRIJBASI & SONS
59, MIRZA STREET BOMBAY-

51 / LAKSHMI NARAYAN

S. S. BRIJBASI & SONS
32/1, FATEHPURI DELHI-6.

❀ ॐ ❀
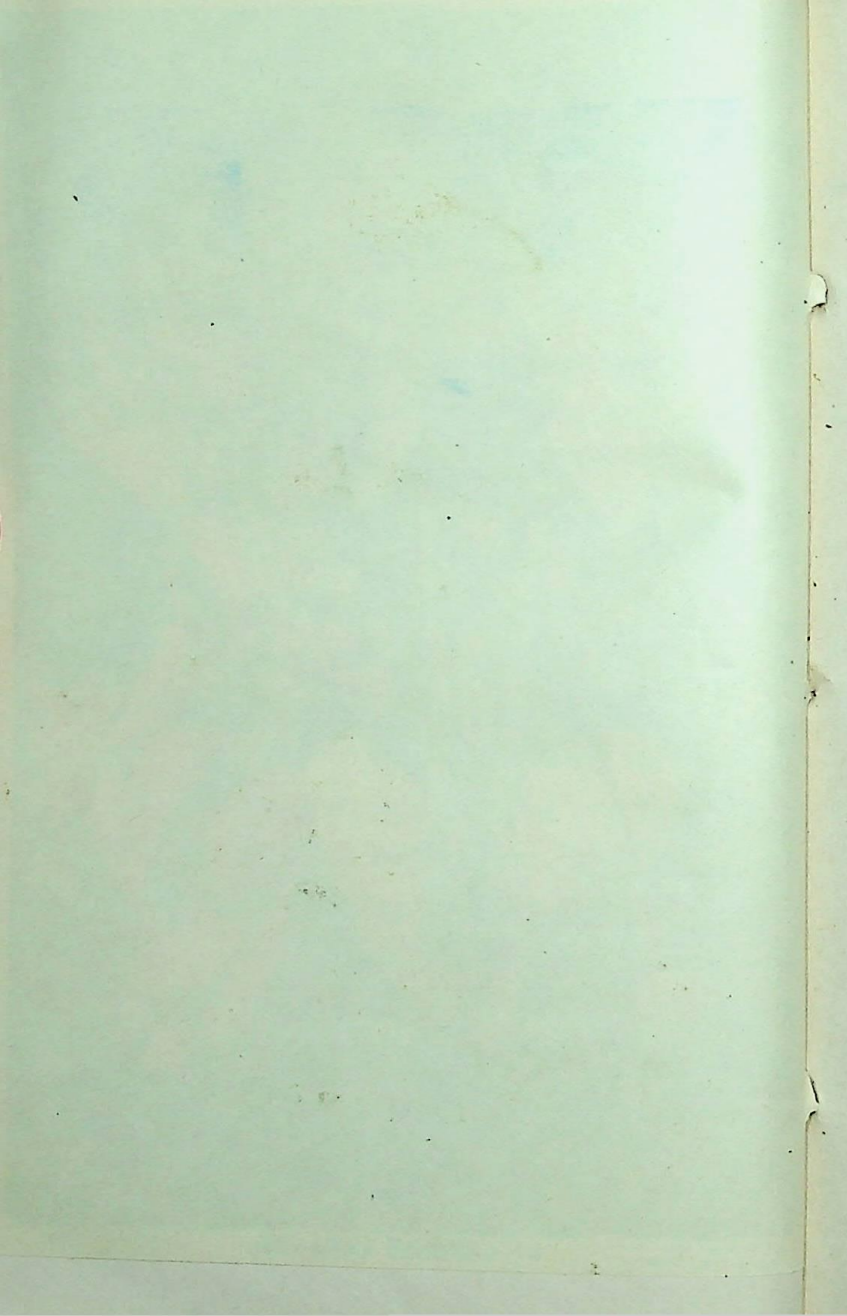
श्रीपरमात्मने नमः

अथ श्रीविष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्

—–—o—–—

यस्य स्मरणमात्रेण जन्मसंसारबन्धनात् ।
विमुच्यते नमस्तस्मै बिष्णवे प्रभविष्णवे ॥
नमः समस्तभूतानामादिभूताय भूभृते ।
अनेकरूपरूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे ॥

वैशम्पायन उवाच

श्रुत्वा धर्मानशेषेण पावनानि च सर्वशः ।
युधिष्ठिरः शान्तनवं पुनरेवाभ्यभाषत ॥१॥

युधिष्ठिर उवाच

किमेकं दैवतं लोके किं वाप्येकं परायणम् ।
स्तुवन्तःकं कमर्चन्तःप्राप्नुयुर्मानवाः शुभम् ॥
को धर्मः सर्वधर्माणां भवतः परमो मतः ।
किं जपन्मुच्यते जन्तुर्जन्मसंसारबन्धनात् ॥३॥

भीष्म उवाच

जगतप्रभुं देवदेवमनन्तं पुरुषोत्तमम् ।
स्तुवन्नामसहस्रेण पुरुषः सततोत्थितः ॥४॥

तमेव चार्चयन्नित्यं भक्त्या पुरुषमव्ययम् ।
ध्यायन्स्तुवन्नमस्यंश्च यजमानस्तमेव च ॥५॥

अनादिनिधनं विष्णुं सर्वलोकमहेश्वरम् ।
लोकाध्यक्षं स्तुवन्नित्यं सर्वदुःखातिगो भवेत् ॥६॥

ब्रह्मण्यं सर्वधर्मज्ञं लोकानां कीर्तिवर्धनम् ।
लोकनाथं महद्भूतं सर्वभूतभवोद्भवम् ॥७॥

एष मे सर्वधर्माणां धर्मोऽधिकतमो मतः ।
यद्भक्त्या पुण्डरीकाक्षं स्तवैरर्चेन्नरः सदा ॥८॥

परमं यो महत्तेजः परमं यो महत्तपः ।
परमं यो महद्ब्रह्म परमं यः परायणम् ॥९॥

पवित्राणां पवित्रं यो मङ्गलानां च मङ्गलम् ।
दैवतं देवतानां च भूतानां योऽव्ययःपिता ॥१०॥

यतः सर्वाणि भूतानि भवन्त्यादियुगागमे ।
यस्मिश्च प्रलयं यान्ति पुनरेव युगक्षये ॥११॥

तस्य लोकप्रधानस्य जगन्नाथस्य भूपते ।
विष्णोर्नामसहस्रं मे श्रृणु पापभयापहम् ॥१२॥

यानि नामानि गौणानि विख्यातानि महात्मनः ।
ऋषिभिः परिगीतानि तानि वक्ष्यामि भूतये ॥१३॥

ॐ विश्वं विष्णुर्वषट्कारो भूतभव्यभवत्प्रभुः ।
भूतकृद्भूतभृद्भावो भूतात्मा भूतभावनः ॥१४॥

पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानां परमा गतिः ।
अव्ययः पुरुषः साक्षी क्षेत्रज्ञोऽक्षर एव च ॥१५॥

योगो योगविदां नेता प्रधानपुरुषेश्वरः ।
नारसिंहवपुः श्रीमान्केशवः पुरुषोत्तमः ॥१६॥

सर्वः शर्वः शिवः स्थाणुर्भूतादिर्निधिरव्ययः ।
सम्भवो भावनो भर्ता प्रभवः प्रभुरीश्वरः ॥१७॥

स्वयम्भूः शम्भुरादित्यः पुष्कराक्षो महास्वनः ।
अनादिनिधनो धाता विधाता धातुरुत्तमः ॥१८॥

अप्रमेयो हृषीकेशः पद्मनाभोऽमरप्रभुः ।
विश्वकर्मा मनुस्त्वष्टा स्थविष्ठः स्थविरोध्रुवः ॥१९॥

अग्राह्य: शाश्वत: कृष्णो लोहिताक्ष: प्रतर्दन: ।
प्रभूतस्त्रिककुब्धाम पवित्रं मङ्गलं परम् ॥२०॥

ईशान: प्राणद: प्राणो ज्येष्ठ: श्रेष्ठ: प्रजापति: ।
हिरण्यगर्भो भूगर्भो माधवो मधुसूदन: ॥२१॥

ईश्वरो विक्रमी धन्वी मेधावी विक्रम: क्रम: ।
अनुत्तमो दुराधर्ष: कृतज्ञ: कृतिरात्मवान् ॥

सुरेश: शरणं शर्म विश्वरेता: प्रजाभव: ।
अह: संवत्सरो व्याल: प्रत्यय: सर्वदर्शन: ॥

अज: सर्वेश्वर: सिद्ध: सिद्धि: सर्वादिरच्युत: ।
वृषाकपिरमेयात्मा सर्वयोगविनि:सृत: ॥

वसुर्वसुमना: सत्य: समात्मा सम्मित: सम: ।
अमोघ: पुण्डरीकाक्षो वृषकर्मा वृषाकृति ॥

रुद्रो बहुशिरा बभ्रुर्विश्वयोनि: शुचिश्रवा: ।
अमृत: शाश्वत: स्थाणुर्वरारोहो महातपा: ॥

सर्वग: सर्वविद्भानुर्विष्वक्सेनो जनार्दन: ।
वेदो वेदविदव्यङ्गो वेदाङ्गो वेदवित्कवि: ॥

लोकाध्यक्ष: सुराध्यक्षो धर्माध्यक्ष: कृताकृत: ।
चतुरात्मा चतुर्व्यूहश्चतुर्दंष्ट्रश्चतुर्भुज: ॥२८॥

भ्राजिष्णुर्भोजनं भोक्ता सहिष्णुर्जगदादिजः ।
अनघो विजयो जेता विश्वयोनिः पुनर्वसुः ॥२९॥

उपेन्द्रो वामनः प्रांशुरमोघः शुचिरूर्जितः ।
अतीन्द्रः संग्रहः सर्गो धृतात्मा नियमो यमः ॥

वेद्यो वैद्यः सदायोगी वीरहा माधवो मधुः ।
अतीन्द्रियो महामायो महोत्साहो महाबलः ॥

महाबुद्धिर्महावीर्यो महाशक्तिर्महाद्युतिः ।
अनिर्देश्यवपुः श्रीमानमेयात्मा महाद्रिधृक् ॥

महेष्वासो महीभर्ता श्रीनिवासः सतां गतिः ।
अनिरुद्धः सुरानन्दो गोविन्दो गोविदां पतिः ॥

मरीचिर्दमनो हंसः सुपर्णो भुजगोत्तमः ।
हिरण्यनाभः सुतपाः पद्नाभः प्रजापतिः ॥

अमृत्युः सर्वदृक् सिंहः सन्धाता सन्धिमान्स्थिरः ।
अजो दुर्मर्षणः शास्ता विश्रुतात्मा सुरारिहा ॥

गुरुर्गुरुतमो धाम सत्यः सत्यपराक्रमः ।
निमिषोऽनिमिषः स्रग्वी वाचस्पतिरुदारधीः ॥

अग्रणीर्ग्रामणीः श्रीमान्न्यायो नेता समीरणः ।
सहस्रमूर्धा विश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥३७॥

आवर्तनो निवृत्तात्मा संवृत; सम्प्रमर्दन: ।
अह: संवर्तको वह्निरनिलो धरणीधर: ॥३८॥

सुप्रसाद: प्रसन्नात्मा विश्वधृग्विश्वभुग्विभु: ।
सत्कर्ता सत्कृत: साधुर्जह्नुर्नारायणो नर: ॥३९॥

असंख्येयोऽप्रमेयात्मा विशिष्ट: शिष्टकृच्छुचि: ।
सिद्धार्थ: सिद्धिसंकल्प: सिद्धिद: सिद्धिसाधन: ॥

वृषाही वृषभो विष्णुर्वृषपर्वा वृषोदर: ।
वर्धनो वर्धमानश्च विविक्त: श्रुतिसागर: ॥४१॥

सुभुजो दुर्धरो वाग्मी महेन्द्रो वसुदो वसु: ।
नैकरूपो बृहद्रूप: शिपिविष्ट: प्रकाशन: ॥४२॥

ओजस्तेजोद्युतिधर: प्रकाशात्मा प्रतापन: ।
ऋद्ध: स्पष्टाक्षरो मन्त्रश्चन्द्रांशुर्भास्करद्युति: ॥

अमृतांशूद्भवो भानु: शशबिन्दु: सुरेश्वर: ।
औषधं जगत: सेतु: सत्यधर्मपराक्रम: ॥४४॥

भूतभव्यभवन्नाथ: पवन: पावनोऽनल: ।
कामहा कामकृत्कान्त: काम: कामप्रद: प्रभु: ॥४५॥

युगादिकृद्युगावर्तो नैकमायो महाशन: ।
अदृश्योऽव्यक्तरूपश्च सहस्रजिदनन्तजित् ॥

इष्टो विशिष्ट: शिष्टेष्ट: शिखण्डी नहुषो वृष: ।
क्रोधहा क्रोधकृत्कर्ता विश्वबाहुर्महीधर: ॥४७॥

अच्युत: प्रथित: प्राण: प्राणदो वासवानुज: ।
अपां निधिरधिष्ठानमप्रमत्त: प्रतिष्ठित: ॥४८॥

स्कन्द: स्कन्दधरो धुर्यो वरदो वायुवाहन: ।
वासुदेवो बृहद्भानुरादिदेव: पुरन्दर: ॥४९॥

अशोकस्तारणस्तार: शूर: शौरिर्जनेश्वर: ।
अनुकूल: शतावर्त: पद्मी पद्मनिभेक्षण: ॥५०॥

पद्मनाभोऽरविन्दाक्ष: पद्मगर्भ: शरीरभृत् ।
महर्द्धिऋद्धो वृद्धात्मा महाक्षो गरुडध्वज: ॥

अतुल: शरभो भीम: समयज्ञो हविर्हरि: ।
सर्वलक्षणलक्षण्यो लक्ष्मीवान्समितिञ्जय: ॥

विक्षरो रोहितो मार्गो हेतुर्दामोदर: सह: ।
महीधरो महाभागो वेगवानमिताशन: ॥५३॥

उद्भव: क्षोभणो देव: श्रीगर्भ: परमेश्वर: ।
करणं कारणं कर्ता विकर्ता गहनो गुह: ॥५४॥

व्यवसायो व्यवस्थानः संस्थानः स्थानदो ध्रुवः ।
परर्द्धिः परमः स्पष्टस्तुष्टः पुष्टः शुभेक्षणः ॥५५॥

रामो विरामो विरजो मार्गो नेयो नयोऽनयः ।
वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठो धर्मो धर्मविदुत्तमः ॥

वैकुण्ठः पुरुषः प्राणः प्राणदः प्रणवः पृथुः ।
हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो व्याप्तो वायुरधोक्षजः ॥

ऋतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी परिग्रहः ।
उग्रः संवत्सरो दक्षो विश्रामो विश्वदक्षिणः ॥

विस्तारः स्थावरः स्थाणुः प्रमाणं बीजमव्ययम् ।
अर्थोऽनर्थो महाकोशो महाभोगो महाधनः ॥

अनिर्विण्णः स्थविष्ठोऽभूर्धर्मयूपो महामखः ।
नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री क्षमः क्षामः समीहनः ॥६०॥

यज्ञ इज्यो महेज्यश्च क्रतुः सत्रं सतां गतिः ।
सर्वदर्शी विमुक्तात्मा सर्वज्ञो ज्ञानमुत्तमम् ॥

सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः सुघोषः सुखदः सुहृत् ।
मनोहरो जितक्रोधो वीरबाहुर्विदारणः ॥६२॥

स्वापनः स्ववशो व्यापी नैकात्मा नैककर्मकृत् ।
वत्सरो वत्सलो वत्सी रत्नगर्भो धनेश्वरः ॥६३॥

धर्मगुब्धर्मकृद्धर्मी सदसत्क्षरमक्षरम् ।
अविज्ञाता सहस्रांशुर्विधाता कृतलक्षणः ॥६४॥

गभस्तिनेमिः सत्त्वस्थः सिंहो भूतमहेश्वरः ।
आदिदेवो महादेवो देवेशो देवभृद्गुरुः ॥६५॥

उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः ।
शरीरभूतभृद्भोक्ता कपीन्द्रो भूरिदक्षिणः ॥

सोमपोऽमृतपः सोमः पुरुजित्पुरुसत्तमः ।
विनयो जयः सत्यसन्धो दाशार्हः सात्वतां पतिः ॥

जीवो विनयिता साक्षी मुकुन्दोऽमितविक्रमः ।
अम्भोनिधिरनन्तात्मा महोदधिशयोऽन्तकः ॥

अजो महार्हः स्वाभाव्यो जितामित्रः प्रमोदनः ।
आनन्दो नन्दनो नन्दः सत्यधर्मा त्रिविक्रमः ॥

महर्षिः कपिलाचार्यः कृतज्ञो मेदिनीपतिः ।
त्रिपदस्त्रिदशाध्यक्षो महाश्रृङ्गः कृतान्तकृत् ॥

महावराहो गोविन्दः सुषेणः कनकाङ्गदी ।
गुह्यो गभीरो गहनो गुप्तश्चक्रगदाधरः ॥७१॥

वेधा: स्वाङ्गोऽजित: कृष्णो दृढ: सङ्कर्षणोऽच्युत: ।
वरुणो वारुणो वृक्ष: पुष्कराक्षो महामना: ।।७२।।

भगवान् भगहानन्दी वनमाली हलायुध: ।
आदित्यो ज्योतिरादित्य: सहिष्णुर्गतिसत्तम: ।।

सुधन्वा खण्डपरशुर्दारुणो द्रविणप्रद: ।
दिविस्पृक्सर्वदृग्व्यासो वाचस्पतिरयोनिज: ।।

त्रिसामा सामग: साम निर्वाणं भेषजं भिषक् ।
संन्यासकृच्छम: शान्तो निष्ठा शान्ति: परायण: ।।

शुभाङ्ग: शान्तिद: स्रष्टा कुमुद: कुवलेशय: ।
गोहितो गोपतिर्गोप्ता वृषभाक्षो वृषप्रिय: ।।७६।।

अनिवर्ती निवृत्तात्मा संक्षेप्ता क्षेमकृच्छिव: ।
श्रीवत्सवक्षा: श्रीवास: श्रीपति: श्रीमतां वर: ।।

श्रीद: श्रीश: श्रीनिवास: श्रीनिधि: श्रीविभावन: ।
श्रीधर: श्रीकर: श्रेय: श्रीमाँल्लोकत्रयाश्रय: ।।

स्वक्ष: स्वङ्ग: शतानन्दो नन्दिर्ज्योतिर्गणेश्वर: ।
विजितात्मा विधेयात्मा सत्कीर्तिश्छिन्नसंशय: ।।

उदीर्णः सर्वतश्चक्षुरनीशः शाश्वतस्थिरः ।
भूशयो भूषणो भूतिर्विशोकः शोकनाशनः ॥८०॥

अर्चिष्मानर्चितः कुम्भो विशुद्धात्मा विशोधनः ।
अनिरुद्धोऽप्रतिरथः प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः ॥८१॥

कालनेमिनिहा वीरः शौरिः शूरजनेश्वरः ।
त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः केशवः केशिहा हरिः ॥

कामदेवः कामपालः कामी कान्तः कृतागमः ।
अनिर्देश्यवपुर्विष्णुर्वीरोऽनन्तो धनञ्जयः ॥८३॥

ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद्ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्मविवर्धनः ।
ब्रह्मविद्ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणप्रियः ॥८४॥

महाक्रमो महाकर्मा महातेजा महोरगः ।
महाक्रतुर्महायज्वा महायज्ञो महाहविः ॥८५॥

स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोत्रं स्तुतिः स्तोता रणप्रियः ।
पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्तिरनामयः ॥८६॥

मनोजवस्तीर्थकरो वसुरेता वसुप्रदः ।
वसुप्रदो वासुदेवो वसुर्वसुमना हविः ॥८७॥

सद्गतिः सत्कृतिः सत्ता सद्भूतिः सत्परायणः ।
शूरसेनो यदुश्रेष्ठः सन्निवासः सुयामुनः ॥८८॥

भूतावासो वासुदेवः सर्वासुनिलयोऽनलः ।
दर्पहा दर्पदो दृप्तो दुर्धरोऽथापराजितः ॥८९॥

विश्वमूर्तिर्महामूर्तिर्दीप्तमूर्तिरमूर्तिमान् ।
अनेकमूर्तिरव्यक्तः शतमूर्तिः शताननः ॥९०॥

एको नैकः सवः कः किं यत्तत्पदमनुत्तमम् ।
लोकबन्धुर्लोकनाथो माधवो भक्तवत्सलः ॥९१॥

सुवर्णवर्णो हेमाङ्गो वराङ्गश्चन्दनाङ्गदी ।
वीरहा विषमः शून्यो घृताशीरचलश्चलः ॥९२॥

अमानी मानदो मान्यो लोकस्वामी त्रिलोकधृक् ।
सुमेधा मेधजो धन्यः सत्यमेधा धराधरः ॥९३॥

तेजोवृषो द्युतिधरः सर्वशस्त्रभृतां वरः ।
प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रो नैकश्रृङ्गो गदाग्रजः ॥९४॥

चतुर्मूर्तिश्चतुर्बाहुश्चतुर्व्यूहश्चतुर्गतिः ।
चतुरात्मा चतुर्भावश्चतुर्वेदविदेकपात् ॥९५॥

समावर्तोऽनिवृत्तात्मा दुर्जयो दुरतिक्रमः ।
दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरावासो दुरारिहा ॥९६॥

शुभाङ्गो लोकसारङ्गः सुतन्तुस्तन्तुवर्धनः ।
इन्द्रकर्मा महाकर्मा कृतकर्मा कृतागमः ॥९७॥

उद्भवः सुन्दरः सुन्दो रत्ननाभः सुलोचनः ।
अर्को वाजसनः श्रृङ्गी जयन्तः सर्वविज्जयी ॥९८॥

सुवर्णबिन्दुरक्षोभ्यः सर्ववागीश्वरेश्वरः ।
महाह्लदो महागर्तो महाभूतो महानिधिः ॥९९॥

कुमुदः कुन्दरः कुन्दः पर्जन्यः पावनोऽनिलः ।
अमृतांशोऽमृतवपुः सर्वज्ञः सर्वतोमुखः ॥१००॥

सुलभः सुव्रतः सिद्धः शत्रुजिच्छत्रुतापनः ।
न्यग्रोधोदुम्बरोऽश्वत्थश्चाणूरान्ध्रनिषूदन ॥

सहस्रार्चिः सप्तजिह्वः सप्तैधाः सप्तवाहनः ।
अमूर्तिरनघोऽचिन्त्यो भयकृद्भयनाशनः ॥१०२॥

अणुर्बृहत्कृशः स्थूलो गुणभृन्निर्गुणो महान् ।
अधृतः स्वधृतः स्वास्यः प्राग्वंशो वंशवर्द्धनः ॥

भारभृत्कथितो योगी योगीशः सर्वकामदः ।
आश्रमः श्रमणः क्षामः सुपर्णो वायुवाहनः ॥

धनुर्धरो धनुर्वेदो दण्डो दमयिता दमः ।
अपराजितः सर्वसहो नियन्ता नियमो यमः ॥

सत्त्ववान्सात्त्विकः सत्यः सत्यधर्मपरायणः ।
अभिप्रायः प्रियार्होऽर्हः प्रियकृत्प्रीतिवर्धनः ॥

विहायसगतिर्ज्योतिः सुरुचिर्हुतभुग्विभुः ।
रविर्विरोचनः सूर्यः सविता रविलोचनः ॥१०७॥

अनन्तो हुतभुग्भोक्ता सुखदो नैकजोऽग्रजः ।
अनिर्विण्णः सदामर्षी लोकाधिष्ठानमद्भुतः ॥

सनात्सनातनतमः कपिलः कपिरव्ययः ।
स्वस्तिदः स्वस्तिकृत्स्वस्ति स्वस्तिभुक्स्वस्तिदक्षिणः ॥

अरौद्रः कुण्डली चक्री विक्रम्यूर्जितशासनः ।
शब्दातिगः शब्दसह शिशिरः शर्वरीकरः ॥

अक्रूरः पेशलो दक्षो दक्षिणः क्षमिणां वरः ।
विद्वत्तमो वीतभयः पुण्यश्रवणकीर्तनः ॥१११॥

उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्यो दुःस्वप्ननाशनः ।
वीरहा रक्षणः सन्तो जीवनः पर्यवस्थितः ॥११२॥

अनन्तरूपोऽनन्तश्रीर्जितमन्युर्भयापहः ।
चतुरस्रो गभीरात्मा विदिशो व्यादिशो दिशः ॥

अनादिर्भूर्भुवो लक्ष्मीः सुवीरो रुचिराङ्गदः ।
जननो जनजन्मादिर्भीमो भीमपराक्रमः ॥११४॥

आधारनिलयो धाता पुष्पहासः प्रजागरः ।
ऊर्ध्वगः सत्पथाचारः प्राणदः प्रणवः पणः ॥

प्रमाणं प्राणनिलयः प्राणभृत्प्राणजीवनः ।
तत्त्वं तत्त्वविदेकात्मा जन्ममृत्युजरातिगः ॥

भूर्भुवः स्वस्तरुस्तारः सविता प्रपितामहः ।
यज्ञो यज्ञपतिर्यज्वा यज्ञाङ्गो यज्ञवाहनः ॥११७॥

यज्ञभृद्यज्ञकृद्यज्ञी यज्ञभुग्यज्ञसाधनः ।
यज्ञान्तकृद्यज्ञगुह्यमन्नमन्नाद एव च ॥११८॥

आत्मयोनिः स्वयंजातो वैखानः सामगायनः ।
देवकीनन्दनः स्रष्टा क्षितीशः पापनाशनः ॥

शङ्खभृन्नन्दकी चक्री शार्ङ्गधन्वा गदाधरः ।
रथाङ्गपाणिरक्षोभ्यः सर्वप्रहरणायुधः ॥१२०॥

॥ सर्वप्रहरणायुध ॐ नम इति ॥

इतीदं कीर्तनीयस्य केशवस्य महात्मनः ।
नाम्नां सहस्रं दिव्यानामशेषेण प्रकीर्तितम् ॥

य इदं श्रृणुयान्नित्यं यश्चापि परिकीर्तयेत् ।
नाशुभं प्राप्नुयात्किञ्चित्सोऽमुत्रेह च मानवः ॥

वेदान्तगो ब्राह्मणः स्यात्क्षत्रियो विजयी भवेत् ।
वैश्यो धनसमृद्धः स्याच्छूद्रः सुखमवाप्नुयात् ॥

धर्मार्थी प्राप्नुयाद्धर्ममर्थार्थी चार्थमाप्नुयात् ।
कामानवाप्नुयात्कामी प्रजार्थी प्राप्नुयात्प्रजाम् ॥

भक्तिमान्यः सदोत्थाय शुचिस्तद्गतमानसः ।
सहस्रं वासुदेवस्य नाम्नामेतत्प्रकीर्तयेत् ॥१२५॥

यशः प्राप्नोति विपुलं ज्ञातिप्राधान्यमेव च ।
अचलां श्रियमाप्नोति श्रेयः प्राप्नोत्यनुत्तमम् ॥

न भयं क्वचिदाप्नोति वीर्यं तेजश्च विन्दति ।
भवत्यरोगो द्युतिमान्बलरूपगुणान्वितः ॥१२७॥

रोगार्तो मुच्यते रोगाद्बद्धो मुच्येत बन्धनात् ।
भयान्मुच्ये भीतस्तु मुच्येतापन्न आपदः ॥

दुर्गाण्यतितरत्याशु पुरुषः पुरुषोत्तमम् ।
स्तुवन्नामसहस्रेण नित्यं भक्तिसमन्वितः ॥

वासुदेवाश्रयो मर्त्यो वासुदेवपरायणः ।
सर्वपापविशुद्धात्मा याति ब्रह्म सनातनम् ॥

न वासुदेवभक्तानामशुभं विद्यते क्वचित् ।
जन्ममृत्युजराव्याधिभयं नैवोपजायते ॥१३१॥

इमं स्तवमधीयानः श्रद्धाभक्तिसमन्वितः ।
युज्येतात्मसुखक्षान्ति श्रीधृतिस्मृतिकीर्तिभिः ॥

न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः ।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां पुरुषोत्तमे ॥

द्यौः सचन्द्रार्कनक्षत्रा खं दिशो भूर्महोदधिः ।
वासुदेवस्य वीर्येण विधृतानि महात्मनः ॥

ससुरासुरगन्धर्वं सयक्षोरगराक्षसम् ।
जगद्वशे वर्ततेदं कृष्णस्य सचराचरम् ॥१३५॥

इन्द्रियाणि मनो बुद्धिः सत्त्वं तेजो बलं धृतिः ।
वासुदेवात्मकान्याहुः क्षेत्रं क्षेत्रज्ञ एव च ।

सर्वागमानामाचारः प्रथमं परिकल्पते ।
आचारप्रभवो धर्मो धर्मस्य प्रभुरच्युतः ॥१३७॥

ऋषयः पितरो देवा महाभूतानि धातवः ।
जङ्गमाजङ्गमं चेदं जगन्नारायणोद्भवम् ॥

योगो ज्ञानं तथा सांख्यं विद्याः शिल्पादि कर्म च ।
वेदाः शास्त्राणि विज्ञानमेतत्सर्वं जनार्दनात् ॥

एको विष्णुर्महद्भूतं पृथग्भूतान्यनेकशः ।
त्रींल्लोकान्व्याप्य भूतात्मा भुङ्क्ते विश्वभुगव्ययः ।

इमं स्तवं भगवतो विष्णोर्व्यासेन कीर्तितम् ।
पठेद्य इच्छेत्पुरुषः श्रेयः प्राप्तुं सुखानि च ॥

विश्वेश्वरमजं देवं जगतः प्रभवाप्ययम् ।
भजन्ति ये पुष्कराक्षं न ते यान्ति पराभवम् ॥१४२॥

❀—❀

ॐ तत्सदिति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां
वैयासिक्यामानुशासनिके पर्वणि भीष्मयुधिष्ठिर-
संवादे श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

❀—❀

हरिः ॐ तत्सत् हरिः ॐ तत्सत् हरिः ॐ तत्सत्

RIJBASI & SONS
AZA STREET BOMBAY-3.

37 KRISHNA GOPAL

S. S. BRIJBASI & SONS
32/1, FATEHPURI DELHI-6.
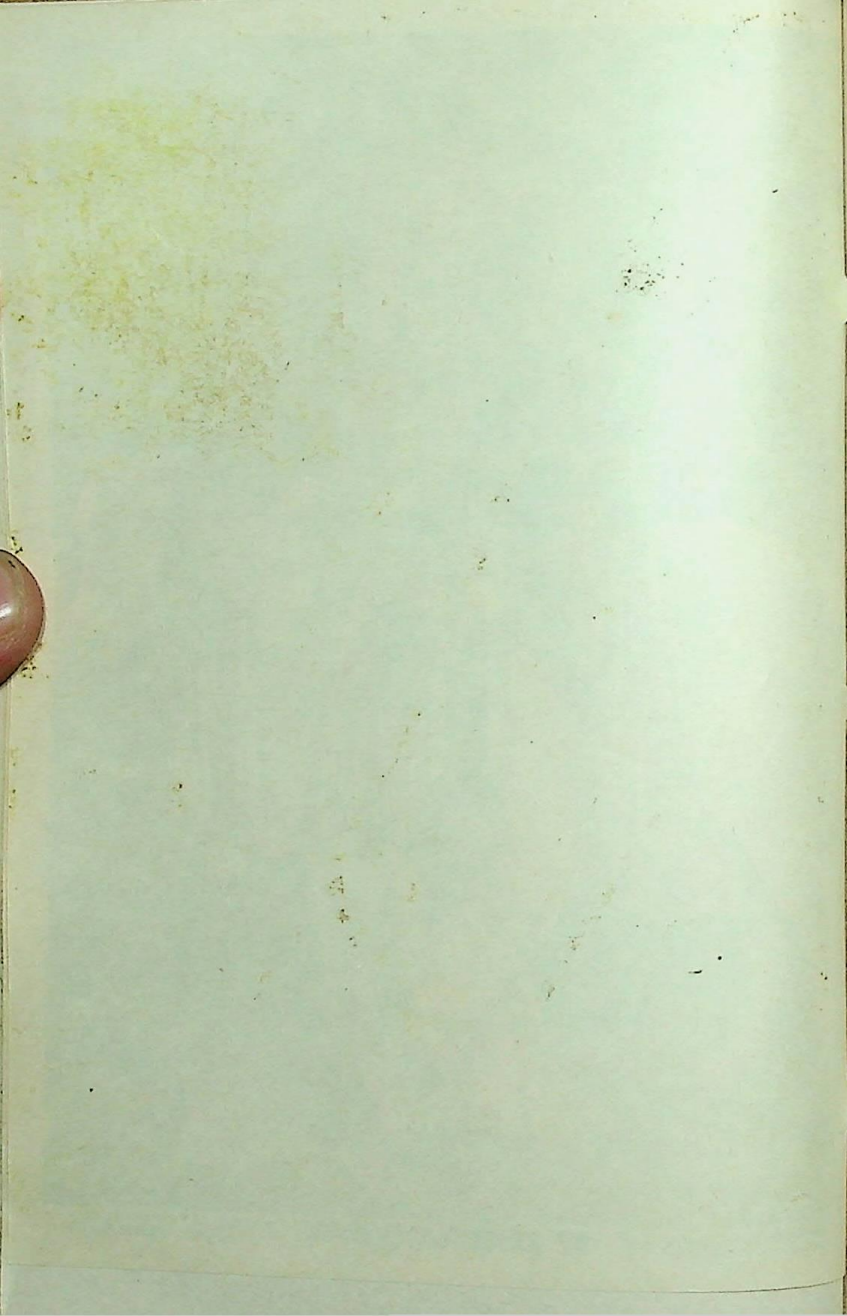
ॐ श्रीपरमात्मने नमः

श्रीमद्भगवद्गीता

अथ द्वितीयोऽध्यायः

संजय उवाच

तं तथा कृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम् ।
विषीदन्तमिदं वाक्यमुवाच मधुसूदनः ॥ १ ॥

श्रीभगवानुवाच

कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम् ।
अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन ॥ २ ॥

क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते ।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप ॥ ३ ॥

अर्जुन उवाच

कथं भीष्ममहं संख्ये द्रोणं च मधुसूदन ।
इषुभिः प्रति योत्स्यामि पूजार्हावरिसूदन ॥ ४ ॥

गुरूनहत्वा हि महानुभावान्
श्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके ।
हत्वार्थकामांस्तु गुरूनिहैव
भुञ्जीय भोगान्रुधिरप्रदिग्धान् ॥

न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो
यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः ।

यानेव हत्वा न जिजीविषाम—
स्तेऽवस्थिताः प्रमुखे धार्तराष्ट्राः ॥

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः
पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः ।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् ॥ ७ ॥

न हि प्रपश्यामि ममापनुद्याद्
यच्छोकमुच्छोषणमिन्द्रियाणाम् ।
अवाप्य भूमावसपत्नमृद्धं
राज्यं सुराणामपि चाधिपत्यम् ॥ ८ ॥

संजय उवाच

एवमुक्त्वा हृषीकेशं गुडाकेशः परंतप ।
न योत्स्य इति गोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह
तमुवाच हृषीकेशः प्रहसन्निव भारत ।
सेनयोरुभयोर्मध्ये विषीदन्तमिदं वचः ॥ १० ॥

श्रीभगवानुवाच

अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे ।
गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः ॥ ११ ॥

न त्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमे जनाधिपा: ।
 न चैव न भविष्याम: सर्वे वयमत: परम् ॥ १२ ॥

देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा ।
 तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति ॥ १३ ॥

मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदु:खदा: ।
 आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत

यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ ।
 समदु:खसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते ॥ १५ ॥

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सत: ।
 उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभि: ॥ १६ ॥

अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम् ।
 विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति ॥ १७ ॥

अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ता: शरीरिण: ।
 अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत ॥ १८ ॥

य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम् ।
 उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते ॥ १९ ॥

न जायते म्रियते वा कदाचि—
 न्नायं भूत्वा भविता वा न भूय: ।
अजो नित्य: शाश्वतोऽयं पुराणो
 न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥ २० ॥

वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम् ।

कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हन्ति कम् ॥ २१ ॥

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय

नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।

तथा शरीराणि विहाय जीर्णा—

न्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥ २२ ॥

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।

न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥ २३ ॥

अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च ।

नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः ॥ २४ ॥

अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते ।

तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि ॥ २५ ॥

अथ चैनं नित्यजातं नित्यं वा मन्यसे मृतम् ।

तथापि त्वं महाबाहो नैवं शोचितुमर्हसि ॥ २६ ॥

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च ।

तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ॥ २७ ॥

अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत ।

अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना ॥ २८ ॥

आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेन—

माश्चर्यवद्वदति तथैव चान्य: ।

आश्चर्यवच्चैनमन्य: श्रृणोति

श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित् ॥ २९ ॥

देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत ।

तस्मात्सर्वाणि भूतानि न त्वं शोचितुमर्हसि ॥ ३० ॥

स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि ।

धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते ।.

यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम् ।

सुखिन: क्षत्रिया: पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम् ॥ ३२ ॥

अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं संग्रामं न करिष्यसि ।

तत: स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि ॥

अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्तितेऽव्ययाम्

संभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते ॥ ३४ ॥

भयाद्रणादुपरतं मंस्यन्ते त्वां महारथा: ।

येषां च त्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि लाघवम् ॥

अवाच्यवादांश्च बहून्वदिष्यन्ति तवाहिता: ।

निन्दन्तस्तव सामर्थ्यं ततो दुःखतरं नु किम् ॥

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्

तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः ।। ३७ ।।

सुखदु:खे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ ।

ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि ।। ३८ ।।

एषा तेऽभिहिता सांख्ये बुद्धिर्योगे त्विमां श्रृणु ।

बुद्धया युक्तो यया पार्थ कर्मबन्धं प्रहास्यसि ।।

नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते ।

स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात् ।। ४० ।।

व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन ।

बहुशाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम् ।।

यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चित: ।

वेदवादरता: पार्थ नान्यदस्तीतिवादिन: ।। ४२ ।।

कामात्मान: स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम् ।

क्रियाविशेषबहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति ।। ४३ ।।

भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहृतचेतसाम् ।

व्यवसायात्मिका बुद्धि: समाधौ न विधीयते ।।

त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन ।

निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान् ।।

यावानर्थ उदपाने सर्वत: संप्लुतोदके ।

तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानत: ।। ४६ ।।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥ ४७ ॥

योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनंजय ।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते

दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनंजय ।
बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः ॥ ४९ ॥

बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते ।
तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम् ॥ ५० ॥

कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः
जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम् ॥ ५१ ॥

यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति ।
तदा गन्तासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च ॥ ५२ ॥

श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला ।
समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यसि ॥ ५३ ॥

अर्जुन उवाच

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव ।
स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम् ॥ ५४ ॥

श्रीभगवानुवाच

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान् ॥
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥ ५५ ॥

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः ।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ॥ ५६ ॥

यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम् ।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ५७ ॥

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ५८ ॥

विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः ।
रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ॥ ५९ ॥

यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः ।
इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः ॥ ६० ॥

तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः ।
वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ६१ ॥

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते ।
सङ्गात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥ ६२ ॥

क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥ ६३ ॥

रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन् ।
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति ॥ ६४ ॥

प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते ।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते ॥ ६५ ॥

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना ।
न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम् ॥ ६६ ॥

इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनु विधीयते ।
तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि ॥ ६७ ॥

तस्माद्यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।। ६८ ।।

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी ।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ।। ६९ ।।

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं
समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत् ।

तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे
स शान्तिमाप्नोति न कामकामी ।। ७० ।।

विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः ।
निर्ममो निरहंकारः स शान्तिमधिगच्छति ।। ७१ ।।

एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति ।
स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति ।। ७२ ।।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे सांख्ययोगो
नाम द्वितीयोऽध्यायः ।। २ ।।

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ पञ्चदशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम् ।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ॥

अधश्चोर्ध्वं प्रसृतास्तस्य शाखा
गुणप्रवृद्धा विषयप्रवालाः ।

अधश्च मूलान्यनुसंततानि
कर्मानुबन्धीनि मनुष्यलोके ॥ २ ॥

न रूपमस्येह तथोपलभ्यते
नान्तो न चादिर्न च संप्रतिष्ठा ।

अश्वत्थमेनं सुविरूढमूल—
मसङ्गशस्त्रेण दृढेन छित्त्वा ॥ ३ ॥

ततः पदं तत्परिमार्गितव्यं
यस्मिन्गता न निवर्तन्ति भूयः ।

तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये

यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी ॥ ४ ॥

निर्मानमोहा जितसङ्गदोषा

अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः ।

द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसंज्ञै—

र्गच्छन्त्यमूढाः पदमव्ययं तत् ॥ ५ ॥

न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः

यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ॥ ६ ॥

ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः ।

मनःषष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति ॥ ७ ॥

शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः ।

गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात् ॥

श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च रसनं घ्राणमेव च ।

अधिष्ठाय मनश्चायं विषयानुपसेवते ॥ ९ ॥

उत्क्रामन्तं स्थितं वापि भुञ्जानं वा गुणान्वितम् ।

विमूढा नानुपश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः ॥ १० ॥

यतन्तो योगिनश्चैनं पश्यन्त्यात्मन्यवस्थितम् ।
यतन्तोऽप्यकृतात्मानो नैनं पश्यन्त्यचेतसः ॥

यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम् ।
यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम् ॥

गामाविश्य च भूतानि धारयाम्यहमोजसा ।
पुष्णामि चौषधीः सर्वाः सोमो भूत्वा रसात्मकः ॥

अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः ।
प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम् ॥

सर्वस्य चाहं हृदि संनिविष्टो
मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च ।

वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो
वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम् ॥ १५ ॥

द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च ।
क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते ॥

उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः ।
यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः ॥

यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः ।
अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः ॥

यो मामेवमसंमूढो जानाति पुरुषोत्तमम् ।
स सर्वविद्भजति मां सर्वभावेन भारत ॥ १९ ॥

इति गुह्यतमं शास्त्रमिदमुक्तं मयानघ ।
एतद्बुद्ध्वा बुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्च भारत ॥ २० ॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे पुरुषोत्तमयोगो
नाम पञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

आदित्य हृदय

ॐ ततो युद्ध परिश्रान्तं समरे चिन्तया स्थितम्
रावणं च अग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम् ॥

देव दैत्य समागम्य द्रष्टुमभ्यागतो रणम्
उपगम्याऽब्रवीद्रामं अगस्त्यो भगवन ऋषि: ॥

राम राम महाभागो श्रणु गुह्यं सनातनम्
येन सर्वानरीन वत्स समरे विजयिष्यसि ॥

आदित्य हृदयं पुण्यं सर्वशत्रु विनाशनम्
जयावहं जपेन्नित्यं अक्षयं परमं शिवम् ॥

सर्व मङ्गल माङ्गल्यं सर्वपाप प्रणाशनम्
चिन्ताशोक प्रशमनं आयुर्वर्धन मुत्तमम् ॥

रश्मिमन्तं समुद्यन्तं देवासुर नमस्कृतम्
पूजयस्व विवस्वान्तं भाष्करं भुवनेश्वरम् ॥

सर्व देवात्मक ह्येष: तेजस्वी रश्मि भावन:
एष देवासुर गणान् लोकान् पाति गभस्तिभि: ॥

एष ब्रह्मा च विष्णु च शिव: स्कन्द: प्रजापति:
महेन्द्रो धनद: कोलो यमस्सोमो ह्यपापति ॥

पितरो वसवस्साध्या ह्यश्विनो मरुतो मनु:
वायुर्वह्नि: प्रजाप्राण: ऋतु कर्ता प्रभाकर: ॥

आदित्य सविता सूर्यः खग पूषा गभस्तिमान
सुवर्ण सदृशो भानु: स्वर्णरेता: दिवाकर: ।।

हरिदस्व: सहस्रार्चि सप्त सप्तिर्मरिचिमान्
तिमिरोन्मथन: शम्भु: त्वष्टा मार्तण्ड अंशुमान् ।

हिरण्यगर्भः शिशिर: तपनो भास्करो रवि:
अग्नि गर्भो आदिते: पुत्र: शंख: शिशिर नाशन: ।।

व्योम नाथस्तमो भेदो ऋगयजुस्साम पारग:
घनवृस्टि रपां मित्र: विन्ध्यविथी प्लवंगम: ।।

आतपो मण्डली मृत्यु: पिंगलस्सर्वतापन:
कवि विश्वो महातेजा: रक्त सर्व भवोदभव: ।।

नक्षत्र ग्रहताराणां अधिपो विश्व भावन:
तेजषामपि तेजस्वी द्वादशात्मन्नमोस्तुते ।।

नम: पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नम:
ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधि पतये नम: ।।

जयाय जय भद्राय हर्यस्वाय नमोनम:
नमोनम सहस्रांशो आदित्याय नमोनम: ।।

नम उग्राय वीराय सारंगाय नमोनम:
नम पद्मप्रवोधाय प्रचण्डाय नमोनम:
ब्रह्मेशानच्युतेशाय सूर्यायादित्य वर्चसे

भास्वते सर्व भक्षाय रौद्राय वपुषे नमः ॥

नमोऽघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नाय मितात्मने
कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः ॥

तप्त चर्मीकरभाय वह्न्ये विश्वकर्मणे
नमस्तेमोभिनिघ्नाय गणये लोक साक्षिणे ।

नाशयत्येष वै भूतं तदेव सृजति प्रभुः
पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्तिभिः ॥

एष सप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्टितः
एष चैवाग्नि होत्रश्च फलं चैवाग्नि होत्रिणाम ॥

वेदैश्च क्रतवश्चैव क्रतूनां फलमेव च
यानि कृत्यानि लोकेषु सर्व एव रविः प्रभुः ॥

एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कान्तारेषु भयेषु च
कीर्तयन पुरुषः कश्चित नावसीदति राघव ॥

पूजयस्वैन मेकाग्रः देवदेव जगत्पतिम्
एतत्त्रिगुणितं जप्त्वा युद्धेषु विजयिस्यसि ॥

अस्विन्क्षणे महावाहो रावणं त्वं वधिस्यसि
एवमुक्त्वा तदागस्त्यो जगाम च यथागताम् ॥

एतद्छ्रुत्वा महातेजा नष्ट शोकऽभववत् तदा ।
धारयामास सुप्रीयः राघवः प्रयतात्मवान् ॥

आदित्य प्रेक्ष जप्त्वा तु परं हर्ष अवाप्तवान्

त्रिराचम्य शुचिर्भूत्वा धनुरादाय वीर्यवान् ।।

रावणं प्रेक्ष दृष्टोत्मा युद्धाय समुपागमत्

सर्व यत्नेन महत्ता वधेतस्य धृतोऽभवत् ।।

अथ रविः अवदद्री निरीक्ष्य रामं मुदित मनः परम प्रहृस्यमाणः ।
निशिचर पति संक्षयं विदित्वा सुरगणमध्य गतो वचौस्त्वरेति ।

—ः ॐ नमः इति :—

तुलसी

तथा कुरु पवित्रांङ्गी कलौमल विनाशिनी ।

मन्त्रेणानेव यः कुर्याद्विचित्य तुलसी दलम् ।।

पूजनं वासुदेवस्य लक्षकोटि गुणं भवेत ।

प्रभावं तव देवेशि गायन्ति सुर सत्तमा ।।

श्री दुर्गा

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवी चराचरस्य ।।

DURGA JI

JAIN PICTURE PUBLICATION
5745, Jogewara, Rai Sarak,
DELHI - 110 006.

ॐ

॥ श्री दुर्गायै नमः ॥

श्री दुर्गाष्टोत्तर शतनामस्तोत्रम्

ईश्वर उवाच

शतनाम प्रवक्ष्यामि श्रृणुष्व कमलानने ।
यस्य प्रसादमात्रेण दुर्गा प्रीता भवेत् सती ॥ १ ॥

ॐ सती साध्वी भवप्रीता भवानी भवमोचनी ।
आर्या दुर्गा जया चाद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणी ॥ २ ॥

पिनाकधारिणी चित्रा चण्डघण्टा महातपाः ।
मनो बुद्धिरहंकारा चित्तरूपा चिता चितिः ॥ ३ ॥

सर्वमन्त्रमयी सत्ता सत्यानन्दस्वरूपिणी ।
अनन्ता भाविनी भाव्या भव्याभव्या सदागतिः ॥ ४ ॥

शाम्भवी देवमाता च चिन्ता रत्नप्रिया सदा ।
सर्वविद्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी ॥ ५ ॥

अपर्णानेकवर्णा च पाटला पाटलावती ।
पट्टाम्बरपरीधाना कलमञ्जीररञ्जिनी ॥ ६ ॥

अमेयविक्रमा क्रूरा सुन्दरी सुरसुन्दरी ।
वनदुर्गा च मातङ्गी मतङ्गमुनिपूजिता ॥ ७ ॥

ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कौमारी वैष्णवी तथा ।

चामुण्डा चैव वाराही लक्ष्मीश्च पुरुषाकृतिः ॥ ८ ॥

विमलोत्कर्षिणी ज्ञाना क्रिया नित्या च बुद्धिदा ।

बहुला बहुलप्रेमा सर्ववाहनवाहना ॥ ९ ॥

निशुम्भशुम्भहननी महिषासुरमर्दिनी ।

मधुकैटभहन्त्री च चण्डमुण्डविनाशिनी ॥ १० ॥

सर्वासुरविनाशा च सर्वदानवघातिनी ।

सर्वशास्त्रमयी सत्या सर्वास्त्रधारिणी तथा ॥ ११ ॥

अनेकशस्त्रहस्ता च अनेकास्त्रस्य धारिणी ।

कुमारी चैककन्या च कैशोरी युवती यतिः ॥ १२ ॥

अप्रौढा चैव प्रौढा च वृद्धमाता बलप्रदा ।

महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला ॥ १३ ॥

अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी ।

नारायणी भद्रकाली विष्णुमाया जलोदरी ॥ १४ ॥

शिवदूती कराली च अनन्ता परमेश्वरी ।

कात्यायनी च सावित्री प्रत्यक्षा ब्रह्मवादिनी ॥ १५ ॥

य इदं प्रपठेन्नित्यं दुर्गानामशताष्टकम् ।

नासाध्यं विद्यते देवि त्रिषु लोकेषु पार्वति ॥ १६ ॥

धनं धान्यं सुतं जायां हयं हस्तिनमेव च ।

चतुर्वर्गं तथा चान्ते लभेन्मुक्तिं च शाश्वतीम् ॥ १७ ॥

कुमारीं पूजयित्वा तु ध्यात्वा देवीं सुरेश्वरीम् ।

पूजयेत् परया भक्तया पठेन्नामशताष्टकम् ॥ १८ ॥

तस्य सिद्धिर्भवेद् देवि सर्वैः सुरवरैरपि ।

राजानो दासतां यान्ति राज्यश्रियमवाप्नुयात् ॥ १९ ॥

गोरोचनालक्तककुङ्कुमेन

सिन्दूरकर्पूरमधुत्रयेण ।

विलिख्य यन्त्रं विधिना विधिज्ञो

भवेत् सदा धारयते पुरारिः ॥ २० ॥

भौमावास्यानिशामग्रे चन्द्रे शतभिषां गते ।

विलिख्य प्रपठेन् स्तोत्रं स भवेत् संपदां पदम् ॥ २१ ॥

इति श्रीविश्वसारतन्त्रे दुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम् ।

अथ देव्याः कवचम्

ॐ अस्य श्रीचण्डीकवचस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, चामुण्डा देवता, अङ्गन्यासोक्तमातरो बीजम्, दिग्बन्धदेवतास्तत्त्वम्, श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थे सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः ।

ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

मार्कण्डेय उवाच

ॐ यद्गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम् ।

यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह ॥ १ ॥

ब्रह्मोवाच

अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्वभूतोपकारकम् ।
देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने ॥ २ ॥

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी ।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ॥ ३ ॥

पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च ।
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्ठमम् ॥ ४ ॥

नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः ।
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना ॥ ५ ॥

अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे ।
विषमे दुर्गमे चैव भयार्त्ताः शरणं गताः ॥ ६ ॥

न तेषां जायते किंचिदशुभ रणसंकटे ।
नापदं तस्य पश्यामि शोकदुःखभयं न हि ॥ ७ ॥

यैस्तु भक्तया स्मृता नूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते ।
ये त्वां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान्न संशयः ॥ ८ ॥

प्रेत संस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना ।
ऐन्द्री गजसमारूढा वैष्णवी गरुडासना । ९ ॥

माहेश्वरी वृषारूढा कौमारी शिखिवाहना ।
लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्हस्ता हरिप्रिया ॥ १० ॥

श्वेतरूपधरा देवी ईश्वरी वृषवाहना ।
ब्राह्मी हंससमारूढा सर्वाभरणभूषिता ॥ ११ ॥

इत्येता मातरः सर्वाः सर्वयोगसमन्विताः ।
नानाभरणशोभाढ्या नानारत्नोपशोभिताः ॥ १२ ॥

दृश्यन्ते रथमारूढा देव्य: क्रोधसमाकुला: ।
शङ्खं चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसलायुधम् ।। १३ ।।
खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च ।
कुन्तायुधं त्रिशूलं च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम् ।। १४ ।।
दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयाय च ।
धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां च हिताय वै ।। १५ ।।
नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे ।
महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि ।। १६ ।।
त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्द्धिनि ।
प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्निदेवता ।। १७ ।।
दक्षिणेऽवतु वाराही नैर्ऋत्यां खड्गधारिणी ।
प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यां मृगवाहिनी ।। १८ ।।
उदीच्यां पातु कौमारी ऐशान्यां शूलधारिणी ।
ऊर्ध्वं ब्रह्माणि मे रक्षेदधस्ताद् वैष्णवी तथा ।। १९ ।।
एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना ।
जया मे चाग्रत: पातु विजया पातु पृष्ठत: । २० ।।
अजिता वामपार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता ।
शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता ।। २१ ।।
मालाधरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद् यशस्विनी ।
त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके ।। २२ ।।
शङ्खिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी ।
कपोलौ कालिका रक्षेत्कर्णमूले तु शाङ्करी ।। २३ ।।

नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका ।
अधरे चामृतकला जिह्वायां च सरस्वती ॥ २४ ॥
दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठदेशे तु चण्डिका ।
घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके ॥ २५ ॥
कामाक्षी चिबुकं रक्षेद् वाच मे सर्वमङ्गला ।
ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी ॥ २६ ॥
नीलग्रीवा बहिःकण्ठे नलिकां नलकूबरी ।
स्कन्धयोः खङ्गिनी रक्षेद् बाहू मे वज्रधारिणी ॥ २७ ॥
हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चाङ्गुलीषु च ।
नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत्कुक्षौ रक्षेत्कुलेश्वरी ॥ २८ ॥
स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनःशोकविनाशिनी ।
हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी ॥ २९ ॥
नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा ।
पूतना कामिका मेढ्रं गुदे महिषवाहिनी ॥ ३० ॥
कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी ।
जङ्घे महाबला रक्षेत्सर्वकामप्रदायिनी ॥ ३१ ॥
गुल्फयोर्नारसिंही च पादपृष्ठे तु तैजसी ।
पादाङ्गुलीषु श्री रक्षेत्पादाधस्तलवासिनी ॥ ३२ ॥
नखान् दंष्ट्राकराली च केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी ।
रोमकूपेषु कौबेरी त्वचं वागीश्वरी तथा ॥ ३३ ॥
रक्तमज्जावसामांसान्यस्थिमेदांसि पार्वती ।
अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी ॥ ३४ ॥

पद्मावती पद्मकोशे कफे चूडामणिस्तथा।
ज्वालामुखी नखज्वालाभभेद्या सर्वसन्धिषु ॥ ३५ ॥

शुक्रं ब्रह्माणि मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा।
अहंकारं मनो बुद्धिं रक्षेन्मे धर्मधारिणी ॥ ३६ ॥

प्राणापानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम्।
वज्रहस्ता च मे रक्षेत्प्राणं कल्याणशोभना ॥ ३७ ॥

रसे रूपे च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी।
सत्त्व रजस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा ॥ ३८ ॥

आयू रक्षतु वाराही धर्मं रक्षतु वैष्णवी।
यशः कीर्तिं च लक्ष्मीं च धनं विद्यां च चक्रिणी ॥ ३९ ॥

गोत्रमिन्द्राणि मे रक्षेत्पशून्मे रक्ष चण्डिके।
पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीर्भार्यां रक्षतु भैरवी ॥ ४० ॥

पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमकरी तथा।
राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतः स्थिता ॥ ४१ ॥

रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु।
तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयन्ती पापनाशिनी ॥ ४२ ॥

पदमेकं न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः।
कवचेनावृतो नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति ॥ ४३ ॥

तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सार्वकामिकः।
यं यं चिन्तयते कामं त तं प्राप्नोति निश्चितम्।
परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान् ॥ ४४ ॥

निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्वपराजितः ।

त्रैलोक्ये तु भवेत्पूज्यः कवचेनावृतः पुमान् ।। ४५ ।।

इदं तु देव्याः कवच देवानामपि दुर्लभम् ।

यः पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः ।। ४६ ।।

दैवी कला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः ।

जीवेद् वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः ।। ४७ ।।

नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूताविस्फोटकादयः ।

स्थावरं जङ्गमं चैव कृत्रिमं चापि यद्विषम् ।। ४८ ।।

अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्रयन्त्राणि भूतले ।

भूचराः खेचराश्चैव जलजाश्चोपदेशिकाः ।। ४९ ।।

सहजा कुलजा माला डाकिनी शाकिनी तथा ।

अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः ।। ५० ।।

ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः ।

ब्रह्मराक्षसवेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः ।। ५१ ।।

नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते ।

मानोन्नतिर्भवेद् राज्ञस्तेजोवृद्धिकरं परम् ।। ५२ ।।

यशसा वर्द्धते सोऽपि कीर्तिमण्डितभूतले ।

जपेत्सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचं पुरा ।। ५३ ।।

यावद्भूमण्डलं धत्ते सशैलवनकाननम् ।
तावत्तिष्ठति मेदिन्यां सन्ततिः पुत्रपौत्रिकी ॥ ५४ ॥
देहान्ते परमं स्थान यत्सुरैरपि दुर्लभम् ।
प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामायाप्रसादतः ॥ ५५ ॥
लभते परमं रूपं शिवेन सह मोदते ॥ ॐ ॥ ५६ ॥

इति देव्याः कवचं सम्पूर्णम

भगवत्योस्तुतिः

प्रातः स्मरामि शरदिन्दुकरोज्ज्वलाभां
मद्रत्नवन्मकरकुण्डलहारभूषाम् ।
दिव्यायुधोर्जितसुनीलसहस्रहस्तां
रक्तोत्पलाभचरणां भवती परेशाम् ॥
प्रातर्नमामि महिषासुरचण्डमुण्ड-
शुम्भासुरप्रमुखदैत्यविनाशदक्षाम् ।
ब्रह्मेन्द्ररुद्रमुनिमोहनशीललीलां
चण्डीं समस्तसुरमूर्तिमनेकरूपाम् ॥
प्रातर्भजामि भजतामभिलाषदात्रीं
धात्रीं समस्तजगतां दुरितापहन्त्रीम् ।
संसारबन्धनविमोचनहेतुभूतां
मायां परां समधिगम्य परस्य विष्णोः ॥

अथार्गलास्तोत्रम्

ॐ अस्य श्रीअर्गलास्तोत्रमन्त्रस्य विष्णुर्ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहालक्ष्मीर्देवता श्रीजगदम्बाप्रीतये सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः ॥

ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

मार्कण्डेय उवाच

ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥

जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणि ।
जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥
मधुकैटभविद्राविविधातृवरदे नमः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ३ ॥
महिषासुरनिर्णाशि भक्तानां सुखदे नमः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ४ ॥
रक्तबीजवधे देवि चण्डमुण्डविनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ५ ॥
शुम्भस्यैव निशुम्भस्य धूम्राक्षस्य च मर्दिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ६ ॥
वन्दिताङ्घ्रियुगे देवि सर्वसौभाग्यदायिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ७ ॥

अचिन्त्यरूपचरिते सर्वशत्रुविनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।। ८ ।।

नतेभ्यः सर्वदा भक्तया चण्डिके दुरितापहे ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।। ९ ।।

स्तुवद्भ्यो भक्तिपूर्वं त्वां चण्डिके व्याधिनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।। १० ।।

चण्डिके सततं ये त्वामर्चयन्तीह भक्तितः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।। ११ ।।

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम् ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।। १२ ।।

विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकैः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।। १३ ।।

विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम् ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।। १४ ।।

सुरासुरशिरोरत्ननिघृष्टचरणेऽम्बिके ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।। १५ ।।

विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरु ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।। १६ ।।

प्रचण्डदैत्यदर्पघ्ने चण्डिके प्रणताय मे ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।। १७ ।।

चतुर्भुजे चतुर्वक्त्रसंस्तुते परमेश्वरि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १८ ॥

कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १९ ॥

हिमाचलसुतानाथसंस्तुते परमेश्वरि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २० ॥

इन्द्राणीपतिसद्भावपूजिते परमेश्वरि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २१ ॥

देवि प्रचण्डदोर्दण्डदैत्यदर्पविनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २२ ॥

देवि भक्तजनोद्दामदत्तानन्दोदयेऽम्बिके ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २३ ॥

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम् ।
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम् ॥ २४ ॥

इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः ।
सतु सप्तशतीसंख्यावरमाप्नोति सम्पदाम् ॐ ॥ २५ ॥

इति देव्या अर्गलास्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

अथ कीलकम्

ॐ अस्य श्रीकीलकमन्त्रस्य शिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहासरस्वती देवता, श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थं सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः ।

ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

मार्कण्डेय उवाच

ॐ विशुद्धज्ञानदेहाय त्रिवेदीदिव्यचक्षुषे ।
श्रेयःप्राप्तिनिमित्ताय नमः सोमार्द्धधारिणे ॥ १ ॥
सर्वमेतद्विजानीयान्मन्त्राणामभिकीलकम् ।
सोऽपि क्षेममवाप्नोति सततं जाप्यतत्परः ॥ २ ॥
सिद्धयन्त्युच्चाटनादीनि वस्तूनि सकलान्यपि ।
एतेन स्तुवतां देवी स्तोत्रमात्रेण सिद्धयति ॥ ३ ॥
न मन्त्रो नौषधं तत्र न किञ्चिदपि विद्यते ।
विना जाप्येन सिद्धयेत सर्वमुच्चाटनादिकम् ॥ ४ ॥
समग्राण्यपि सिद्धयन्ति लोकशङ्कामिमां हरः ।
कृत्वा निमन्त्रयामास सर्वमेवमिदं शुभम् ॥ ५ ॥
स्तोत्रं वै चण्डिकायास्तु तच्च गुप्तं चकार सः ।
समाप्तिर्न च पुण्यस्य तां यथावन्नियन्त्रणाम् ॥ ६ ॥

सोऽपि क्षेममवाप्नोति सर्वमेवं न संशयः ।

कृष्णायां वा चतुर्दश्यामष्टम्यां वा समाहितः ॥ ७ ॥

ददाति प्रतिगृह्णाति नान्यथैषा प्रसीदति ।

इत्थंरूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम् ॥ ८ ॥

यो निष्कीलां विधायैनां नित्यं जपति संस्फुटम् ।

स सिद्धः स गणः सोऽपि गन्धर्वो जायते नरः ॥ ९ ॥

न चैवाप्यटतस्तस्य भयं क्कापीह जायते ।

नापमृत्युवशं याति मृतो मोक्षमवाप्नुयात् ॥ १० ॥

ज्ञात्वा प्रारभ्य कुर्वीत न कुर्वाणो विनश्यति ।

ततो ज्ञात्वैव सम्पन्नमिदं प्रारभ्यते बुधैः ॥ ११ ॥

सौभाग्यादि च यत्किञ्चिद् दृश्यते ललनाजने ।

तत्सर्वं तत्प्रसादेन तेन जाप्यमिदं शुभम् ॥ १२ ॥

शनैस्तु जप्यमानेऽस्मिन् स्तोत्रे सम्पत्तिरुच्चकैः ।

भवत्येव समग्रापि ततः प्रारभ्यमेव तत् ॥ १३ ॥

ऐश्वर्यं यत्प्रसादेन सौभाग्यारोग्यसम्पदः ।

शत्रुहानिः परो मोक्षः स्तूयते सा न किं जनैः ॥ ॐ ॥ १४ ॥

इति देव्याः कीलकस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

श्रीदेव्यथर्वशीर्षम्

ॐ सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थुः कासि त्वं महादेवीति ॥ १ ॥

साब्रवीत्––अहं ब्रह्मस्वरूपिणी । मत्तः प्रकृतिपुरुषात्मकं जगत् । शून्यं चाशून्यं च ॥ २ ॥

अहमानन्दानानन्दो । अहं विज्ञानाविज्ञाने । अहं ब्रह्माब्रह्मणी वेदितव्ये । अहं पञ्चभूतान्यपञ्चभूतानि । अहमखिलं जगत् ॥ ३ ॥

वेदोऽहमवेदोऽहम् । विद्याहमविद्याहम् । अजाहमनजाहम् । अधश्चोर्ध्वं च तिर्यक्चाहम् ॥ ४ ॥

अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चरामि । अहमादित्यैरुत विश्वदेवैः । अहं मित्रावरुणावुभौ बिभर्मि । अहमिन्द्राग्नी अहमश्विनावुभौ ॥ ५ ॥

अहं त्वष्टारं पूषणं भगं दधामि । अहं विष्णुमुरुक्रमं ब्रह्माणमुत प्रजापतिं दधामि ॥ ६ ॥

अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते । अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम् । अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे । य एवं वेद । स दैवीं सम्पदमाप्नोति ॥ ७ ॥

ते देवा अब्रुवन्—नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥ ८॥
तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं
वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्।
दुर्गां देवीं शरणं प्रपद्या-
महेऽसुरान्नाशयित्र्यै ते नमः॥ ९॥
देवीं वाचमजनयन्त देवा-
स्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति।
सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना
धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु॥ १०॥
कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम्।
सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम्॥११॥
महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात्॥ १२॥
अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव।
तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबन्धवः॥ १३॥
कामो योनिः कमला वज्रपाणि-
र्गुहा हसा मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः।
पुनर्गुहा सकला मायया च
पुरूच्यैषा विश्वमातादिविद्योम्॥ १४॥

एषाऽऽत्मशक्ति: । एषा विश्वमोहिनी । पाशाङ्कुशधनुर्बाणधरा । एषा श्रीमहाविद्या । य एवं वेद स शोकं तरति ॥ १५ ॥

नमस्ते अस्तु भगवति मातरस्मान् पाहि सर्वत: ॥ १६ ॥

सैषाष्टौ वसव: । सैषैकादश रुद्रा: । सैषा द्वादशादित्या: । सैषा विश्वेदेवा: सोमपा असोमपाश्च । सैषा यातुधाना असुरा रक्षांसि पिशाचा यक्षा: सिद्धा: । सैषा सत्त्वरजस्तमांसि । सैषा ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपिणी । सैषा प्रजापतीन्द्रमनव: । सैषा ग्रहनक्षत्रज्योतींषि । कलाकाष्ठादिकालरूपिणी । तामहं प्रणौमि नित्यम् ॥

पापापहारिणीं देवीं भुक्तिमुक्तिप्रदायिनीम् ।
अनन्तां विजयां शुद्धां शरण्यां शिवदां शिवाम् । १७ ॥

वियदीकारसंयुक्तं वीतिहोत्रसमन्वितम् ।
अर्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थसाधकम् ॥ १८ ॥

एवमेकाक्षरं ब्रह्म यतय शुद्धचेतस: ।
ध्यायन्ति परमानन्दमया ज्ञानाम्बुराशय: ॥ १९ ॥

वाङ्माया ब्रह्मसूस्तस्मात् षष्ठं वक्त्रसमन्वितम् ।
सूर्योऽवामश्रोत्रबिन्दुसंयुक्तष्टात्तृतीयक: ।

नारायणेन संमिश्रो वायुश्चाधरयुक् तत: ।
विच्चे नवार्णकोऽर्ण: स्यान्महदानन्ददायक: ॥ २० ॥

हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रात:सूर्यसमप्रभाम् ।
पाशाङ्कुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम ।
त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुघां भजे ॥ २१ ॥

नमामि त्वां महादेवीं महाभयविनाशिनीम् ।

महादुर्गप्रशमनीं महाकारुण्यरूपिणीम् ॥ २२ ॥

यस्याः स्वरूपं ब्रह्मादयो न जानन्ति तस्मादुच्यते अज्ञेया । यस्या अन्तो न लभ्यते तस्मादुच्यते अनन्ता । यस्या लक्ष्यं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अलक्ष्या । यस्या जननं नोपलभ्यते तस्मादुच्यते अजा । एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यते एका । एकैव विश्वरूपिणी तस्मादुच्यते नैका अत एवोच्यते अज्ञेयानन्तालक्ष्याजैका नैकेति ॥ २३ ॥

मन्त्राणां मातृका देवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी ।

ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसाक्षिणी ।

यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता ॥ २४ ॥

तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीम् ।

नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम् ॥ २५ ॥

इदमथर्वशीर्षं योऽधीते स पञ्चाथर्वशीर्षजपफलमाप्नोति । इदमथर्वशीर्षमज्ञात्वयोऽर्चां स्थापयति—शतलक्षं प्रजप्त्वापि सोऽर्चासिद्धिं न विन्दति । शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः ।

दशवारं पठेद् यस्तु सद्यः पापैः प्रमुच्यते ।

महादुर्गाणि तरति महादेव्याः प्रसादतः ॥ २६ ॥

सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति । प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति । सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति । निशीथे तुरीयसन्ध्यायां जप्त्वा वाक्सिद्धिर्भवति । नूतनायां प्रतिमायां जप्त्वा देवतासान्निध्यं भवति । प्राणप्रतिष्ठायां जप्त्वा प्राणानां प्रतिष्ठा भवति । भौमाश्विन्यां महादेवीसन्निधौ जप्त्वा महामृत्युं तरति । स महामृत्युं तरति य एवं वेद । इत्युपनिषत् ॥

अथ नवार्णविधिः

इस प्रकार रात्रिसूक्त और देव्यथर्वशीर्षका पाठ करने के पश्चात् निम्नाङ्कित रूप से नवार्णमन्त्र के विनियोग, न्यास और ध्यान आदि करे।

श्रीगणपतिर्जयति। 'ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः, ऐं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मी-महासरस्वतीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।'

इसे पढ़कर जल गिराये

नीचे लिखे न्यासवाक्यों में से एक-एक का उच्चारण करके दाहिने हाथ की अँगुलियों से क्रमशः सिर, मुख, हृदय, गुदा, दोनों चरण और नाभि—इन अङ्गों का स्पर्श करे।

ऋष्यादिन्यासः

ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः, शिरसि। गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्-छन्दोभ्यो नमः मुखे। महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः, हृदि ऐं बीजाय नमः, गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः, पादयोः। क्लीं कीलकाय नमः, नाभौ।

'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे'—इस मूलमन्त्र से हाथों की शुद्धि करके करन्यास करे।

करन्यास:

करन्यास में हाथ की विभिन्न अँगुलियों, हथेलियों और हाथ के पृष्ठ भाग में मन्त्रों का न्यास (स्थापन, किया जाता है; इसी प्रकार अङ्गन्यास में हृदयादि अङ्गों में मन्त्रों की स्थापना होती है। मन्त्रों को चेतन और मूर्तिमान् मानकर उन-उन अङ्गों का नाम लेकर उन मन्त्रमय देवताओं का ही स्पर्श और वन्दन किया जाता है, ऐसा करने से पाठ या जप करने वाला स्वयं मन्त्रमय होकर मन्त्र-देवताओं द्वारा सर्वथा सुरक्षित हो जाता है। उसके बाहर-भीतर की शुद्धि होती है, दिव्य बल प्राप्त होता है और साधना निर्विघ्नतापूर्वक पूर्ण तथा परम लाभदायक होती है।

ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः (दोनों हाथों की तर्जनी अँगुलियों से दोनों अँगूठों का स्पर्श)।

ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः (दोनों हाथों के अँगूठों से दोनों यर्जनी अँगुलियों का स्पर्श)।

ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः (अँगूठों से मध्यमा अँगुलियों का स्पर्श)।

ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः (अनामिका अंगुलियों का स्पर्श)।

ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः (कनिष्ठिका अंगुलियों का स्पर्श।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः (हथेलियों और उनके पृष्ठ भागों का परस्पर स्पर्श)।

हृदयादिन्यासः

इसमें दाहिने हाथ की पाँचों अँगुलियों से 'हृदय' आदि अङ्गों का स्पर्श किया जाता है।

ॐ ऐं हृदयाय नमः (दाहिने हाथ की पाँचों अँगुलियों से हृदय का स्पर्श)।

ॐ ह्रीं शिर से स्वाहा (सिर का स्पर्श)।

ॐ क्लीं शिखायै वषट् (शिखा का स्पर्श)।

ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम् (दाहिने हाथ की अँगुलियों से बायें कंधे का और बायें हाथ की अँगुलियों से दाहिने कंधे का साथ ही स्पर्श)।

ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट् (दाहिने हाथ की अँगुलियों के के अग्र भाग से दोनों नेत्रों और ललाट के मध्य भाग का स्पर्श)।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट् (यह वाक्य पढ़ कर दाहिने हाथ को सिर के ऊपर से बायीं ओर से पीछे की ओर ले जाकर दाहिनी ओर से आगे की ओर ले आये और तर्जनी तथा मध्यमा अँगुलियों से बायें हाथ की हथेली पर ताली बजाये)।

अक्षरन्यासः

निम्नाङ्कित वाक्यों को पढ़ कर क्रमशः शिखा आदि का दाहिने हाथ की अँगुलियों से स्पर्श करे।

ॐ ऐं नमः शिखायाम्। ॐ ह्रीं नमः, दक्षिणनेत्रे। ॐ क्लीं नमः, वामनेत्रे। ॐ चां नमः, दक्षिणकर्णे। ॐ मुं नमः, वामकर्णे। ॐ डां नमः, दक्षिणनासापुटे। ॐ यैं नमः, वामनासापुटे। ॐ विं नमः, मुखे। ॐ च्चें नमः, गुह्ये।

इस प्रकार न्यास करके मूलमन्त्र से आठ बार व्यापक (दोनों हाथों द्वारा सिर से लेकर पैर तक के सब अङ्गों का स्पर्श) करे, फिर प्रत्येक दिशा में चुटकी बजाते हुए न्यास करे—

दिङ्न्यासः

ॐ ऐं प्राच्यै नमः। ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः। ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः। ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः। ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः। ॐ क्लीं वायव्यै नमः। ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः। ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः।

ध्यानम्

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः

शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम् ।

नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां

यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ॥ १ ॥

अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकां

दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम् ।

शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां

सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥ २ ॥

घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं

हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम् ।

गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-

पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम् ॥ ३ ॥

फिर 'ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः, इस मन्त्र से माला की पूजा करके प्रार्थना करे—

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ।

चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥

ॐ अविघ्न कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे ।
जपकाले च सिद्धयर्थं प्रसीद मम सिद्धये ॥

ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धि देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि साधय साधय सर्वसिद्धि परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा ।

इसके बाद 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' इस मन्त्र का १०८ बार जप करें और—

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥

इस श्लोक को पढ़ कर देवी के वाम हस्त में जप निवेदन करे ।

अथ तन्त्रोक्तं देवीसूक्तम्

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम् ॥ १ ॥

रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः ।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सतत नमः ॥ २ ॥

कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्धयै कुर्मो नमो नमः ।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥ ३ ॥

दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै ।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सतत नमः ॥ ४ ॥

अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः ।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ॥ ५ ॥

या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६ ॥

या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नसस्तस्यै नमो नमः ॥ ७ ॥

या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ८ ॥

या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता ।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै ननस्तस्यै नमो नमः ॥ ९ ॥

या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता ।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १० ॥

या देवी सर्वभूतेषु छायारूपेण संस्थिता ।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ११ ॥

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता ।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १२ ॥

या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता ।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १३ ॥

या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता ।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १४ ॥

या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता ।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १५ ॥

या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता ।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १६ ॥

या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता ।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १७ ॥

या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता ।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।। १८ ।।

या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता ।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।। १९ ।।

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता ।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।। २० ।।

या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता ।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।। २१ ।।

या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता ।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।। २२ ।।

या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता ।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।। २३ ।।

या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता ।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।। २४ ।।

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता ।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।। २५ ।।

या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता ।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।। २६ ।।

इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या ।

भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः ॥ २७ ॥

चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थिता जगत् ।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २८ ॥

स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया-

त्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता ।

करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी

शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥ २९ ॥

या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै-

रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते ।

या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः

सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ॥ ३० ॥

सिद्धकुंञ्जिकास्तोत्रम्

शिव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम् ।
येन मन्त्रप्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत् ॥ १ ॥

न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम् ।
न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम् ॥ २ ॥

कुञ्जिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत् ।
अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम् ॥ ३ ॥

गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति ।
मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम् ।
पाठमात्रेण संसिद्धयेत् कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम् ॥ ४ ॥

अथ मन्त्रः

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥ ॐ ग्लौं हुँ क्लीं जूं सः
ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल
ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा

॥ इति मन्त्रः ॥

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि ।

नमः कैटमहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि ॥ १ ॥

नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भासुरघातिनि ॥ २ ॥

जाग्रतं हि महादेवि जपंसिद्धंकुरुष्व मे ।

ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका ॥ ३ ॥

क्लींकारी कामरूपिण्यै वीजरूपे नमोऽस्तु ते ।

चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी ॥ ४ ॥

विच्चे चामयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि ॥ ५ ॥

धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी ।

क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभं कुरु ॥ ६ ॥

हुं हुं हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी ।

भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः ॥ ७ ॥

अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं

धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा ॥

पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा ॥ ८ ॥

सां सीं सूं सप्तशती देव्या मन्त्रसिद्धिं कुरुष्व मे ॥
इदं तु कुञ्जिकास्त्रोत्रं मन्त्रजागर्तिहेतवे ।
अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति ॥
यस्तु कुञ्जिकया देवि हीनां सप्तशतीं पठेत् ।
न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा ॥

इति श्रीरुद्रयामले गौरीतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे
कुञ्जिकास्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

॥ ॐ तत्सत् ॥

अथ देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः ।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ॥ १ ॥

विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत् ।
तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ २ ॥

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः ।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ ३ ॥

जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया ।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ ४ ॥

परित्यक्ता देवा विविधविधसेवाकुलतया
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि ।

इदानीं चेन्मानस्तव यदि कृपा नापि भविता

निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम् ।। ५ ।।

श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा

निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः ।

तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं

जनः को जानीते जननि जननीयं जपविधौ ।। ६ ।।

चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो

जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः ।

कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं

भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ।। ७ ।।

न मोक्षस्याकाङ्क्षा भवविभववाञ्छापि च न मे

न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः ।

अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै

मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः ।। ८ ।।

नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः

किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः ।

श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे

धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव ।। ९ ।।

आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं

करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि ।

नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः

क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥ १० ॥

जगदम्ब विचित्रमत्र किं

परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि ।

अपराधपरम्परापरं

न हि माता समुपेक्षते सुतम् ॥ ११ ॥

मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि ।

एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु ॥ १२ ॥

इति श्रीशङ्कराचार्यविरचितं देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

क्षमा-प्रार्थना

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ॥ १ ॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि ॥ २ ॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि ।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ ३ ॥
अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत् ।
यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः ॥ ४ ॥
सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके ।
इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु ॥ ५ ॥
अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥ ६ ॥
कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे ।
गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि ॥ ७ ॥
गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि ॥ ८ ॥

॥ श्रीदुर्गार्पणमस्तु ॥

—० अन्नपूर्णा स्त्रोतम् ०—

नित्यानन्द करी वराभयकरी सौन्दर्य रत्नाकरी,
निर्धूताखिल घोर`पावनकरी प्रात्यक्ष माहेश्वरी ।
प्रालेयाचल वंश पावनकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्न पुर्णेश्वरी ।।

नाना रत्न विचित्र भूषणकरी हेमाम्बरा डम्बरी,
मुक्ताहार विलम्बमान विलसद् रक्षोज कुम्भान्तरी ।
काश्मीरा गुरु वासिता रुचिकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि...।।

योगानन्द करी रिपुक्षयकरी घर्मार्थ निस्ठाकरी,
चन्द्रार्कानल मासमान लहरी त्रैलोक्य रक्षाकरी ।
सर्वेश्वर्य समस्त वांछयकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि........... ....।।

कैलाशाचल कन्दरालयकरी गौरी उमा शंकरी,
कौमारी निगमार्थ गोचरकरी ॐकार बीजाक्षरी ।
मोक्षद्वार कपाट पाटनकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बन करी ... .।।

दृश्या दृश्य प्रभूतवाहनकरी ब्रह्माण्ड माण्डोदरी,
लीला नाटक सूत्रभेद न करी विज्ञान दीपाङ्कुरी ।
श्री विश्वेशमनः प्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि......................................।।

ऊर्वी सर्व जनेश्वरी भगवती महान्नपुर्णेश्वरी,
वेणी नील समान कुन्त लहरी नित्यान्न दानेश्वरी।
सर्वानन्दकरी सदाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि...................................॥

आदिक्षान्ति समस्थवर्णनकरी शम्भोस्त्रिभावाकरी,
काश्मीरात्रि जलेश्वरी त्रिनयनी नित्यङ्कु रा शर्वरी।
कामाकांक्षकरी जनोदयकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि....... ....॥

देवी सर्व विचित्र रत्न रचिता दाक्षायणी सुन्दरी,
वामास्वादु पयोधर प्रियकरी सौभाग्य माहेश्वरी।
भक्ताभीस्ठकरी दशाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि...... ....॥

चन्द्रार्कालय कोटि कोटि सदृशा चन्द्रांशु बिम्बाधरी,
चन्द्रार्काग्नि समान कुन्त लहरी चन्द्रार्कि वर्णेश्वरी।
माला पुस्तक पाशसांकुशधरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि.................................॥

क्षेत्र त्राणकरी महाऽभयकरी माताकृपासागरी,
साक्षान्मोक्षकरी सदाशिवकरी विश्वेश्वरी श्रीधरी।
दक्ष क्रन्दनकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि...... ....॥

भगवति भवरोगात् पीड़ितं दुस्कृतोत्थात्
सुत दुहितृ कलत्रोपद्रर्बणानुयात्
विलसदमृत दृस्ठया वीक्ष्य विभ्रान्तचित्तम्
सकल भुवनमात स्त्राहिमामो नमस्ते ।।
माहेश्वरी माश्रिता कल्पबल्ली—
महाम्भवोच्छेदकरीं भवानीम्
क्षुधार्त जायातनयाद्यु पेत—
स्त्वामन्न पूर्णे शरणं प्रपद्ये ।।
दारिद्रय् दावानल दह्यमानं—
पाह्यन्न पूर्णे गिरिराज कन्ये,
कृपाम्बूधीमज्जय मां त्वदीय—
त्वत्पादपद्मार्पित चित्त वृत्तिम् ।।
अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकर प्राणवल्लभे
ज्ञानवैराज्ञ सिद्धयर्थ भिक्षां देहि च पार्वति ।।
माता च पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः,
बांधवा: शिव भक्ताश्च स्वदेशो भुवन त्रयम् ।
स्वदेशो भुवन त्रयम् ॐ नम: इति ।।

❀ ❀ ❀

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद
ॐ श्रीं ह्रीं महालक्ष्मै नम: ।।

श्री महालक्ष्यष्टक स्तवः

श्री गणेशायनमः

इन्द्र उवाच

"नमस्तेऽस्तु महामाये श्री पीठे सुरपूजिते ।
शंख चक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ १ ॥

नमस्ते गरुडारूढे कोलासुर भयंकरि ।
सर्व पाप हरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ २ ॥

सर्वज्ञे सर्व वरदे सर्व दुष्ट भयंकरि ।
सर्व दुःख हरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ ३ ॥

सिद्धि बुद्धि प्रदे देवि भुक्ति मुक्ति प्रदायिनी ।
मन्त्रमूर्त्ते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ ४ ॥

आद्यंतरहिते देवि आद्यशक्ति महेश्वरी ।
योगने योगसंभूते महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ ५ ॥

स्थूल सूक्ष्म महारौद्रे महाशक्ति महोदरे ।
महापाप हरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ ६ ॥

पद्मासन स्थिते देवि परब्रह्म स्वरुपिणि ।

परमेशि जगन्मांतर्महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ ७ ॥

श्वेताम्बरधरे देवि नानालंकार भूषिते ।

जगत्स्थिते जगन्मातर्माहालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ ८ ॥

महालक्ष्म्यष्टक स्तोत्रं य: पठेद्भक्तिमान्तर: ।

सर्वसिद्धिम वाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा ॥ ९ ॥

एक कालं पठेन्नित्यं महापाप विनाशनम् ।

द्विकालं य: पठेन्नित्यं धनधान्य समन्वित: ॥ १० ॥

त्रिकालं य पठेन्नित्य महाशत्रु विनाशनम् ।

'महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा" ॥ ११ ॥

॥ इति श्री इन्द्र कृत महालक्ष्मष्टकस्तव: समाप्तम् ॥

ध्यान

ॐ वन्देलक्ष्मीं परमशिवमयीं,
शुद्ध जांबूनदाभां ।
जोरुपां कनक वसनां
सर्व भूषोज्ज्वलाङ्गीम् ॥

ीजापुरं कनक कलशं,
हेमपद्मं दधानां ।
ाद्याशक्तिं सकल जननीं
विष्णुवामाङ्क संस्थाम् ॥ १ ॥

ारणं त्वा प्रपन्नोऽस्मि महालक्ष्मि हरिप्रिये ।
प्रसादं कुरु देवेशि मयि दुष्टेऽपराधिनि ॥ २ ॥

ोटि कन्दर्प लावण्यां सौन्दर्य्यैक स्वरुपताम् ।
सर्व मङ्गल-माङ्गल्यां श्री रामां शरणं व्रजे ॥ ३ ॥

श्री सूक्तम्

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजां ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ।।

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहं ।।

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम् ।
श्रियं देवीमुपह् वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ।।

कांसास्मितां हिरण्य प्रकारं आर्दा ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मेस्थितां पद्वर्णां तामिहो पह् वये श्रियम् ।।

चन्द्रां प्रभासां यशसां ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव जुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मनेमिं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोम्

आदित्य वर्णे तपसोधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्व: ।
तस्य फलानि तपसानुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मी:

उपैतु मां देव सख: कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्ति वृद्धि ददातुमे ।।

क्षुत्पिपासामला ज्येष्ठा अलक्ष्मीर्नाशयाम्हम् ।

अभूतिमसमृद्धि च सर्वान्निर्णुद मे गृहात् ।।

गन्ध द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्पां करीषिणीम् ।

ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।

मनस: काममाकूतिं वाच: सत्यमशीमहि ।

पशूनां रुपमन्नस्य मयि श्री: श्रयतां यश: ।।

कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भ्रमकर्दम ।

श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ।।

आप: सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।

नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ।।

आर्द्रां य: करिणीं यष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।

चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ।।

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपमामिनीम् ।

यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम् ।।

य: शुचि प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्य मन्वहम् ।

श्रिय: पञ्चदशर्चं च श्री काम: सततं जयेत् ।।

।। इति श्री सूक्तम् समाप्तम् ।।

श्री लक्ष्मी सूक्तम्

सरसिजनिलये सरोज हस्ते,

धवल तरां शुकगन्धमाल्यशोभे ।

भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे,

त्रिभुवन भूति करि प्रसीदमह्यम् ।।

धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः ।

धन मिन्द्रो वृहस्पति वरुणं धनमश्विनौ ।।

वैनतेय सोमं पिव सोमं पिवतु वृत्रहा ।

सोमधनस्य सोमनोमह्यं ददातु सोमिनः ।।

न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः ।

भवन्ति कृत पुण्यानां भक्तानां सूक्त जापिनाम् ।।

पद्मानने पद्म उरु पद्माक्षि पद्म सम्भवे ।

तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ।।

विष्णु पत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधव प्रियाम् ।

विष्णु प्रियां सखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम् ।।

महालक्ष्मीं च विद्महे विष्णु पत्नीं च धीमहि ।

तन्नो लक्ष्मी: प्रचोदयात् ।।

पद्मानने पद्मिनि पद्म पत्रे,

पद्म प्रिये पद्म दलायताक्षि ।

विश्वप्रिये विश्वमनोनुकूले,

त्वत्पाद पद्मं मयि सन्निधत्स्व ।।

आनन्द कर्दम: श्री दश्चिक्लीत इति विश्रुता: ।

ऋषय: श्रिय पुत्राश्च मयि श्री देवी देवता ।।

ऋण रोगादि दारिद्रयं पापञ्च अपमृत्यव: ।

भयशोक मनस्ताया नश्यन्तु मम सर्वदा ।।

श्रीर्वचस्व मायुष्य मारोग्यमाबिधाच्छोभमानं महीयते ।

धन धान्यं पशुं बहुपुत्र लाभं शतसंवत्सरं दीर्घ मायु: ।।

।। इति श्री लक्ष्मी सूक्तं समाप्तम ।।

अथ श्री पंचमुखी हनुमत्कवचम्

अस्य श्रीपञ्चमुखिहनुमत्कवचस्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्द: श्रीहनुमान्देवता । रां बीजम् मं शक्ति: । चन्द्र इति कीलकम् । ॐ रौं कवचाय हुम् । ॐ ह्रौं अस्त्राय फट् ।। ईश्वर उवाच ।। अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि श्रृणु सर्वांगसुन्दरम् ।। तत्कृतं देवदेवेशि ध्यानं हनुमत: प्रियम् ।। १ ।।

पंचवक्त्रं महाभीमं कपियूथसमन्वितम् ।। बाहुभिर्दशभिर्युक्तं सर्वकामार्थसिद्धिदम् ।। २ ।।

पूर्वं तु वानरं वक्त्रं कोटिसूर्यसमप्रभम् ।। दंष्ट्राकरालवदनं भृकुटीकुटिलेक्षणम् ।। ३ ।।

अस्यैव दक्षिण वक्त्रं नारसिंहं महाद्भुतम् ।। अत्युग्रतेजो वपुषं भीषणं भयनाशनम् ।। ४ ।।

पश्चिमे गारुडं वक्त्रं वक्रतुडं महाबलम् । सर्वनागप्रशमनं सर्वभूतादि कृन्तनम् ।। ५ ।।

उत्तरे सौकरं वक्त्रं कृष्णदीप्तनभोमयम् । पाताले सिद्धवेतालं ज्वररोगादिकृन्तनम् ।। ६ ।।

ऊर्ध्वं हयाननं घोरं दानवान्तकरं परम् । येन वक्त्रेण विप्रेन्द्र तारकाया महाहवे ।। ७ ।।

दुर्गतेशरणं तस्य सर्वशत्रुहरं परम्। ध्यात्वा पंचमुखं रुद्रं हनुमन्तं दयानिधिम् ।८॥

खड्ग त्रिशूल खट्वांगं पाशमंकुशपर्वतम् ॥ मुष्टौ तु मोदकौ वृक्ष धारयन्तं कमडलुम् ॥ ९॥

भिन्दिपालं ज्ञानमुद्रां दमनं मुनिपुंगव॥ एतान्यायुधजालानि धारयन्तं भयापहम् ॥ १०॥

दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगंधानुलेपनम् । सर्वैश्वर्यमयं देवं हनुमद्विश्वतोमुखम् ॥ ११॥

पंचास्यमच्युतमनेकविचित्रवर्णं वक्त्रं सशखविभूतं कपिराजवीर्यम् ॥ पीताम्बरादिमुकुटैरपि शोभितांगं पिंगाक्षमञ्जनिसुतं ह्यनिशं स्मरामि ॥१२॥

मर्कटस्य महोत्माहं सर्वशोकविनाशनम् । शत्रुसंहारकं चैयत्कवचं ह्यापदं हरेत् ॥ १३॥

ॐ हरिमर्कटमर्कटाय स्वाहा ॥ १४॥

ॐ नमो भगवते पंचवदनाय पूर्वकपिमुखाय सकलशत्रुसंहारणाय स्वाहा ॥ १५॥

ॐ नमोभगवते पंचवदनाय उत्तरमुखाय आदिवाराहाय सकलसम्पत्कराय स्वाहा ॥ १६॥

ॐ नमो भगवते पंचवदनाय ऊर्ध्वमुखाय हयग्रीवाय सकल जनवशकराय स्वाहा ॥ १७ ॥

इति मूल मन्त्रः । ॐ अस्य श्रीपञ्चमुखिहनुमत्कवचस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीरामचन्द्रऋषिरनुष्टुपछन्दः । श्रीरामचन्द्रो देवता ॥ सीता बीजम् ॥ हनुमानिति शक्तिः हनुमत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥ पुनर्हनुमानिति बीजम् ॥ ॐ वायुपुत्राय इति शक्तिः । अञ्जनी तायेति कीलकम् ॥ श्रीरामचन्द्रवरप्रसाद सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ ह हनुमते अंङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॐ वं वायुपुत्राय तर्जनीभ्यां नमः । अ अञ्जनीसुताय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ रां रामदूताय अनामिकाभ्यां नमः । ॐ रु रुद्रमूर्तये कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ स सीताशोकनिवारणाय करतलपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ अञ्जनीसुताय हृदयाय नमः ॐ रुद्रमूर्तये शिरसे स्वाहा । ॐ वायुपुत्राय शिखयै वषट् ॥ ॐ अग्निगर्भाय शिरसे स्वाहा । ॐ रामदूताय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ पञ्चनेयाय वायुपुत्राय महाबलाय सीताशोकनिवारणाय महाबलप्रचण्डाय लंकापुरीदहनाय फाल्गुनसखाय कोलाहलसकलब्रह्माण्डविश्वरूपाय सप्तसमुद्रनिरन्तरलंघिताय पिंगल नयनायामितविक्रमाय सूर्यबिम्बफलसेवाधिष्टितनिराक्रमाय संजीवन्या अंगदलक्ष्मणमहाकपिसैन्यप्राणदात्रे दशग्रीवविध्वंसनाय रामेष्टाय सीतासहरामचंद्रवरप्रसादायषट्प्रयोगागम-पंचमुखीहनुमन्मंत्रजपेविनि योगः ॥ ॐ हरिमर्कटमर्कटाय स्वाहा ॥ ॐ हरिमर्कटमर्कटाय वं वं वं व व फट् स्वाहा ॥ ॐ हरिमर्कटमर्कटाय फं फं फं फं फं फट् स्वाहा ॥ ॐ हरि मर्कटमर्कटाय खं खं खं खं खं मारणाय स्वाहा ॐ हरिमर्कटमर्कटाय ठं ठं ठ ठं ठं स्तम्भनाय स्वाहा ॥ ॐ हरिमर्कटमर्कटाय डं डं डं ड डं

आकर्षणाय सकलसम्पत्कराय पञ्चमुखवीरहनुमते स्वाहा ॥ ॐ उच्चाटने ढं ढं ढं ढं ढं कूर्ममूर्तये पंचमुखहनुमते परयन्त्रपरतंत्रोच्चाटनाय स्वाहा ॐ कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं क्ष स्वाहा ॥ इतिदिग्बन्धः ॥ ॐ पूर्वकपिमुखे पंचमुखहनुमते ठं ठं ठं ठं ठं सकलशत्रुसंहारणाय स्वाहा ॥ ॐ दक्षिणमुखे पंचमुखहनुमते करालवदनाय नरसिंहाय ह्रां ह्रां ह्रां ह्रां ह्रां सकलभूतप्रेतदमनाय स्वाहा ॥ ॐ पश्चिममुखे गरुडासनाय पञ्चमुखवीरहनुमते मं मं मं मं मं सकलविषहराय स्वाहा ॥ ॐ उत्तरमुखे आदिवराहाय लं लं लं लं लं नृसिंहाय नील कण्ठाय पंचमुखहनुमते स्वाहा ॥ अंजनीसुताय वायुपुत्राय महाबलाय रामेष्टफाल्गुनसखाय सीताशोकनिवारणाय लक्ष्मणप्राणरक्षकाय कपि सैन्यप्रकाशाय सुग्रीवाभिमानदहनाय श्रीरामचन्द्रवरप्रसादकाय महावीर्याय प्रथमब्रह्माण्डनायकाय पञ्चमुखहनुमते भूत - प्रेत-पिशाच-ब्रह्मराक्षस-शाकिनी - डाकिनी-अन्तरिक्ष- ग्रहपरमन्त्र-परयन्त्र-परतन्त्र सर्वग्रहोच्चाटनायसकलशत्रुसंहारणाय पंचमुखहनुमद्वरप्रसादकसर्वर क्षकाय जं जं जं जं जं स्वाहा ॥ इदं कवचं पठित्वा तु महाकवचं पठेन्नरः । एकवारं पठेन्नित्यं सर्वशत्रुनिवारणम् ॥ १८ ॥

द्विवारं तु पठेन्नित्यं सर्वशत्रुनिवारणम् ॥ त्रिवारं पठते नित्यं सर्वसम्पत्करं परम् ॥ १९ ॥

चतुर्वारं पठेन्नित्यं सर्वलोकवशीकरम् ॥ पंचवार पठेन्नित्यं सर्वरोगनिवारणम ॥ २० ॥

षड्वारं तु पठेन्नित्यं सर्वदेववशीकरम् ॥ सप्तवारं पठेन्नित्यं सर्वकामार्थसिद्धदम् ॥ २१ ॥

अष्टवारं पठेन्नित्यं सर्वसौभाग्यदायकम् ॥ नववारं पठेन्नित्यं सर्वैश्वर्यप्रदायकम् ॥ २२ ॥

दश वारं पठेन्नित्यं त्रैलोक्यज्ञानदर्शनम् ॥ एकादशं पठेन्नित्यं सर्वसिद्धि लभेन्नरः ॥ कवचस्मृतिमात्रेण महालक्ष्मीफलप्रदम् ॥ २३ ॥ इति

RAM DARBAR

S. BRIJBASI & SONS
MIRZA STREET BOMBAY 3.

S. S. BRIJBASI & SONS
32/1, FATEHPURI DELHI
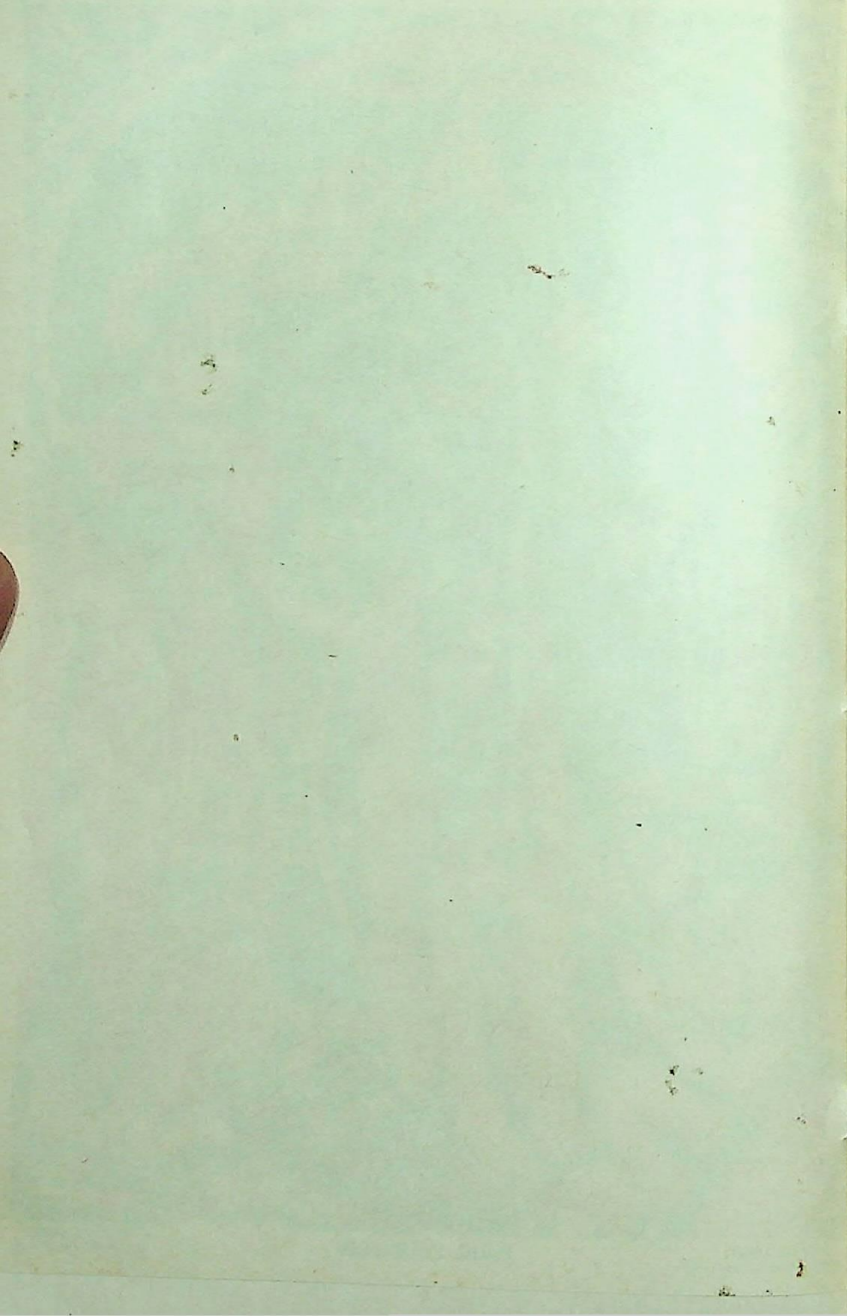
हनुमान गायत्री

ॐ अंजनीजाय विद्महे,
वायुपुत्राय धीमहि,
तन्नो हनुमान् प्रचोदयात् ।

मनोजवं मारुततुल्य वेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथ मुख्यं श्रीराम दूतं मनसा स्मरामि ॥ १ ॥

मनोजवं मारुततुल्य वेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथ मुख्यं श्रीराम दूतं शिरसा नमामि ॥ २ ॥

मनोजवं कारुततुल्य वेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
तातात्मज़ं वानरयूथ मुख्यं श्रीराम दूतं शरणं प्रपद्ये ॥ ३ ॥

❀❀

श्रीराम रक्षा स्तोत्रम

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

अस्य श्रीरामरक्षास्तोत्रमन्त्रस्य बुधकौशिकऋषिः ॥ श्रीसीतारामचन्द्रो देवता ॥ अनुष्टुप्छन्दः ॥ सीता शक्ति ॥ श्रीमद्हनुमान कीलकम् ॥ श्रीरामचन्द्रप्रीत्यर्थ रामरक्षास्तोत्र जपे विनियोगः ॥

अथ ध्यानम्

ध्यायेदाजानुबाहुं धृतशरधनुषं बद्धपद्मासनस्थं पीतं वासो वसानं नवकमलदलस्पर्धिनेत्रं प्रसन्नम् । वामाङ्कारूढ-सीतामुखकमलमिलल्लोचनं नीरदाभं नानाऽलङ्कारदीप्तं दधतमुरुजटा-मण्डलंरामचन्द्रम् ॥

चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम् ।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम् ॥ १ ॥

ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलोचनम् ।
जानकी लक्ष्मणोपेतंजटामुकुटमण्डितम् ॥ २ ॥

सासितूणधनुर्बाणपाणिं नक्तञ्चरान्तकम् ।
स्वलीलया जगत्त्रातुमाविर्भूतमजं विभुम् ॥ ३ ॥

रामरक्षां पठेत् प्राज्ञः पापघ्नी सर्वकामदाम् ।
शिरो मे राघवः पातु भालं दशरथात्मजः ॥ ४ ॥

कौसल्येयो दृशौ पातु विश्वामित्रप्रियः श्रुती ।
घ्राणं पातु मुखत्राता मुखं सौमित्रवत्सलः ॥ ५ ॥

जिह्वां विद्यानिधिः पातु कण्ठं भरत वन्दितः ।
स्कन्धौदिव्ययायुधः पातु भुजौ भग्ने शकार्मुकः ॥ ६ ॥

करौ सीतापतिः पातु हृदयं जामदग्न्यजित् ।
मध्य पातु खरध्वंसी नाभिं जाम्बवदाश्रयः ॥ ७ ॥

सुग्रीवेशः कटि पातु सक्थिनी हनुमत्प्रभुः ।
उरू रघूत्तमः पातु रक्षः कुलविनाशकृत् ॥ ८ ॥

जानुनी सेतुकृत्पातु जङ्घे दशमुखान्तकः ।
पादौ विभीषणश्रीदः पातु रामो रामऽखिलं वपुः ॥ ९ ॥

एता रामबलोपेतां रक्षां यः सुकृति पठेत् ।
सचिरायुः सुखी पुत्री विजयी विनयी भवेत् ॥ १० ॥

पातालभूतलव्योमचारिणश्छद्मचारिणः ।
न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः ॥ ११ ॥

रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन् ।
नरो न लिप्यते पापैभुक्तिमुक्ति च वन्दति ॥ १२ ॥

जगज्जैत्रैकमन्त्रेण रामनाम्नाऽभिरक्षितम् ।
यः कण्ठे धारयेत्तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः ॥ १३ ॥

वज्रपञ्जरनामेदं यो रामकवचं पठेत् ।
अव्याहताज्ञः सर्वत्र लभते जयमङ्गलम् ॥ १४ ॥

आदिष्टवान् यथा स्वप्ने रामरक्षामिमां हरः ।
तथा लिखितवान् प्रातः प्रबुद्धो बुधकौशिकः ॥ १५ ॥

आराम. कल्पवक्षाणां विरामः सकलापदाम ।
अभिरामस्त्रिलोकानां रामः श्रीमान् सनः प्रभुः ॥ १६ ॥

तरुणौ रूपसम्पन्नौ सुकुमारौ महाबलौ ।
पुण्डरीकविशालाक्षौ चीरकृष्णाजिनाम्बरौ ॥ १७ ॥

फलमूलाशिनौ दान्तौ तापसौ ब्रह्मचारिणौ ।
पुत्रौ दशरथस्यैतौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥ १८ ॥

शरण्यौ सर्वसत्त्वानां श्रेष्ठौ सर्वधनुष्मताम् ।
रक्षः कुलनिहन्तारौ त्रायेतां नो रघूत्तमौ ॥ १९ ॥

आत्तसज्जधनुषाविषुस्पृशावक्षयाशुगनिषङ्गसङ्गिनौ ।
रक्षणाय मम रामलक्ष्मणावग्रतः पथि सदैव गच्छताम् ॥२०॥

सन्नद्धः कवची खड्गी चापबाणधरो युवा ।
गच्छन्मनोरथोऽस्माकं रामः पातु सलक्ष्मणः ॥ २१ ॥

रामो दाशरथिः शूरो लक्ष्मणानुचरो बली ।
काकुत्स्थः पुरुषः पूर्णः कौशल्येयो रघूत्तमः ॥ २२ ॥

वेदान्तवेद्यो यज्ञेशः पुराणपुरुषोत्तमः ।
जानकीवल्लभः श्रीमानप्रमेयपराक्रमः ॥ २३ ॥

इत्येतानि जपेन्नित्यं मद्भक्तः श्रद्धयान्वितः ।
अश्वमेधाधिकं पुण्यं सम्प्राप्नोति न संशयः ॥ २४ ॥

रामं दूर्वादलश्यामं पद्माक्षं पीतवाससम् ।
स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यैर्न ते संसारिणो नराः ॥ २५ ॥

रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं
सीतापतिं सुन्दरं
काकुत्स्थं करुणार्णवं गुणनिधिं
विप्रप्रियं धार्मिकम् ।
राजेन्द्रं सत्यसन्धं दशरथतनयं
श्यामलं शान्तमूर्तिं
वन्दे लोकाभिरामं रघुकुल-
तिलकं राघवं रावणारिम् ॥ २६ ॥

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे ।
रघुनाथाय नाथाय सीताया पतये नमः ॥ २७ ॥

श्रीराम राम रघुनन्दन राम राम:
श्रीराम राम भरताग्रज राम राम:
श्रीराम राम रणकर्कश राम राम:
श्रीराम राम शरणं भव राम राम: ॥ २८ ॥

श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि,
श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसा गृणामि ।
श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि,
श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ २९ ॥

माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः
स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः ।
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालु-
र्नान्यं जाने नैव जाने न जाने ॥ ३० ॥

दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे तु जनकात्मजा ।
पुरतोमारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम् ।। ३१ ।।

लोकाभिरामं रणरंगधीरं
राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम् ।
कारुण्यरूपं करुणाकरं तं
श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये ।। ३२ ।।

मनोजवं मारुततुल्यवेगं
जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठं ।
वातात्मजं वानरयूथ मुख्यं
श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ।। ३३ ।।

कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम् ।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ।। ३४ ।।

आपदामपहर्त्तारं दातारं सर्वसम्पदाम ।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयोभूयो नमाम्यहम् ।। ३५ ।।

भर्जनं भवबीजानामर्जनं सुखसम्पदाम् ।
तर्जनं यमदूतानां राम रामेति गर्जनम ।। ३६ ।।

रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे
रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः ।
रामान्नास्ति परायणपरतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर ।। ३७ ।।

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे ।
सहस्त्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने ।। ३८ ।।

।। इति श्रीबुधकौशिकविरचित श्रीरामरक्षास्तोत्रम् ।।

◆ ◆ श्री रामचन्द्र स्तुति ◆ ◆

ामामि भक्तवत्सलं कृपालुशीलकोमलं

भजामि ते पदाम्बुज अकामिनां स्वधामदम् ।

िकामश्यामसुन्दरं भवाम्बुराथमन्दरं

प्रफुल्लकञ्जलोचनं मदादिदोषमोचनम् ।। १ ।।

ालम्बबाहुविक्रमं प्रभोऽप्रमेयवैभवं

निषङ्गचापसायक धरं त्रिलोकनायकम् ।

दिनेशवंशमण्डनं महेशचापखंडनं

मुनीन्द्रसन्तरञ्जनं सुरारिवृन्दभञ्जनम् ।। २ ।।

मनोजवैरिवन्दितं अजादिदेवसेवितं

विशुद्धबोद्धविग्रहं समस्तदूषणापहम् ।

नमामि इन्दिरापति सुखाकरं सतां गति

भजे सशक्तिसानुजं शचीपतिप्रियानुजम् ।। ३ ।।

त्वदङ्घ्रिमूल ये नता भजन्ति हीनमत्सराः

पतन्ति नो भवार्णवे वितर्कवीचिसंकुले

िविक्तवासिनः सदा भजन्ति मुक्तये मुदा

निरस्य इन्द्रियादिकप्रायान्ति ते गतिं स्वकाम् ।। ४ ।।

त्वमेकमद्‌भूतं प्रभुं निरीहमीश्वरं विभुं
जगद्‌गुरुं च शाश्वतं तुरीयमेव केवलम् ।
भजामि भाववल्लभं सुयोगिनां सदुर्लभं
स्वभक्तकल्पपादपं समस्तसेव्यमन्वहम् ।। ५ ।।

अनूपरूपभूपतिं नतोऽहमुर्विजापतिं
प्रसीद मे नमामि ते पदाब्जभक्ति देहि मे ।
पठन्ति ये स्तवं इदं नरादरेण ते पदं
व्रजन्ति नात्र संशयस्त्वदीयभावसंयुतम् ।। ६ ।।

।। इति श्रीमद्‌गोस्वामितुलसीदास श्रीरामचन्द्रस्तुति सम्पूर्ण ।।

❋❋

◆ ◆ एक श्लोकी रामायण ◆ ◆

आदौ राम तपोवनादि गमनं ।
हत्वा मृग कांचनम् ।।
वैदेही हरण जटायु मरणम ।
सुग्रीव सम्भाषणम् ।।
बाली निग्रहणं समुद्र तरणम् ।
लँकापुरी दाहनम् ।
पश्चाद्रावण कुम्भकर्णहननम् ।
एतद्धि रामायणम् ।।

❋❋

◆ ◆ श्री राम स्तोत्र ◆ ◆

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं।
नवकंज–लोचन, कंज-मुख कर—कंज पद-कंजारुणं ।। १ ।।
कंदर्प अगणित अमित छवि, नवनील नीरद सुन्दरं।
पट पीत मानहुं तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं ।। २ ।।
भजु दीनबन्धु दिनेश दानव—दैत्यवंश—निकन्दनं।
रघुनन्द आनन्दकन्द कौसलचन्द दशरथ–नन्दनं ।। ३ ।।
सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणं।
आजानुभुज शर—चाप—धर, संग्राम-जित-खरदूषणं ।। ४ ।।
इति वदित तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनं।
मम हृदय कंज निवास कुरु, कामादि खल-दल-गंजनं ।। ५ ।।

❀—❀

भजन

भज मन राम चरण सुखदाई।
जिन चरनन मे निकसी सुरसरि शंकर जटा समाई,
जटा शंकरी नाम परयो है त्रिभुवन तारन आई।
जिन चरनन की चरन पादुका, भरत रह्यो लव लाई,
सोई चरन केवट धोई लीने तब हरि नाव चढाई।
सोई चरन सन्तन जन सेवत सदा रहत सुखदाई,
सोई चरन गौतम ऋषि नारी परस अमर पद पाई।
दण्डक बन प्रभु पावन कीन्हों ऋषियन त्रास मिटाई,
सोई प्रभु त्रिलोक के स्वामी कनक मृग संग धाई।

❀—❀

विश्व शान्ति प्रार्थना

सुखी बसे संसार सब दुखिया रहे न कोय,
यह हम सब की अभिलाषा प्रभु जी पूरन होय ।

रहे भरोसा नाम का हे सदा जगदीश,
आशा तेरे धाम की बनी रहे मम ईश ।

विद्या बुद्धि तेज बल सब के भीतर होय,
दूध पूत धन धान्य से वंचित रहे न कोय ।

आप की भक्ति प्रेम से मन होवे भरपूर,
राग द्वेष से चित्त मेरा भागे कोसों दूर ।

नारायण तुम आप हो पाप के मोचन हार,
क्षमा करो अपराध सब कर दो भव से पार ।

हाथ जोड़ विनति करूँ सुनिये कृपा निधान,
साधु सगत सुख दीजिये दया धरम का दान ।

साधु संगत सुख दीजिये दया धरम का दान ॥

सामूहिक प्रार्थना

हे आदि देव जग पालन हारा,
अब तो दयामय दे दो सहारा ।
तेरे बिना नहीं कोई हमारा,
अब तो दयामय..............।

न मुझ मे साधन है, न मुझमे भक्ति,
न मुझमे ज्ञान है न मुझमे शक्ति ।
डूबति नैय्या न मिलता किनारा ।
अब तो..............।

भूतेष जग के रचयिता तुम्ही हो,
तुम ही हो नैय्या खिवैय्या तुम्ही हो ।
यह जग है सारा तेरा पसारा ।
अब तो दयामय ....।

विश्वेश आनन्द दाता तुम्ही हो,
तुम ही पिता और माता तुम्ही हो।
मैं हूँ तेरा प्रभु तू है हमारा।
अब तो..............।

आनन्द सिन्धु कृपालु तुम्ही हो,
तुम दीन बन्धु दयालु तुम्ही हो ।
मैं तेरा भिक्षु तू जग पालन हारा।
अब तो..............।

तुम सारे चलो आत्मा वाले देश
सारी संगत चले आत्मा वाले देश ।—१

इस नगरी में हीरे मोती,
तुम लूट के हो जाओ अमीर ।

तुम सारे .. ..।—२

इस नगरी के नौ दरवाजे
दसवां है पूरण अलोप ।

तुम सारे चलो..... ....।—३

इस नगरी में दीप जलता है,
बिना बत्ती बिना तेल ।

तुम सारे चलो...............।— ४

इस नगरी में कोई कोई रमता
जहां ब्रह्मा विष्णु महेश ।

तुम सारे चलो............. ।।—५

सारी संगत चले आत्मा वाले देश ।।

भजन

इनसान बन क्यों न हरि गुण गाया,
बातों ही बातों में जन्म गंवाया ।

ये फानी है दुनिया है फानी रहेगी,
नहीं कोई तेरी निशानी रहेगी,
शुभ कर्मों की कहानी रहेगी,
अरे फिर भी सुन्दर ये अवसर गंवाया ।
बातों ही बातों में जन्म गंवाया ।—...

कोई आ रहा है कोई जा रहा है,
कोई रो रहा है कोई गा रहा है,
कोई अपनी करनी पे पछता रहा है,
नहीं मन से दूई का परदा हटाया ।
बातों ही बातों में जन्म गंवाया ।......

दिया न दुःखी दिल को तूने सहारा,
किया न कभी दान धन जोड़ हारा,
रहे सब यहीं पर कभी न विचारा,
धन मान महलों पे क्यों इतराया ।
बातों ही बातों में जन्म गंवाया ।...—

'अनन्त' किसी की बुराई न देखो,
अगर हो सके तो अच्छाई को देखो,
हर एक में हर की सूरत को देखो,
नहीं तूने ऐसा जो जीवन बनाया ।
बातों ही बातों में जन्म गंवाया ।.....

भजन

ये क्या पूछते हो कि क्या चाहता हूं,
फ़कत इक तेरा आसरा चाहता हूं ।

हूं पापी अधम और पतित हर तरह से,
गुनाहों की अपने सज़ा चाहता हूं ।

भले भी तेरे हैं बुरे भी हैं तेरे,
रहमत की तुझ से दुआ चाहता हूं ।

जमाने के जंजाल उलझन में फंस कर,
फ़ना हो चुका हूं बका चाहता हूं ।

उमीदें नहीं कोई दुनियावी तुम से,
नहीं कुछ मैं तेरे सिवा चाहता हूं ।

दिले नातवां को न मायूस कीजै,
चिराघे नजर हूं निशा चाहता हूं ।

अनाथों के तुम 'नाथ' हो दीन बन्धु,
मगर बिगड़ी अपनी बना चाहता हूं ।

❀—❀

जो था नहीं है न होगा तुम्हारा,
तुम्हारा तो बस इतना है फ़साना
न तेरा कोई मकान है ग़ाफ़िल,
न कोई है बस तेरा ठिकाना ।

❀—❀

भगवान श्री गणेश जी, आरती गज वदन विनायक की

आरति गजवदन विनायक की ।
सुर मुनि-पूजित गणनायक की ॥ टेक ॥

एकदंत शशिभाल गजानन,
विघ्नविनाशक शुभगुण कानन,
शिवसुत वन्दयमान-चतुरानन,
दुःखविनाशक सुखदायक की ॥ सुर० ॥

ऋद्धि-सिद्धि स्वामी समर्थ अति,
विमल बुद्धि दाता सुविमल-मति,
अघ-वन-दहन, अमल अबिगत गति,
विद्या विनय-विभव-दायक की ॥ सुर० ॥

पिङ्गलनयन, विशाल शुंडधर,
धूम्रवर्ण शुचि वज्रांकुश-कर,
लम्बोदर बाधा-विपत्ति-हर,
सुरवन्दित सब बिधिलायक की ॥ सुर० ॥

भगवान् जगदीश्वर

ॐ जय जगदीश हरे, प्रभु ! जय जगदीश हरे ।।
भक्तजनों के संकट छिन में दूर करे ।। ॐ ।।
जो ध्यावै फल पावै, दुख बिनसै मन का ।। प्रभु० ।।
सुख-सम्पति घर आवै, कष्ट मिटै तनका ।। ॐ ।।
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी ।। प्र० ।।
तुम बिनु और न दूजा, आस करूँ जिसकी ।। ॐ ।।
तुम पूरन परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ।। प्र० ।।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ।। ॐ ।।
तुम करुणा के सागर तुम पालन-कर्ता ।। प्र० ।।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ।। ॐ ।।
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपती ।। प्र० ।।
किस बिधि मिलूँ दयामय ! मैं तुमको कुमती ।। ॐ ।।
दीनबन्धु दुखहर्ता तुम ठाकुर मेरे ।। प्र० ।।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ।। ॐ ।।
विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ।। प्र० ।।
श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा ।। ॐ ।।

भगवान् ब्रह्मा, विष्णु, महेश

जय शिव ओंकारा, भज शिव ओंकारा ।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धंगी धारा ॥
ॐ हर हर हर महादेव ॥

एकानन चतुरानन पञ्चानन राजै ।
हंसासन गरुडासन वृषवाहन साजै ॥ २ ॥ ॐ हर हर०

दो भुज चारु चतुर्भुज दशभुज अति सोहै ।
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन-जन मोहै ॥ ३ ॥ ॐ हर हर०

अक्षमाला वनमाला रुंडमाला धारी ।
त्रिपुरारी कंसारी करमाला धारी ॥ ४ ॥ ॐ हर हर०

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे ।
सनकादिक गरुडादिक भूतादिक संगे ॥ ५ ॥ ॐ हर हर०

कर मध्ये सुकमण्डलु चक्र शूलधारी ।
सुखकारी दुखहारी जग-पालनकारी ॥ ६ ॥ ॐ हर हर०

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका ।
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका ॥ ७ ॥ ॐ हर हर०

त्रिगुणस्वामि की आरति जो कोइ नर गावै ।
भनत शिवानन्द स्वामी मनवाञ्छित पावै ॥ ८ ॥ ॐ हर हर०

❀—❀

श्री लक्ष्मी जी

ॐ जय लक्ष्मी माता, (मैया) जय लक्ष्मी माता ।
तुमको निसिदिन सेवत हर-विष्णू-धाता ।। ॐ ।।

उमा, रमा, ब्रह्मांणी तुम ही जग-माता ।
सूर्य-चन्द्रमा, ध्यावत, नारद ऋषि गाता ।। ॐ ।।

दुर्गारूप निरंजनि, सुख-सम्पति-दाता ।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि-धन पाता ।। ॐ ।।

तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभदाता ।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता ।। ॐ ।।

जिस घर तुम रहती, तहँ सब सद्‌गुण आता ।
सब संभव हो जाता, मन नहिं घबराता ।। ॐ ।।

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता ।
खान-पान का वैभव सब तुमसे आता ।। ॐ ।।

शुभ-गुण-मन्दिर सुन्दर क्षीरोदधि-जाता ।
रत्न चतुर्दश तुम बिन कोई नहिं पाता ।। ॐ ।।

महालक्ष्मी (जी) की आरति, जो कोई नर गाता ।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ।। ॐ ।।

❀—❀

भगवान् मर्यादा पुरुषोत्तम

आरति कीजै श्रीरघुबर की।
सत चित आनँद शिव सुंदर की ॥ टेक ॥

दशरथ–तनय कौसिला-नन्दन,
सुर-मुनि-रक्षक दैत्य-निकन्दन,
अनुगत-भक्त भक्त–उर-चन्दन,
मर्यादा-पुरुषोत्तम-वर की ॥

निर्गुन-सगुण, अरूप-रूपनिधि,
सकल लोक-वन्दित विभिन्न विधि,
हरण शोक-भय, दायक सब सिधि,
मायारहित दिव्य नर-वर की ॥

जानकिपति सुराधिपति जगपति,
अखिल लोक पालक त्रिलोक गति,
विश्ववन्द्य अनवद्य अमित-मति,
एकमात्र गति सचराचर की।

शरणागत-वत्सल-व्रतधारी
भक्त–कल्पतरु-वर असुरारी,
नाम लेत जग पावनकारी,
वानर-सखा दीन-दुख–हर की ॥

भगवान् कुंजबिहारी

आरती कुंजबिहारी की । श्री गिरधर कृष्नमुरारी की ॥ (टेक)
गले में बैजंतीमाला, बजावै मुरलि मधुर बाला ।
श्रवन में कुंडल झलकाला, नंद के आनँद नँदलाला ॥ श्री गिरधर० ॥
गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली,
लतन में ठाढ़े बनमाली,
भ्रमर-सी अलक, कस्तूरी-तिलक, चंद्र-सी झलक,
ललित छबि स्यामा प्यारी की । श्रीगिरधर कृष्नमुरारी की ॥
कनकमय मोर-मुकुट बिलसै, देवता दरसनकों तरसै,
गगन सों सुमन रासि बरसै,
बजे मुरचंग, मधुर मिरदग, ग्वालनी संग,
अतुल रति गोपकुमारी की । श्रीगिरधर कृष्नमुरारी की ॥
जहाँ ते प्रगट भई गंगा, कलुष कलि हारिणि श्रीगंगा,
स्मरन ते होत मोह-भगा,
बसी शिव सीस, जटा के बीच, हरै अघ कीच,
चरन छबि श्रीबनवारी की । श्रीगिरधर कृष्नमुरारी की ॥
चमकती उज्ज्वल तट रेनू, बज रही बृंदाबन बेनू.
चहुँ दिसि गोपि ग्वाल धेनू.
हँसत मृदु मंद. चांदनी चंद, कटत भव-फंद
टेर सुनु दीन भिखारी की। श्रीगिरधर कृष्नमुरारी की ।
आरती कुंजबिहारी की । श्रीगिरधर कृष्नमुरारी की ॥

भगवान् महादेव

हर हर हर महादेव !

सत्य, सनातन, सुन्दर, शिव ! सबके स्वामी।
अविकारी, अविनाशी, अज, अन्तर्यामी ॥ १ ॥ हर हर० ॥

आदि, अनन्त अनामय, अकल, कलाधारी।
अमल, अरूप, अगोचर, अविचल अघहारी ॥ २ ॥ हर हर० ॥

ब्रह्मा, विष्णु महेश्वर, तुम त्रिमूर्तिधारी।
कर्ता, भर्ता, धर्ता, तुम ही संहारी ॥ ३ ॥ हर हर० ॥

रक्षक, भक्षक, प्रेरक, प्रिय औढरदानी।
साक्षी, परम अकर्ता, कर्ता, अभिमानी ॥ ४ ॥ हर हर० ॥

मणिमय-भवन निवासी, अति भोगी, रागी।
सदा श्मशान विहारी, योगी, वैरागी ॥ ५ ॥ हर हर० ॥

छाल-कपाल गरल-गल, मुण्डमाल, व्याली।
चिताभस्मतन, त्रिनयन, अयनमहाकाली ॥ ६ ॥ हर हर० ॥

प्रेत-पिशाच-सुसेवित, पीतजटाधारी।
विवसन विकट रूपधर रुद्र प्रलयकारी ॥ ७ ॥ हर हर० ॥

शुभ्र-सौम्य, सुरसरिधर, शशिधर, सुखकारी।
अतिकमनीय, शान्तिकर, शिवमुनि-मन-हारी ॥ ८ ॥ हर हर० ॥

निर्गुण, सगुण निरञ्जन, जगमय, नित्य प्रभो।
कालरूप केवल हर ! कालातीत विभो ॥ ९ ॥ हर हर० ॥

सत्, चित्, आनँद, रसमय, करुणामय धाता।
प्रेम-सुधा-निधि, प्रियतम, अखिल विश्व-त्राता ॥ १० ॥ हर हर० ॥

हम अतिदीन, दयामय ! चरण-शरण दीजै।
सब विधि निर्मल मति कर अपना करि लीजै ॥ ११ ॥ हर हर० ॥

❀—❀

श्री दुर्गा जी

जगजननी जय ! जय !! माँ ! जगजननी जय ! जय !! ।

भयहारिणि, भवतारिणि भवभामिनि जय जय ।। टेक ।।

तू ही सत्-चित्-सुखमय शुद्ध ब्रह्मरूपा ।

सत्य सनातन सुन्दर पर-शिव सुर-भूपा ।। १ ।। जग०

आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी ।

अमल अनन्त अगोचर अज आनँदराशी ।। २ ।। जग०

अविकारी, अघहारी, अकल कलाधारी ।

कर्ता विधि, भर्ता हरि, हर सँहारकारी ।। ३ ।। जग०

तू विधि, वधू, रमा, तू उमा, महामाया ।

मूल प्रकृति, विद्या तू, तू जननी, जाया ।। ४ ।। जग०

राम, कृष्ण तू सीता, व्रजरानी राधा ।

तू वाञ्छाकल्पद्रुम, हारिणि सब बाधा ।। ५ ।। जग०

दश विद्या, नव दुर्गा नाना शस्त्रकरा ।

अष्टमातृका, योगिनि, नव-नव-रूप-धरा ।। ६ ।। जग०

तू परधामनिवासिनि, महाविलासिनि तू ।

तू ही श्मशानविहारिणि, ताण्डव-लासिनि तू ।। ७ ।। जग०

सुर मुनि-मोहिनि सौम्या तू शोभाधारा ।

विवसन विकट-सरूपा, प्रलयमयी, धारा ।। ८ ।। जग०

तू ही स्नेहसुधामयि, तू अति गरलमना ।

रत्नविभूषित तू ही, तू ही अस्थि-तना ।। ९ ।। जग०

मूलाधारनिवासिनि, इह-पर-सिद्धिप्रदे ।

कालातीता काली, कमला तू वरदे ।। १० ।। जग०

शक्ति शक्तिधर तू ही नित्य अभेदमयी ।

भेदप्रदर्शिनि वाणी विमले ! वेदत्रयी ।। ११ ।। जग०

हम अति दीन दुखी माँ ! विपत-जाल घेरे ।

हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे ।। १२ ।। जग०

निज स्वभाववश जननी ! दयादृष्टि कीजै ।

करुणा कर करुणामयि ! चरण-शरण दीजै ।। १३ ।। जग०
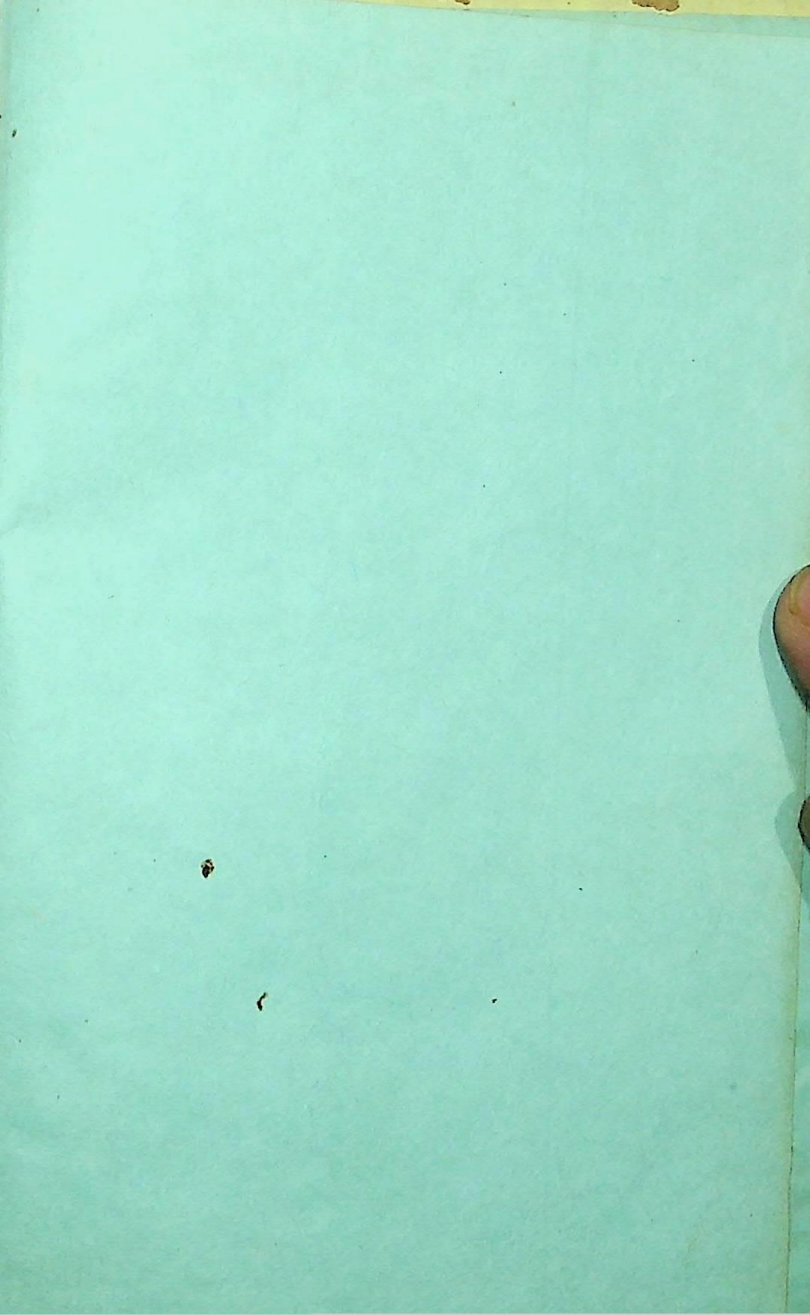
शाश्वतधाम लक्ष्यमौली

विशाल हिमालय पर्वत की पवित्र ढ़लान पर उत्तराखण्ड के लगभग मध्य देश में लक्ष्यमौली पवित्र पीठ पर भगवान शिव श्री लक्ष्यमौलेश्वर की कृपा व छत्रछाया में शाश्वत धाम विद्यमान है। एक आदर्श जीवन जीकर अन्तत: आत्म-बोध की प्राप्ति के इच्छुक व्यक्तियों को सही मार्ग दिखाने के लिए शाश्वत धाम त्याग, सेवा, प्रेम, भक्ति, सन्तोष और आत्म-बोध का सम्मिलित योग अर्पण कर रहा है।

उद्देश्य :— त्याग, भक्ति और मुक्ति।

विशेष उद्देश्य :— सेवा, विश्व-प्रेम एवम् सम्पूर्ण भाईचारा द्वारा आत्माओं का एकीकरण।

प्रणाली :— केवल व्याख्यान न दें, अपितु स्वयं प्रयोग करें ताकि शान्ति व मोक्ष की प्राप्ति हो। अन्यों को उपदेश व आदेश न दें, अपितु स्वयं करें एवम् निर्लिप्त रहें।

शाश्वत धाम वर्ण, जाति व धर्म का वर्गीकरण किए बिना, बिना पक्षपात एवम् बिना तक्कलुफ के वास्तविक त्याग, वास्तविक आत्म-बलिदान एवम् वास्तविक उदारता युक्त सदैव जरुरतमन्द अनाथ एवम् दरिद्रता से पीड़ित जीवात्माओं की सेवारत रहता है।

संलग्नित :— मन्दिर सेवा, नैतिक साधुवाद और जीव का मुक्ति-निमित्त आध्यात्म्य अभ्यास, आचार व आध्यात्मिक आधार पर साधारण व औद्योगिक शिक्षा केन्द्रों की स्थापन, मरीजों की मुफ्त चिकित्सा सेवा, कुष्ठ रोगियों की सेवा, ग्रामीण-सुधार, सांस्कृतिक कार्यक्रम, सन्तों और तीर्थ यात्रियों के लिए महायज्ञ रूपी अन्नक्षेत्र का प्रचलन तथा सन्तों की विश्राम व्यवस्था।

विनोद प्रिंटर्ज़ यमुनानगर